

अमृत रस

(भाग -२)

परमसन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

(सिकन्द्राबाद, उ०प्र०)

के पत्रों का संकलन



संकलन कर्ता---

डॉ० करतार सिंह साहब

अध्यक्ष/आचार्य, रामाश्रम सत्संग (रजि०),

गज़ियाबाद (उ० प्र०)

मुद्रक तथा प्रकाशक

प्रथम संस्करण ५०० (१९६१)

डॉ. श्रीकृष्ण लाल साहब

आचार्य , रामाश्रम सत्संग, सिकन्द्राबाद (उ० प्र०)

द्वितीय संस्करण १००० (१९८३)

मुद्रक तथा प्रकाशक

डॉ० करतार सिंह साहब

अध्यक्ष/आचार्य, रामाश्रम सत्संग, (रजि०)

सिकन्द्राबाद (उ० प्र०)

डिजिटल संस्करण - (२०१९)

डॉ० शक्ति कुमार जी

आचार्य/अध्यक्ष, रामाश्रम सत्संग, (रजि.)

गाज़ियाबाद (उ० प्र०)

दो शब्द

' अमृत रस ' नामक पुस्तक में परमसन्त श्री रामचन्द्र जी महाराज (फतेहगढ़, उ० प्र० निवासी) के पत्रों का संकलन प्रकाशित हो चुका है. ' अमृत रस ' का यह भाग २ पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष होता है ।

परमसन्त डॉ० श्रीकृष्ण लाल जी महाराज (निवासी- सिकन्द्राबाद, उ० प्र०) उपरोक्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज के गुरुमुख शिष्य और प्रमुख आध्यात्मिक उत्तराधिकारी थे। आप इस युग में सन्तमत के एक महान आचार्य हुए हैं। सन्तमत पर आपके अनेकों प्रकाशन हैं जो आध्यात्म विद्या के जिज्ञासुओं तथा साधकों के लिए अमूल्य देन हैं । इस पुस्तक में उनके पत्रों को, जो समय-समय पर उन्होंने अपने प्रेमियों को लिखे, प्रकाशित किया गया है । उनके सारे पत्र उपलब्ध नहीं हो सके, परन्तु जितने भी पत्र मिल सके हैं अथवा ' राम-सन्देश ' मासिक पत्रिका में प्रकाशित हो चुके हैं, उन्हें संकलित करके इस पुस्तक में तिथि-क्रम से छापने का प्रयास किया गया है । कुछ ऐसे पत्र हैं जिनका यह पता नहीं लगा कि वे किसको लिखे गए हैं, अतः उनमें नाम नहीं दिया जा सका । कुछ पत्र अंग्रेजी भाषा में हैं जो नहीं छापे गये हैं । पुस्तक के छपते-छपते भी कुछ पत्र प्राप्त हुए हैं जिन्हें तिथि-क्रम में नहीं जोड़ा जा सका ।

पत्रों की भाषा तत्कालीन भाषा है जिसमें उर्दू के साथ फ़ारसी भाषा का मिश्रण है । कठिन शब्दों का रूपान्तर कोष्ठक में दे दिया गया है ।

इन पत्रों में दो विशेषतायें हैं । एक तो यह कि ब्रह्म विद्या की गुल्थियों को सरल भाषा में खूब समझाया गया है । दूसरी यह कि व्यक्ति के नित्य प्रति के सांसारिक जीवन में जो सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं उनका निवारण किस प्रकार किया जाय, यह भी बतलाया गया है ।

आशा है कि इसके अध्ययन से नये तथा पुराने अभ्यासियों को यथेष्ट लाभ पहुँचेगा ।

विनीत :

दिल्ली, दि० १५ जून १९८६

करतार सिंह



एक प्रेम के नाते को छोड़कर मैं और किसी नाते को नहीं जानता. केवल प्रेम और वह भी निस्वार्थ प्रेम. जो लोग बिना अपने स्वार्थ के मुझसे प्रेम करते हैं, चाहे वह कैसे भी हैं, ' उन्हें ' मैं प्रेम करता हूँ. वे मेरे हैं और मैं उनका. वे सदैव मुझ पर आश्रित रह सकते हैं और वे देखेंगे कि मैं सदैव उनकी सेवा के लिये प्रस्तुत हूँ.

-- परमसन्त डॉ. श्रीकृष्णलाल जी महाराज

सिकन्दाबाद , उ०प्र०

(जन्म १५-१०-१८९४ - निर्वाण १८-५-१९७०)

सिकन्दराबाद

१५-४-१९३४

अजीजम दुआ ! (जय नारायण गौतम)

खत तुम्हारा आया, हाल मालूम हुआ। परमात्मा हमेशा तुम पर कृपा करे और नेक रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ दे। तुम्हारी हालत बहुत अच्छी है। परमात्मा की खास मेहरबानी तुम पर है कि जिसका शुक्रिया तुम पर वाजिब है और असली शुक्रिया यह है कि बुरी सोहबत से परहेज़ करो, जिससे तुम्हारी हालत जो अब है कायम रहे और आइन्दा तरक्की हो। बुरी संगत नेक ख्यालात को बरबाद करने वाली है।

परमात्मा की दया और कृपा हम पर हमेशा रहती है और हम कितने ही निकम्मे और खराब क्यों न हों, उसकी दया बराबर कायम रहती है। अगर उसका यह करम (कृपा) एक सेकिण्ड को भी बन्द हो जावे तो, एक चीज़ भी ज़िन्दा नहीं रह सकती। सैकड़ों कीड़े मकोड़े और सैकड़ों किस्म के ज़हरीले जानवर, हज़ारों बीमारियाँ, हर वक़्त अपना मुँह खोले हुए हमको खाने के लिए तैयार रहते हैं। यह उसकी कृपा ही है जो हमको इनसे बचाती है और ज़िन्दा रखती है।

सूरज की रौशनी, हवा, आग, पानी, खुराक गरजे कि हज़ारों नेमते इसी इन्सान के वास्ते पैदा कीं जिनका शुमार (गिनती) भी नहीं हो सकता। लिहाज़ा हर शख्स का फ़र्ज़ है कि "उसको" हर वक़्त याद रखे और उसका शुक्रिया अदा करे। लिहाज़ा (अतः) तुम्हारा पूजा का ख्याल होना कुदरती बात है और बहुत अच्छा हुआ कि तुम इस तरफ़ राग़िब हुए (झुके)।

मज़हब एक ऐसी बेशबहा (बहुमूल्य) चीज़ है जो दुनियांवी तकलीफ़ात (कष्टों) से हमेशा के लिए इन्सान को निजात (छुटकारा) देती है। अक्ल इंसानी (मनुष्य की बुद्धि) इस वास्ते अता हुई (प्रदान की) कि सोच समझकर सही रास्ता अख़्त्यार करे। बहस-मुबाहिसा (तर्क-वितर्क) बुरा नहीं है, अगर वह वाक़फ़ियत (ज्ञान) बढ़ावे और सच्चाई जानने के लिए किया जावे लेकिन इनमें हुज़ज़त और बहस या खुद-आराई (अपने आपको थोपना) शामिल न हो।

जो शब्द तुमको सुनाई देता है वह डिप-धप या और कोई आवाज़ नहीं है बल्कि "ओम" का 'शब्द' है। तुमको ऐसा ही ख्याल करना चाहिए। बुरी सोहबत से यह बंद हो जाता है। सत्संग में इसकी तरक्की होती है। अगर किसी वक़्त तुमको यह सुनाई न दे, तो स्वांस को थोड़ी देर तक रोक लेना चाहिए इससे यह ठीक सुनाई देने लगता है। शब्द के साथ बदन का और कोई हिस्सा न हिलना चाहिए।

जनाब चाचा जी साहब (महात्मा रघुबर दयाल जी) की खिदमत में जाना और उनसे दरयाफ़्त करना, इसमें कोई बुराई नहीं थी। मैं खुद मौक़ा मिलने पर चाचा जी साहिब से दरयाफ़्त कर लूँगा कि क्या ग़लती थी। मुमकिन (सम्भव) है कि तुम उनको ठीक से न समझा सके हो। तुम मुतमइन रहो (विश्वास रखो) इसमें मुआफ़ी माँगने की कोई बात नहीं है।

तुमको चाहिए कि हफ़तेवार अपने हाल से ख़बर देते रहा करो। किसी से न कहो क्योंकि कहने से वह हालत जाती रहती है। दस-पद्रह योम (दिनों) के बाद सब हालत लिखकर। और जो बातें दरयाफ़्त-तलब (पूछनी) हों, लिख दिया करो। किसी और से पूछने की ज़रूरत नहीं है। जो शख़्स अपने बड़े भाई से तमाम हाल साफ़-साफ़ कहते हैं उनको हमेशा फ़ायदा होता है और शैतान (माया) से हमेशा बचा रहता है। गुरु महाराज तुम पर हमेशा कृपा करें। भाइयों को सलाम व दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक);श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

८-५-१९३४

अजीजम दुआ ! (जय नारायण गौतम)

रूहानी तरक्की (आत्मिक उन्नति) के लिए जहाँ और बहुत सी बातों की सख्त ज़रूरत है, उसमें से एक खास ज़रूरी चीज़ है 'सत्संग'। उस वख्त तुमको बहुत कम सत्संग मिल सका जिसका असर यह हुआ कि परमात्मा की रहमत से लतीफ़ (सूक्ष्म) जाकिर (जाग्रत) हो गया मगर यह आरज़ी (अस्थायी) था। बार-बार सत्संग करने से उसमें पुख्तगी (परिपक्वता) आ जाती है और फिर 'यह' बन्द नहीं होता। लिहाज़ा अगर 'शब्द' कम सुनाई देता है तो कोई ताज़ुब की बात नहीं है। रोज़ाना संध्या से पेशतर (पहले) परमात्मा के हुज़ूर में (सन्मुख) दुआ करो, रोओ, गिड़गिड़ाओ ताकि वह तुम पर रहम करे और तरक्की का दरवाज़ा खोले।

मसल मशहूर है :-

" एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय !

जो तू सींचे मूल को , फूले फले अघाय !!"

साधना सिर्फ़ एक का होता है और उसमें सब सध जाते हैं। और जो सबको साधने की कोशिश करता है, वह एक को भी नहीं साध सकता।

हिन्दू मज़हब 'एक' ही को पूजने की तालीम देता है। उसकी तालीम है कि सिवाय खुदा के किसी को मत पूजो, वही पूजने के लायक है। लेकिन, क्योंकि शुरू में वास्ता खुदा से नहीं होता इसलिए उसकी ज़ाहिरी शकल 'गुरु' को उस वक़्त तक पूजते हैं कि जब तक "उस" से सिलसिला न जुड़ जावे। उसके बाद परमात्मा को ही पूजते हैं। लिहाज़ा इज़ज़त सबकी वाज़िब है लेकिन परिशित्श (पूजा) "एक" की ही होनी चाहिए। तुमको चाहिए कि सब तरफ़ से तबियत हटा कर, एक तरफ़ लगाओ। बुरी सुहबत (संग) उसमें बहुत नुक़सान करती है, और उसमें परमात्मा का फ़ैज़ (कृपा) बन्द हो जाता है। जहाँ तक हो सके ऐसे लोगों की सुहबत से अपने

को अलग रखो । अगर ऐसा मौका आवे कि अलहदा न रह सको तो अपने गुरु का ख्याल करो, जिससे सुहबत का असर न हो । बाबू रघुबीर प्रसाद माथुर और रामकिशन के साथ बैठकर पूजा कर सकते हो लेकिन अपनी हालत उनसे कहने की ज़रूरत नहीं है, और न उनकी हालत सुनने की ज़रूरत है ।

घबराना नहीं चाहिए । जो बतलाया गया है बाकायदा उस को करो, परमात्मा मेहरबानी करेगा । अपनी हालत की बाकायदा इत्तला देते रहा करो । पुरसाने-हाल (हाल पूछने वालों) को सलाम व दुआ ।

दुआगो (शुभचिंतक)- श्रीकृष्ण

(३)

सिकन्दराबाद

२१-३-१९४२

प्रिय भाई महेश चन्द्र जी , नमस्ते !

सूरज के प्रकाश को रोकने वाले अपने कर्मों के फल हैं जो जन्म-जन्मान्तर से साथ चले आ रहे हैं । जितने ये हलके होंगे उतना ही प्रकाश ज़्यादा होगा, आनन्द की प्राप्ति होगी और ज्ञान की भी । जितने कर्मों के संस्कार मोटे होते जायेंगे उतनी प्रकाश और आनन्द की कमी होती जाएगी । मिलने पर साफ़ तौर पर समझा दिया जायगा । संध्या सुबह उठने पर और रात को सोते वक़्त करो । अगर दिन में फुरसत मिल जाय तो भी बराबर ध्यान करते रहो । श्रद्धा से काम किये जाओ, अवश्य फ़ायदा होगा ।

गोश्त (मांस) का लाना या बनाना बुरा नहीं लेकिन खाने से परहेज़ करो । कोई शख्स किसी को किसी चीज़ को खाने के लिए मज़बूर नहीं कर सकता है । यहाँ तक कि माता-पिता को भी यह अधिकार नहीं है । यह अपने दिल की कमज़ोरी है ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(४)

सिकन्दराबाद

२४-४-४२

(वैद्य भगवती प्रसाद जी)

जो आपने अनुभव किया वह बुजुर्गान का फ़ैज़ है जिसका शुक्रिया आप पर वाजिब है और असली शुक्रिया यह है कि ऐसे कामों और सौहबत को छोड़ दें जो इसमें हानिकारी हैं, और अच्छे कामों और सौहबत को अख़्तियार करें जिसमें तरक्की हो । परमात्मा आपको शक्ति दे । मैं दुआ करता हूँ कि गुरुदेव आप पर मेहरबान हों, और आपके दिल को अपनी मौहब्बत का पात्र बनावें ।

सत्संगी भाइयों को नमस्ते ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(५)

सिकन्दराबाद

३० जून १९४२

(वैद्य भगवती प्रसाद जी)

सोने के खरे खोटे की पहिचान आग में गुज़रने पर होती है । दुनियाँ की परेशानियाँ मुबारक हैं । इसमें बहतरीन नियामतें छिपी रहती हैं और उनको मिलती हैं जो खुश खुश बर्दाश्त करता है । और जो शाकी होता है, महरूम रहता है । पाबन्दियों का ख़्याल रखिये और कारबन्द होने की कोशिश कीजिये, वक़्त पर सब हो रहेगा । परेशानी न रखिये । जो आप करते हैं सब ठीक है । जब तक खुदी न आये तब तक उसके हुक्म से सब काम होते हैं । ग़लती को गुज़ारना नहीं है । जब खुदी आयी, ग़लती का अन्देशा पैदा हो जाता है । ख़्याल बड़ी ताक़त है। अगर यह ख़्याल पुख़्ता है तो तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा हूँ। ख़्याल में कमज़ोरी आयी और रिश्ता कमज़ोर हुआ । अपने आपको बना ले जाओगे, लोग खुश होकर क़बूल करेंगे । बढे चलो, परेशान

मत हो, परमात्मा मददगार है फिर डर किसका । परमात्मा आपको लाइन्तहा मुहब्बत का वारिस बनाये ।

खैरअन्देश - श्रीकृष्ण

शाकी -(शिकायत करने वाला) - महरूम (वंचित) - कारबन्द (काम करना) - लाइन्तहा (असीम)

(६)

सिकन्दराबाद

१७-११-४२

प्यारी बेटी खुश रहो !

चिट्ठी तुम्हारी आयी, हाल मालूम हुआ। बरेली से भी तुम्हारे भाई तथा माता जी की चिट्ठी आयी थी, वह सब अच्छी तरह से हैं ।

जो भरोसा रखते हैं और जिनको विश्वास है उनके साथ हर समय भगवान मौजूद हैं । तुम अकेली कैसे हो, तुम्हारे साथ हर समय परमात्मा मौजूद है और सहायता करता है और जंगल में वह सामान पैदा कर देता है जो महलों में भी नहीं मिलते । उस पर पूरा विश्वास रखो । तुम्हारी इच्छा बड़ी अच्छी है । ईश्वर करे कि यह दिन रात बढ़े और मैं दुआ करता हूँ कि परमात्मा तुमको अपने चरण कमलों में रखे और अपना अद्भुत प्रेम सदा दे । हम प्रेमी जीव हैं । हमें उसमें खुश रहना चाहिए जिसमें हमारा प्रीतम खुश रहे । अगर वह हमें जंगल में रखना चाहता है तो महल की इच्छा क्यों करो । मालिक की इच्छा यह है कि हम उस हालत में खुश रहें जिसमें वह खुश है । लेकिन इतनी शक्ति दे कि उस हालत में खुश रहें और भूल कर भी शिकायत का शब्द ज़बान पर न आये । परमात्मा को तो सबकी फ़िक्र है । प्रिय ----- जी को यह खत दिखला देना । घबराओ नहीं, जो होता है ठीक होता है । बच्चों को प्यार ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(७)

सिकन्दराबाद

२१-१-४३

(वास्ते वैद्य भगवती प्रसाद जी)

भक्ति और प्रेम बढ़ाते जाइये और किसी की ख्वाहिश न कीजिये । प्रेम में दिया जाता है, माँगा नहीं जाता । भिखारी न बनिये, प्रेमी बनिये । ' बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख' सबकी ख्वाहिश छोड़िये, सिर्फ प्रभु के लिए प्रार्थना कीजिये । सब की सौहबत छोड़िये । अपने प्रीतम को दिल में देखिये । सबको बर्दाश्त कीजिये । जुबान और कलम से जोश (आवेश) को बाहर न निकालिये । वह सब जानता है और देखता है । उसकी राजी में दिल को राजी रखिये -- और उस पर पूरा भरोसा रखिये । जो होगा बेहतर (अच्छा) ही होगा ।

दुआगो - श्रीकृष्ण

(८)

सिकन्दराबाद

(वैद्य भगवती प्रसाद)

दियानतदारी और नेक तबियत से काम किये जाओ । इसमें तुम्हारी भलाई ही भलाई है । यह मुमकिन है की माली हालत पर इसका असर हो । लेकिन ज़्यादा रुपया भी बुरा है । रुपया इतना अच्छा है कि जिससे काम चलते जावें । अगर तुम नेकी का रास्ता अख्त्यार करोगे और उस पर भरोसा करोगे तो तुम्हारे सब जायज़ काम पूरे होते रहेंगे । कामयाबी के लिये सच्चाई, दियानतदारी, मुहब्बत और कोशिश की ज़रूरत है । हमेशा ख्याल रखो कि किसी दूसरे का हिस्सा तुम्हारे पास न आ जावे । ज़्यादा रुपया कमाने की फ़िक्र मत करो, बल्कि हलाल का रुपया कमाने की कोशिश करो । अपनी आक़बत बनाओ । यह दुनियाँ के साथ सब लगवी है

। इसकी वजह से अपने गुनाहों की गठरी भारी मत करो । परमात्मा तुमको तौकीफ दे। मैं बराबर दुआ करता रहता हूँ और उससे उम्मीद बेहतरी की रखता हूँ । इरादा बाँधो , दुआ करो, कामयाबी होगी । जो उस पर भरोसा करते हैं, कभी धोखा नहीं खाते । अज़ीज़ान को दुआ।

नियाज़मन्द -- श्रीकृष्ण

दियानतदारी =ईमानदारी, जायज़ =उचित, हलाल=परिश्रम की कमाई, आक़बत =परलोक, लगवी = स्वार्थी , तौफीक = हिम्मत , बेहतरी=भलाई

(९)

सिकन्दराबाद

३-२-१९४४

बाबू महेश चंद्र जी, नमस्ते

आपके दो खत आये, हाल मालूम हुआ । ८ जनवरी के खत में आपने लिखा है कि "प्रकाश कभी दीखता है, कभी नहीं, ख्यालात आते रहते हैं, वगैरा-वगैरा ।" ऐसा बराबर होता रहता है । जब दो किस्म के ख्यालात आपस में टक्कर खाते हैं तो बराबर कश्मकश (संघर्ष) होती रहती है । जिसका ज़्यादा अभ्यास होता है वह जीतता है और जिसका कम, वह हारता है । इसी को मज़हबी किताबों में देवासुर संग्राम भी कहा है । अभी तक आपके दिल में दुनियांवी ख्यालात थे, अब रूहानी ख्यालात (आध्यात्मिक विचारों) के दाखिले की कोशिश है । एक को निकालना है और दूसरे को दाखिल करना है। कश्मकश (संघर्ष) का होना ज़रूरी है । और तबियत का घबराना भी ।

सत्संग में सिखाने वाले की तरफ़ से कुछ ख्याल परमार्थी आर्यतन मिल जाते हैं और दुनियांवी ख्यालात का ज़ोर कम पड़ जाता है ।, तबियत लगने लगती है लेकिन ज्यों ज्यों दिन गुज़रते जाते हैं उनका असर कम होता जाता है और एक समय ऐसा आता है जब कश्मकश फिर शुरू हो जाती है और दुनियांवी ख्यालात का ज़ोर हो जाता है जो अपने खुद महसूस किया है । इसका इलाज यह है कि परमात्मा से प्रार्थना करें, रोयें, गिड़गिड़ायें। उम्मेद है कि मदद

मिलेगी। अगर न मिले तो समय निकलकर मिलना चाहिए । अगर यह भी न हो सके तो अपने ख्याल के आदमियों से वहीं पर मिलें । मैं आपको नाम लिखकर भेज दूँगा ।

बदन का कभी हलका होना या छोटा होना अलामत (लक्षण) तरक्की हैं । अगर आप मज़बूत इरादे से इस पर कायम रहेंगे तो ज़रूर फ़ायदा होगा। दिल में ख्याल का न आना, यह बहुत ऊंची हालत है । बरसों अभ्यास के बाद होती है । वरना ख्याल भी आते रहते हैं, तबियत भी लगती रहती है ।

घर के बाबत जो अपने हालात लिखे हैं वह बिलकुल ठीक हैं । परमात्मा ने इंसान को अक़ल दी है । अक़ल से सोचकर नतीज़े पर ध्यान रख कर कोशिश में लग जाना चाहिये । कोशिश करते समय नतीज़े पर ध्यान बिलकुल नहीं रखना चाहिये। बल्कि हर तरफ़ से ध्यान हटाकर काम में लग जाय । जो नतीज़ा निकले, चाहे वह अपने ख्याल के मुताबिक़ अच्छा हो या बुरा खुशी से क़बूल कर लेना चाहिये, क्योंकि परमात्मा आपसे ज़्यादा जानता है कि भलाई किस में है । २ बहनों की शादी, मकान पर से कर्ज़ का उतारना, तीनों फ़र्ज़ आप पर वाजिब हैं और आपने उनको अदा करने का तरीक़ा भी अख़्तियार कर लिया है और उसके मुताबिक़ काम भी कर रहे हैं लेकिन नतीज़े की तरफ़ आपको ध्यान नहीं देना चाहिए । काम किये जाइए, चूँकि आपके हाथ में इसके सिवाय कुछ नहीं है । नतीज़ा खुद -ब-खुद ज़ाहिर हो जावेगा जिसको न आप तब्दील कर सकते हैं न पैदा कर सकते हैं । नतीज़ा देर सबेर ज़रूर ज़ाहिर होगा । जो ज़ाहिर हो उसको परमात्मा का हुक्म मानकर खुशी से क़बूल करो और उसी में तुम्हारी भलाई है ।

खत को कई बार पढ़ने की ज़रूरत है । आपने हालात से मुत्तले (सूचित) करते रहना ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१०)

सिकन्दराबाद

४ मार्च १९४४

प्यारी बहिन, नमस्ते ! (महेशचंद्र जी की माता जी)

हमारे यहाँ का तरीका मेहर और दया का है जिसमें सर्वस्व परमात्मा के चरणों में अर्पण कर दिया जाता है और उसकी दया और मेहर पर नज़र रहती है । अपनी दीन और दुनियाँ के काम सब उसकी इच्छा पर छोड़ दिए जाते हैं और आप बेफिक्र होकर बैठ रहते हैं जैसे कि गांव वाले अपना मुक़दमा वकील को समझाकर खुद बेफिक्र हो रहते हैं । न गुज़रे हुए पर अफ़सोस, न आईन्दा के लिये परेशानी । न किसी चीज़ की इच्छा और न किसी चीज़ से परेशानी । जो सर पर आ पड़ा उसको खुशी खुशी परमात्मा का हुक्म समझकर बर्दाश्त कर लिया और ख़याल यही रखा कि इसमें ही हमारी भलाई है । जहाँ तक समय हो, उसकी याद में गुज़ारो और खुश रहो । परमात्मा आपके दिल को अपनी मौहब्बत का पात्र बनायें ।

बच्चों को प्यार ।

आपका भाई - श्रीकृष्ण

(११)

११-३-४४

माई डियर वैद्य जी (भगवती प्रसाद)

परमात्मा आपके दिलों में फ़कीरों की मौहब्बत कायम रखें । आपकी हालत बेहतर है । परमात्मा तरक्की दे । खयालात का आना और चले जाना अच्छा है । जब सब निकल जायेंगे, कम हो जावेंगे । वह पहली हालत निचली थी जिसमें होश नहीं रहता था । यह हालत बेहतर है कि होश भी है और बेहोशी भी । आप जहाँ तक हो इन्साफ़ को हाथ से न जानें दें । और इन्साफ़ यह है कि जो दूसरों से चाहते हो, वह दूसरों के साथ करो । जो दूसरों से नहीं चाहते,

वह दूसरों से मत करो । मैं दुआ करता हूँ कि परमात्मा आपको ठीक रास्ते पर कायम रखें और अपने साथ आफ़ियत में रखें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१२)

सिकन्दराबा

१९४४

माई डियर बा । महेशचंद्र जी, नमस्ते

पत्र आपका आया, हाल मालुम हुआ । आपकी वाल्दा साहिबा (माता जी) यहाँ पर ठहरी हुई थीं और आपके भाई राजेश्वर नाथ भी देहली से यहाँ आये हुए थे । आपकी शादी और आपकी बहिन की शादी का मामला दरपेश (विचारणीय) था । आपकी सलाह की ज़रूरत थी इसलिए आपको तार दिया था । आपकी वाल्दा आपका इन्तज़ार करती हुई वापस चली गयीं और इरादा करती थीं कि आपके पास जाएँ ।

ज़मीर (भीतर की आवाज़) आत्मा की आवाज़ नहीं है बल्कि उसमें आत्मा की आवाज़ के साथ ज़्यादा हिस्सा मन, बुद्धि और अहंकार का होता है । जैसा जिसका ख्याल है, अक़ल है, संस्कार हैं वैसी ही उसकी ज़मीर की आवाज़ भी होगी । यह ठीक भी हो सकती है, ग़लत भी । और इसीलिए लोग बुजुर्गों की राय की कद्र करते हैं क्योंकि उनको दुनियाँ का तज़ुर्बा ज़्यादा होता है । गुरु को समझने में आपने ग़लती की । वह उच्च कोटि के आदमी होते हैं । उनकी हस्ती (व्यक्तित्व) खुदगर्ज़ी (स्वार्थ) से पाक (पवित्र) होती है । उनकी हस्ती प्रेम की हस्ती है और उनकी ज़िन्दगी प्राणियों के उद्धार के लिए होती है । उनकी आत्मा बिलकुल शुद्ध होती है और वह बुराई-भलाई का अनुभव ख़ूब कर सकते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि निर्मल होती है । जो उनका कहना मानते हैं और उनके कहने में चलते हैं, खुश रहते हैं । जो उनके कहने का ख्याल नहीं करते वह तकलीफ़ उठाते हैं और बाद में पछताते हैं । न वह कहना मानने वालों से खुश होते हैं और न कहना न मानने वालों से नाराज़ । न वह किसी को नसीहत करते हैं और न किसी को मज़बूर करते हैं कि उनका कहना मानें । जो शीशे में अपना मुँह देख कर अपना

नुक्स दूर कर लेते हैं शीशा उनसे कुछ नहीं कहता और जो नुक्स दूर नहीं करते शीशा उनसे भी कुछ नहीं कहता । वह हमेशा एक-रस हैं ।
दुआगो - श्रीकृष्ण

(नोट - मैं विवाह करने के पक्ष में नहीं था जिसके मेरे निजी कारण थे परन्तु मेरी माताजी वात्सल्य के नाते विवाह कर लेने का आग्रह करती थीं जिसे मैं अस्वीकार कर देता था। निदान वे गुरुदेव के पास गयीं और उन्होंने मुझे तार द्वारा बुलाया। मैं मामला समझ गया और जाने के बजाय गुरुदेव को एक पत्र लिखा कि मेरा ज़मीर विवाह के पक्ष में नहीं है और यदि मेरी माता जी के आग्रह पर मेरे गुरुदेव भी ज़मीर के खिलाफ़ मुझे आदेश दें तो मैं क्या करूँ ? अब पछताता हूँ कि ऐसा बेहूदा पत्र मैंने क्यों लिखा ? परन्तु उनके एक सुपुत्र भी मेरे ही जैसे विचारों के थे और उपरोक्त पत्र गुरुदेव ने उन्हें ही बोल कर लिखवाया था। इस तरह दोनों को नसीहत दी।--(महेश चंद्र)

(१३)

सिकन्दराबाद

अज़ीज़म दुआ ! (जयनन्दन सिंह, बस्ती)

आपका दूसरा खत मिला । जो काम इंसान करता है उसका आदी हो जाता है और उसकी आदत में दाखिल हो जाता है और आहिस्ता -आहिस्ता उसकी बुराई भी उसकी नज़र से जाती रहती है और वह काम उसको ठीक मालूम होने लगता है । वह उसको छोड़ना भी चाहे तो नहीं छोड़ सकता । इस तरह वह अपनी आदतों का गुलाम हो जाता है और वह रूह (आत्मा) जो साफ़ -शफ़ाफ़ (निर्मल) आज़ाद-मुतलक़ (निर्लेप) थी, जो ज़िन्दगी आनन्द और ज्ञान जिसका पैदायशी हक़ था, अपनी असलियत को भूल कर दुनियाँ के दुःख बर्दाश्त करती है और छुटकारा नहीं पाती । उसकी सिर्फ़ एक ही तरकीब है वह यह है कि किसी व्यक्ति का (जिसने अपनी आत्मा को दुनियाँ के दुखों से आज़ाद कर लिया है) अपना सच्चा हमदर्द मानकर मज़बूती से उसके कहने पर अमल करे । इसमें शक नहीं कि शुरू शुरू में मन हज़ारों तरकीबें करेगा और उसको रास्ते से हटावेगा जैसा कि आपके साथ कराया है लेकिन अगर इरादा मज़बूत

है तो ज़रूर मन आहिस्ता आहिस्ता अपनी पुरानी आदतों को छोड़ने लगेगा और कोई वक़्त आवेगा जब आत्मा अपनी असली शान से चमकेगी और सत, चित, आनन्द - जो उसके पैदायशी गुण हैं, हासिल करेगी। हासिल अब भी हैं लेकिन आदतों का ग़िलाफ़ (आवरण) पड़ा हुआ है उसको उठाना है। आप ग़िलाफ़ को उठाना चाहते हैं लेकिन जब रास्ता बतलाया जाता है वह तरकीब करने को तैयार नहीं हैं, मैं ग़िलाफ़ नहीं उतार सकता। यह काम तो आपको ही करना होगा। सिर्फ़ रास्ता बतला सकता हूँ और मदद दे सकता हूँ। लेकिन अगर मेरे कहने पर अगर आपको विश्वास नहीं है और अगर विश्वास है लेकिन अमल करने को तैयार नहीं तो तुम ही बतलाओ मैं तुम्हारे मदद कैसे कर सकता हूँ और ऐसी सूरत में जब तुम मुझसे सैकड़ों कोसों के फासले पर मुक़ीम (रह रहे) हो।

अगर तुम दरअसल दुनियाँ से परेशान हो और मदद के ख़्वाहितगार (इच्छुक) हो तो मैं बड़ी खुशी से मदद करने को और रास्ता बतलाने को तैयार हूँ क्योंकि इस तरीक़े पर मैं अपने फ़र्ज़ से सुबुकदोश (कर्तव्य मुक्त) होता हूँ और परमात्मा की ज़ात से पूरी उम्मीद कामयाबी (सफलता की आशा) करता हूँ। आप एक राय क़ायम नहीं कर सकते। उसकी ख़ास वजह यह है कि अक़ल कुछ और कहती है और मन क़तई तैयार नहीं है। किसी और तरफ़ ले जाता है। जब तक आदतें ठीक न हों सम अवस्था नहीं आ सकती। जो अमल (अभ्यास) आपको करने के लिए बतला दिया गया है वह अमल आप सुबह शाम बराबर करते रहें और वह अमल आपके चाल-चलन और रहन-सहन बनाने के लिए उतना ही ज़रूरी है जितना हर खाना-पीना आपके जिस्म (शरीर) के क़ायम रखने के लिए ज़रूरी है। जब तक संध्या न कर लें, खाना न खावें चाहे दम निकलने लगे। फिर देखिये आपको वक़्त मिलता है या नहीं और भूल भी नहीं होगी। यह सब क़ैद नफ़स का है और जब तक नफ़स को सख्ती से नहीं पकड़ेंगे यह ठीक नहीं होगा। इसके बाद जो खयालात उठें, जो हालत हो, तहरीर करें (लिखें) ताकि मैं आयन्दा के लिए हिदायत दे सकूँ। पण्डित केशोसरन से नमस्ते फ़रमावें।
नियाज़तमन्द - श्रीकृष्ण

आदी=अभ्यस्त, ज़ात= एकेश्वर, नफ़स= माया, मलिन मन

सिकन्दराबाद

५-२-४५

बाबू जी! नमस्ते ! (जयनंदन सिंह, बस्ती)

पत्र आया, समाचार मालूम हुआ। आपके पत्र से ऐसा मालूम होता है कि आपका विश्वास ईश्वर में ड़ाँवाडोल है। इसलिए आप उसकी इबादत (पूजा, उपासना) ज़रूरी नहीं समझते। अगर आपको संध्या की ज़रूरत महसूस होती तो किसी न किसी तरह समय निकालकर परमात्मा का ध्यान करते। लिहाज़ा सब से पहले आपको यह तय करना है कि परमात्मा है या नहीं। इस बात का फ़ैसला आप खुद कर सकते हैं या वह कर सकता है जिस पर आपको पूर्ण विश्वास हो और उसके और आपके ख़्याल में मेल हो। मैं इतनी दूर रहता हुआ यह काम नहीं कर सकता हूँ, न आपको मेरी बात पर पूर्ण विश्वास है और न मेरे व आपके ख़्यालात मिलते हैं। मैं आपको सिर्फ़ ख़्याल दे सकता हूँ। अगर आप सचमुच इस बात का फ़ैसला करना चाहते हैं कि परमात्मा है भी या नहीं तो इस ख़्याल को बराबर सोचते रहिये और किताबों से मदद लीजिये। जो उस जगह पर पण्डित हों, उनसे विचार विनिमय कीजिये। अगर तबियत चाहे और कोई बात समझ में न आये, तो मुझको लिखिये। मैं भी कोशिश करूंगा। मेरे पास एक दो रोज़ रहने से इतना ही फ़ायदा हो सकता है जितना आपने महसूस किया। जब तक आपको यह निश्चय न हो जावे कि परमात्मा है, उस समय तक आप परमात्मा का ध्यान नहीं कर सकते और आपका मन हज़ारों तरह की रूकावट करेगा और कभी संध्या में तबियत नहीं लगेगी। जब आपको यह निश्चय हो जाय कि परमात्मा है और उसका ध्यान भी ज़रूरी है, उस समय आप मुझको लिखें। मैं आपको तरीक़ा बतला दूँगा जो मेरे साथ बरता गया है।

इन्सान का जिस्म ज़ाहिरदारी से यह मालूम होता है कि यह माद्वे (--- स्थूल तत्वों) का बना हुआ है। लेकिन अगर ग़ौर से देखा जाय और सोचा जाय तो जान पड़ता है कि माद्वे के अलावा कोई और चीज़ भी है जिसके सहारे माद्वे काम करता है। सोते समय जिस्म मौजूद रहता है, लेकिन वह बे-हरक़त (निश्चल) पड़ा रहता है। जिससे मालूम होता है कि माद्वे के

अलावा भी कोई चीज़ है जो सोते वक़्त वहाँ से हट गयी । मरते वक़्त जिस्म पड़ा रहता है लेकिन वह कुछ काम नहीं कर सकता क्योंकि जिस चीज़ के सहारे वह काम कर रहा था वह चीज़ निकल गयी । इसी को जीवात्मा या रूह कहते हैं । जैसे हर चीज़ का भण्डार ब्रह्माण्ड में मौजूद है वैसे जीवात्मा या रूह का भण्डार भी मौजूद है । उसको परमात्मा कहते हैं । न रूह दीख सकती है न परमात्मा । लेकिन रूह इन्सानी-जिस्मों में काम करती हुई मालूम देती है जिसको आप रोज़ खुद देखते हैं । आँखें देखती हैं । कान सुनते हैं । चमड़ा महसूस करता है, आवाज़ निकलती है, वगैरह, वगैरह। रूह निकल गयी, अब सब काम बन्द हो गया । और अगर शरीर ऐसा ही पड़ा रहा तो थोड़े दिनों में जिस्म बिलकुल ग़ायब हो जायेगा । मिट्टी-मिट्टी में, पानी पानी में, आग आग में, हवा हवा में जाकर मिल जायेंगे । इस तरह जब तक इस जगत में परमात्मा मौजूद रहता है, जगत के सब व्यवहार हो रहे हैं । सूरज चमकता है, रौशनी देता है , चारों तरफ़ घूम रहा है , ज़मीन अपना काम कर रही है, चाँद अपना काम कर रहा है, वगैरह । जब परमात्मा की सत्ता यहाँ से हट जाती है, सब चीज़ अपने भण्डार में लय हो जाती हैं और भण्डार में समा जाती हैं। इसी को प्रलय कहते हैं । अब आप दुनियाँ की हर चीज़ को देखें और अपने आपको भी देखते जायें कि आपके जिस्म की इन्द्रियाँ आँख, नाक, कान, वगैरह और ब्रह्माण्ड के तमाम देवता सूर्य, अग्नि , वायु , वगैरह खुद काम कर रहे हैं या कोई दूसरी ताक़त इनसे काम कराती है । जो कुछ आपका तज़ुर्बा है, उसको लिखें । अक्वल तो आपको फ़ुरसत ही नहीं मिलती, जैसा आप खुद लिखते हैं, लेकिन अगर फ़ुर्सत मिल जाय तो किसी धार्मिक किताब का मुताला (अध्ययन) किया करें और सोचा करें कि बुरी सौहबत (संग) से कहीं अच्छा है । बुरी सौहबत में सिवाय इसके कि अपना समय ख़राब करें और बुरे ख़यालात लेकर उठें और कोई फ़ायदा नहीं। आपका ख़त आने पर फिर उत्तर देने की हिम्मत करूंगा ।

आपका शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

२४-२-४५

अज़ीज़म दुआ ! (महेश चन्द्र)

दो खत आये, हाल मालूम हुआ । अपने आपको परमात्मा के हवाले समझो । भले बुरे दोनों ख्याल उसकी तरफ से हैं । क्योंकि ख्यालों से आज़ादी हासिल करनी है इसलिए भले बुरे यानी मायावी ख्यालात को छोड़ते हैं और अच्छे ख्याल ग्रहण करते हैं, बाद में इनको भी छोड़ देते हैं। वरना न कोई बुरा है, न अच्छा । मायावी ख्यालों से हटने की कोशिश ज़रूर करो लेकिन अगर वह आते हैं तो परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। समय आयेगा जब उनसे आज़ादी मिल जायगी। अपनी जिन्दगी का आदर्श परमात्मा की रज़ामन्दी जानो और उसकी रज़ामन्दी धर्म पर चलने में है । हर समय यह ख्याल रखो कि अपने आपको दूसरे के हवाले कर दिया है और अब तुम नहीं बल्कि वह खुद ही है : -

**प्रेम गली अति साँकरी, या में दो न समायं !
जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु है मैं नायँ !!**

राज़ी- खुशी का पत्र डालते रहा करो।

तुम्हारा - श्रीकृष्ण लाल

सिकन्दराबाद

४-७-४५

महेश बाबू, नमस्ते !

आपके कई पत्र आये । जबाब देने के लिए रोज़ सोचता रहा मगर दे नहीं सका । इन्सान जो कुछ सोचता है अगर वह ख्याल कायम भी है तो भी बरसों उसको शकल अख्त्यार करने में लग जाते हैं । और यह तो तब है जब वह ख्याल बराबर कायम रहे । हम

आप गृहस्थ हैं, हज़ारों किस्से लगे रहते हैं जो कि एक ख्याल कायम नहीं रहने देते । इसलिए जो हम सोचते हैं वह जल्दी पूरा नहीं होता । लेकिन इससे घबराना नहीं चाहिए । वह शख्स बहुत गनीमत है जो दुनियाँ में अपना फ़र्ज़ पूरा करते हुए दो समय उसका भी नाम ले लेता है।

तबियत का लगना न लगना अपने हाथों में नहीं है । भिखारी का काम माँगना है, देने वाला दे या न दे । लेकिन अगर भिखारी दरवाज़े पर पड़ा रहेगा और दरवाज़ा न छोड़ जायगा तो एक न एक दिन महरबानी होगी । घबराओ नहीं । जो कर रहे हो बहुत गनीमत है । इसे किये जाओ और दुनियाँ के फ़र्ज़ों को पूरी तरह अंजाम दो । अपनी खैरियत से इत्तला देते रहा करो । वक्त आने पर मिलूंगा ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१७)

सिकन्दराबाद

नवम्बर १९४५

महेश बाबू, नमस्ते !

पत्री तुम्हारी आयी । हाल मालूम हुआ । यह सुन कर खुशी है कि तुम्हारी आँखें अच्छी हैं ।

इस पर पूरा विश्वास रखो कि इस संसार का मालिक ज़रूर कोई है । उसका पूजन करना हमारा धर्म है । चाहे हमारी तबियत लगे या न लगे, उसके बताये हुए मार्ग पर चलना है । जिसको ऋषियों और मुनियों ने बनाया है उस पर चलना हमारा फ़र्ज़ (कर्तव्य) है । चाहे लाभ हो या हानि ।

उत्तर शीघ्र देना ।

-- श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

२५-२-१९४६।

प्यारी बेटी, खुश रहो !

तुम्हारी चिट्ठी २-१-४६ की लिखी हुई मिली । शुरू- शुरू में जो बच्चा स्कूल जाता है उसकी तबियत घबराती है और नहीं लगती लेकिन कुछ समय व्यतीत होने पर बड़ा पंडित हो जाता है । अगर शुरू में ही घबरा कर वह पढ़ना छोड़ देता है तो अनपढ़ रह जाता है । शुरू-शुरू में तबियत ज़रूर संध्या में नहीं लगती क्योंकि मन दुनियाँ की तरफ़ मुद्त से लगा हुआ है लेकिन अगर बराबर अभ्यास करते रहें तो वक़्त आने पर चौबीसों घंटे परमात्मा का ही ध्यान जमा रहता है । इसलिए तुम्हें घबराना नहीं चाहिए । मन को बार -बार दुनियाँ की तरफ़ से हटाकर उस ध्यान में लगाओ जो तुमको बताया गया है । अभ्यास होने पर मन रुकने लगेगा । परमात्मा नज़दीक से नज़दीक है और दूर से दूर । जो उसका ध्यान करते हैं और उस पर आशा रखते हैं उनके वह बिलकुल नज़दीक है और हर वक़्त उनकी देखभाल करता रहता है और वह काम होता है जिसमें हमारी भलाई होती है । और हर मुसीबत से बचाता है। जो उसको भूल जाते हैं , उनको वह भी भूल जाता है और शैतान (माया) उनका साथी हो जाता है और दुनियाँ के झगड़ों , मन और इन्द्रियों में फँसा कर छोड़ने नहीं देता । तुम पर तो परमात्मा की अत्यन्त कृपा है कि बचपन से ही तुमको उसके चरणों में प्रेम है । तुम विश्वास रखो, जितना उससे प्रेम करोगी उतना उसको नज़दीक पाओगी । दुनियाँ के तमाम काम निष्काम अपना फ़र्ज (कर्तव्य) समझ कर करती रहो और परमात्मा के चरणों में प्रेम रखो । **शुरू- शुरू में गुरु का ध्यान ही परमात्मा का ध्यान है** । अपने सब काम उसके आसरे छोड़ दो और अपने मन में कोई ख्वाहिश मत उठाओ। जब वह खुद ही तुम्हारी देख-भाल कर रहा है, सर्वशक्तिमान और अन्तर्यामी है, तो फिर तुमको भय किसका ? वगैर ख्वाहिश के वक़्त आने पर जो कुछ तुम्हारे लिए अच्छा होगा, वही होगा। इसलिए हर हालत में खुश रहो, उसको अपने नज़दीक महसूस करो। घर के काम-काज और व्यवहार धर्मशास्त्र के बमूजिब (अनुसार) बनाओ । इसमें शान्ति है । परमात्मा अपने चरणों में तुमको प्रेम दे जिसकी तरक्की रात-दिन होती रहे ।

तुम्हारी चिट्ठी २१-१-४६ की मिली । अक्वल (प्रथम) तो काम की ज़्यादाती रहती है और फिर खत लिखने में बहुत सुस्त हूँ गाज़ीपुर गया था । वापिसी पर तबियत कुछ खराब हो गयी । तुम्हें चिट्ठी का इन्तज़ार तो रहा होगा । हमारा परमात्मा हरदम हमारे साथ है, उससे बातें करने और उसके साथ खेलने के आलावा और वक़्त ही कहाँ है कि हम दूसरों की तरफ़ ध्यान दें। अगर कोई मौहब्बत का मारा प्रेमी मिल जाता है तो उससे बातचीत करने में तबियत लगती है । अगर नहीं मिलता तो हम हैं और हमारा प्रीतम । अगर कोई बिना वजह सर पड़े । उसकी तरफ़ से मुँह फेर लो और अकेले में दुआ करो कि परमात्मा अपना प्रेम उसको भी दे । थोड़े दिनों में या तो तुमसे मौहब्बत करने लगेगा या तुम्हारे पास से हट जायेगा । या तो अब तक सब मामलात ठीक हो गए होंगे, और अगर नहीं हुए हैं तो हो जायेंगे घबराओ नहीं । यहाँ सब अच्छी तरह से हैं ।

शुभचिन्तक -- श्रीकृष्ण

(१९)

सिकन्दराबाद

६-३-४६

(वैद्य भगवती प्रसाद)

समुन्दर में लहरें उठती हैं और दब जाती हैं । ऐसा होता ही रहता है । कभी लहरें बहुत ऊँची उठती हैं और फिर बहुत नीचे दब जाती हैं । इससे परेशान नहीं होना चाहिए । जो होना है, होगा। तुम उसको रोक नहीं सकते । आइन्दा के लिए ख्याल ठीक करो । ताकि उम्दा फल हो । मौजूदा तुम्हारे पिछले ख्याल का नतीज़ा है, आइन्दा दुनियाँ तुम्हारे मौजूदा ख्यालात का नतीज़ा होगा । ज़्यादा क्या अर्ज़ करूँ ?

अज़ीज़ान को दुआ।

खैरअन्देश - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

१२-३-४८

अजीजम, खुश रहो ! (महेश चन्द्र)

अगर तुमको रुखसत (छुट्टी) मिल सके तो फतेहगढ़ साथ चलने की कोशिश करना और सनया अजीजा (बहू) को भी साथ ले आना लेकिन यह सब सहूलियत पर मुनहसिर है । मेरा प्रोग्राम हमशीरा (बहिन) (महेश चंद्र जी की माता जी) के खत में लिखा हुआ है।

माया को छोड़कर चलने में खेरियत नहीं है और माया के होकर रहने में भी खैरियत नहीं है । रास्ता इन दोनों के दरम्यान (बीच में) है । जो माया की बेइज़्जती (अनादर) करता है , कामयाब (सफल) नहीं होता । जो माया में फंसा हुआ है वह हमेशा नाकामयाब रहता है । माया को साथ लेकर चलना और उससे अलहदा रहने में खैरियत है । परमात्मा तुमको ज्ञान बखर्शे ।

अभ्यास और वैराग यह दो तरीके आज़ादी हासिल करने के हैं । सत्संग में आसानी से मिल जाते हैं । यह भक्ति मार्ग है । ज्ञान से भी दोनों रास्ते खुल जाते हैं लेकिन रियाज़त (अभ्यास) और मेहनत से जो ज्ञान का रास्ता है । अब जैसी परमात्मा तौफ़ीक़ दें ।

खैरअन्देश (शुभचिंतक)-श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

५-२-५०

अजीज़ महेश बाबू , खुश रहो !

तुम्हारी तीन सप्ताह की डायरी की नक़ल मिली । मैंने उसको अहमियत से रख लिया है । अवसर मिलने पर समझा दूँगा । डायरियों से पता चलता है कि तुम्हारी हालत बहुत अच्छी है और तरक्की की जानिब क़दम बढ़ रहा है । परमात्मा करे कि तुम जल्द इस काबिल हो जाओ कि अपना फ़र्ज़ पूरा कर सको और इस चीज़ को लोगों तक पहुँचा सको । सब परमात्मा के रहम पर निर्भर है । तुम्हारी घरवाली की तरफ से फिक्र रहती है । परमात्मा करें कि वह जल्द तन्दुरुस्त हो जाय । लिखो कि उसकी हालत क्या ज़्यादा ख़राब हो गयी थी और अब क्या हालत है । इंजेक्शंस (injections) बराबर कराते रहिये ।

रूपये से मुहब्बत करना और नफ़रत करना दोनों बुरे हैं । मौहब्बत करने से यह अपने में फंसाता है और वगैर इसके दुनियाँ के काम भी नहीं होते, लिहाज़ा बीच का रास्ता ग्रहण करना चाहिए जो सलामती का रास्ता है । काम में मशगूल रहना बहुत अच्छा है, इससे बुरे ख्यालात से इन्सान बचता है। जो वक़्त काम से बचे या फुरसत मिले उसको परमात्मा की याद में गुज़ारना चाहिए ।

कसरत के लिए वख़्त निकालना चाहिए । जो तबियत चाहे वही कसरत करनी चाहिए । लेकिन तुम्हारे लिए घूमना ज़्यादा अच्छा है । लोगों की सौहबत से बचना चाहिए । एकांत सेवन और अकेले ही घूमना चाहिए । मेरे पास आने की ज़रूरत नहीं है । तुमको वहाँ बैठे भी वही फ़ायदा होगा जो मेरे पास यहां पर होगा केवल ध्यान रखने की ज़रूरत है । मुझे जबाब देने में देर हो जाती है, उससे परेशान नहीं होना चाहिए । तुमको खर्च की कमी तो नहीं है, लिखो ।

बहन को नमस्ते, बहू को आशीर्वाद

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

दिसम्बर १९५०

बहन, खुश रहो (महेश चंद्र जी की माता जी)

आपकी चिट्ठी आयी, हाल मालूम हुआ। मुझको दुनियाँ की कोई ख्वाहिश नहीं और सब चीज़ों से उपरति है,। यहाँ तक कि दुकान के काम में भी दिलचस्पी नहीं है। घर पर ऐसा कोई नहीं जिससे एक मिनट भी बात-चीत करूँ। सुबह को कोई सत्संगी आ जाता है तो कोई बात-चीत हो जाती है वरना तमाम वक्त एकान्त में गुज़रता है। मैं जानता हूँ कि यह नुक़्स है लेकिन मेरा साथी ईश्वर हर वक्त साथ है और वह सबसे बहतर साथी है। मैं अपनी कमी को महसूस करता हूँ और कोशिश कर रहा हूँ और सुबह ५ बजे किशन तालाब पर जा बैठता हूँ। मुझको गुरुदेव की कृपा से पूरी उम्मीद है कि जल्दी ही एकान्त का नुक़्स जाता रहेगा और मैं एकान्त में खुश रहने लगूँगा।

आपका रास्ता साफ़ और सीधा है। अपने परमात्मा की इच्छा सिर्फ़ कायम रखें और बाकी तमाम ख्वाहिशात उसमें ख़त्म कर दें। सिर्फ़ उसके लिए तड़प रखिये और बाकी तमाम दुनियाँ की चीज़ों की तरफ़ से, चाहें वह बुरी हों या भली, धर्म हों या अधर्म, आँखें बंद कर लीजिये और अपने आपको उसके हाथ में इस तरह दे दें जैसे मुर्दा ज़िन्दे के हाथ में होता है। अगर आप उसके ध्यान में रहेंगी तो जो ख्वाहिशात या कर्म आपसे होंगे वह वही होंगे जिनका होना आपके लिए ज़रूरी है, और आपके फ़ायदे के लिए है लेकिन शर्त यही है कि वे अनन्त में लय होते हुए ही ख़्यालात और कर्म हों।

आप में परमात्मा का प्रेम है लेकिन उसके साथ ही साथ और भी ख्वाहिशात हैं, अगरचे (यद्यपि) वह ठीक हैं और कुदरती है लेकिन परमात्मा में लय हुए वगैर वह ख्वाहिशात आपकी हैं। इसीलिए हर लहमा (क्षण) अपने इष्ट के ध्यान में रहें और जब तक सब ख्वाहिशात और ख़्यालात एक हस्ती (गुरु, परमात्मा) में ख़त्म नहीं हों जायेंगे आपके अपने रहेंगे और मंज़िले मक़सूद (लक्ष्य) दूर। लिहाज़ा तमाम ख्वाहिशात को और उनकी मौहब्बत को

एक की मौहब्बत में खत्म कर दो, सिर्फ़ उसी की मौहब्बत कायम रहे और बुरे और भले सब ख्यालात मिट जायें। उस वक़्त आपमें उसका प्रेम उमड़ पड़ेगा और मजज़ूबियत (प्रेम में मस्त रहना) पैदा होगी जो वहम (अविश्वास) के रास्ते को जला कर खाक कर देगी। उस वक़्त अगर उसकी कृपा हुई तो आपको उसके दर्शन होंगे और आप आहिस्ता आहिस्ता उसी में समा जायेंगी।

परमात्मा आपको खुश रखें और अपने प्रेम से मालामाल करें।

आपका भाई - श्रीकृष्ण

(२३)

गुरुदेव के नाम पत्र

२४-२-१९५३

मेरे स्वामी,

एक अर्से (बहुत दिनों) से मेरे दिल में यह सबाल घूमता रहता है कि मैं आपसे स्नेह करता हूँ या आप मुझसे स्नेह करते हैं। परन्तु आज तक बाबजूद इसके कि मैंने इस पर बहुत गौर किया है, इसका जबाब मेरी समझ में नहीं आता। कभी मन यह कहता है कि मैं प्रेम करता हूँ और कभी यह कि आप प्रेम करते हैं। दोनों ही पक्षों में कुछ न कुछ कमी नज़र आती है। मन का यह कहना कि मैं प्रेम करता हूँ इसलिए नहीं जंचता क्योंकि प्रेम आदमी किसी एक ही प्राणी से या वस्तु से कर सकता है न कि दस पाँच से। जब मैं स्त्री-बच्चों, धन इत्यादि की चाह करता हूँ तब मन की यह धारणा ग़लत मालूम देती है कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ और तब इस बात का दुःख होता है कि जब इतनी लम्बी सौहबत से भी मैं अपने मन में आपके प्रति प्रेम पैदा नहीं कर सका तो आगे ही इससे क्या आशा की जा सकती है और यदि यही हालत रही कि स्त्री-बच्चों में जाकर मैं सब कुछ भूल जाता हूँ तो भविष्य बिलकुल निराशाजनक प्रतीत होने लगता है। जब मन इस विचार से दुखी हो जाता है तब दूसरी भावना आती है कि आपही मुझ से प्रेम करते हैं और आज तक जो कुछ मुझको प्राप्त हुआ है यानी

बाबजूदे कि मैं लगातार अभ्यास नहीं करता, न ही मैं यह कह सकता हूँ कि मैंने आपके आदेशों का भी पूर्ण-रूप से पालन किया है, या करने की चेष्टा की है, इतने पर भी जो कुछ मुझको प्राप्त हुआ है वह आपने केवल स्नेहवश ही मुझको प्रदान किया है।

इस भावना के विरुद्ध मन यह तर्क सामने रखता है कि ऐसी मुझमें क्या विशेषता है कि जिसकी वजह से आप मुझसे स्नेह करते हैं या मैंने आपकी क्या सेवा की है जिसके फलस्वरूप मैं यह आशा करूँ कि आप मुझसे स्नेह करते हैं। फिर यह कि मुझमें योग्यता भी तो नहीं। मैं एक बे-पढ़ा लिखा आदमी हूँ, अवगुण भी मुझमें बहुत हैं, जिनको मैं आपको कई बार साफ़-साफ़ लिख भी चुका हूँ चौथे यह कि आपके श्री-चरणों में एक से एक विद्वान, प्रेमी और आज्ञाकारी सेवक हैं। इन तमाम बातों को जब मैं विचारता हूँ तब मेरा यह विचार कि आप मुझसे स्नेह करते हैं काफ़ूर (निर्मूल) हो जाता है मैं इस उधेड़बुन से तंग आ गया हूँ। न तो इसका निर्णय ही होता है और न यह सबाल मेरा पीछा छोड़ता है। अतः तंग आकर आपको अपनी हालत की सूचना दे रहा हूँ ताकि आप ही इसका निर्णय करें या इस सबाल से, जो बार-बार मुझको तंग कर रहा है, मेरा पीछा छुड़ावें।

मेरे प्रभु ! मैं आपसे एक बात की प्रार्थना करता हूँ और वह यह है कि आप मुझको यह आशीर्वाद दें कि उठते-बैठते, खाते-पीते, दुःख में सुख में, आशा में निराशा में, हर समय आपकी याद बनी रहे और एक क्षण के लिए भी आपकी याद न भूले। मैं यह जानता हूँ कि मैं इस आशीर्वाद के लायक नहीं हूँ क्योंकि न तो मैंने आपकी कुछ सेवा की है और न आपके आदेशों का पालन किया है, न अपने दुर्गुणों को छोड़ने की कोशिश की है। न मुझमें वैराग ही है, न ज्ञान और न भक्ति। तब फिर मैं किस बिते पर इतनी बड़ी चीज़ आपसे मांगने का साहस कर सकता हूँ, इसलिए अपने चारों तरफ निराशा ही निराशा पाता हूँ। चारों तरफ निराशा के जंगल में घिरा हुआ हूँ। इस निराशा के वातावरण में एक हल्की सी आशा की झलक यह आती है कि तुलसीदास जी ने यह लिखा है कि संतजनों का एक क्षण का संग भी बड़े से बड़े पापी को भवसागर से तार देता है और संत सद्गुरु के दर्शन मात्र से कल्याण हो जाता है। सो मेरे प्रभु, मैंने जो इतने अर्से (काल, समय) तक आपके चरणों के दर्शन किये हैं, थोड़ा बहुत आपकी कृपा से आपके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और फिर मैं भवसागर से पार नहीं होना चाहता, मैं तो एक छोटी सी बात चाहता हूँ, सो क्या, जो स्वभाव से ही दयालु हैं और

आज तक मुझ पर दया और कृपा करते आये हैं, क्या मेरी इस छोटी सी प्रार्थना को स्वीकार नहीं करेंगे ? मेरा तो यह विश्वास है कि मुझको आज आपके दरबार में मुँह माँगा आशीर्वाद जरूर मिलेगा । महाराजाओं के दरबार से कोई याचक खाली हाथ नहीं जाता, फिर आप तो महाराजाओं के महाराजा हैं, जो भला मुझको, माना कि मैं कितना ही अधम, दुराचारी और पापी हूँ, कैसे मेरा सबाल पूर्ण किये बिना वापिस कर देंगे और यदि ऐसा करेंगे तो नाथ, इसमें आपकी ही बदनामी होगी ।

मैं तो जानता हूँ कि आप मुझे टालने के लिए यह उत्तर दे देंगे कि मैं तो सतगुरु नहीं, सो मैं यह किसी भी हालत में मानने को तैयार नहीं हूँ । मेरे लिए जो कुछ है सो आप हो, आप अपने लिए चाहे कुछ हो । संतो की हमेशा से यही भावना रहती है कि वे अपने को हमेशा असमर्थ बताते हैं परन्तु मुझको तो आप यह आशीर्वाद दे दें । मेरा तो आपके आशीर्वाद से कल्याण हो जायेगा ।

सब सत्संगी भाइयों को नमस्ते । बहन को नमस्ते । आपके पत्र की प्रतीक्षा में --

(काशीनाथ)

उत्तर

अज़ीज़म दुआ !

तुम्हारा प्रेम पत्र मिला । पढ़कर हर्ष हुआ । जब मनुष्य दुनियाँ की परेशानियों से तंग आकर उसके दरबार में प्रार्थना करता है और इन सांसारिक झगड़ों से निकलना चाहता है, और अगर उसकी दुआ सच्चे और शुद्ध हृदय से होती है तो उसकी पहुँच उस दरबार तक हो जाती है । उसकी (मालिक की) मोहब्बत जोश में आती है और उसका असर उन लोगों के दिलों पर पड़ता है जो अपने दिल की इच्छाओं को मेट कर उससे लौ लगाए बैठे हैं और इस काम के लिए मुकर्रिर (नियुक्त) होते हैं । वह ऐसे शख्स के पास पहुँच जाते हैं और उससे प्रेम करने लगते हैं । जितना वे अपने आपको उसमें लीन करते हैं उतनी ही मोहब्बत तालिब (जिज्ञासु) को उनसे बढ़ती जाती है, यानी जितनी मोहब्बत मुर्शिद (गुरु) की मुरीद (शिष्य) से होती है उसी

दर्जे की मौहब्बत पाकर मुरीद गुरु प्रेम में मस्त होता जाता है, एक मुराद है (जिसको गुरु स्वयं प्यार करें) और दूसरा फ़िदाई है (जो गुरु से प्रेम करे, उस पर न्यौछावर हो - मुरीद) और मुरीद और मुराद दोनों मिलकर एक हो जाते हैं । यह आपके सिलसिले (वंश) की बरकत है । इस सिलसिले की निस्बत (आत्म सम्बन्ध) माशूकाना है । इसमें पहले मुर्शिद (गुरु) को प्रेम पैदा होता है और फिर मुराद (शिष्य) को, और दोनों मिलकर एक हो जाते हैं । यही असली तालीम है, यही प्रेम मार्ग है । जितनी उसमें कमी रहती है उतनी ही कमी तालिब (जिज्ञासु) में रह जाती है । अगर दोनों मिलकर एक हो जायें तो फिर सिर्फ नाम के लिए फ़र्क रह जाता है । उसी को निस्बत (आन्तरिक सम्बन्ध) की मज़बूती कहते हैं । यही सच्चा प्रेम मार्ग है । यह बहुत सीधा किन्तु बहुत नाज़ुक है । इसमें अपनी हस्ती (व्यक्तित्व) बिलकुल मिटा दी जाती है और यह हालत हो जाती है की जैसे मुर्दा ज़िन्दे के हाथ में होता है । सिर्फ अन्तर यह है कि मुर्दे के सामने लक्ष्य नहीं रहता और ऐसे मुरीद (शिष्य) के सामने अपने इष्ट का लक्ष्य रहता है । मुरीद के असली मायने (अर्थ) मुर्दा के हैं । ऐसी हालत पैदा करने के लिए बराबर कोशिश करते रहना चाहिए । अगर वगैर ख़याल किये ख़ुद -ब-ख़ुद ऐसी हालत होने लगे कि तबियत एक सी रहे, आनन्द आता रहे, दुनियाँ के अन्दर बर्तते हुए ऊपर उठते हुए मालुम देवें, प्रेम और मस्ती की हालत पैदा हो जावे और दिल में बराबर (ईश्वर प्रेम का) दर्द उठे तो समझना चाहिए कि वह मुरीद नहीं बल्कि मुराद बन गया है ।

**दिल को आज़ारे मौहब्बत के मज़े आने लगे ,
उसकी मैं क़ुर्बान जिसने दर्द पैदा कर दिया!**

भावार्थ - मेरे दिल को ईश्वर प्रेम का आनन्द मिलने लगा है । उस (गुरु) की बलिहारी है जिसने यह आनन्द रूपी दर्द पैदा कर दिया है ।

मुरीद उस वक़्त तक रहता है जब तक परमात्मा के दरबार में सुनवाई नहीं हुई थी । अब उसकी सुनवाई हो गयी, उसकी दुआ क़बूल हो गयी, वह क़बूल कर लिया गया और अब मुराद है । ऐसी हालत में उसको चाहिए कि अपने आपको सराहे । कोशिश करो कि ऐसी दशा ज़्यादा से ज़्यादा रहे और स्थायी हो जाया ऐसा कोई काम न करो जिससे यह हालत जाती रहे। इसके दो उपाय हैं । अपनी सब ख़्वाहिशों को एक ख़्वाहिश में लगा दो, यानी सिर्फ़ एक इच्छा रखो और अपना इख़लाक़ (आचरण) बहतर बनाने की कोशिश में रहो । जितनी इच्छायें मिटती

जायेंगी उसी क़दर मज़बूती निस्बत में आती जायेगी और अपनी हस्ती गुम होकर उसमें समा जायेगी जो सबका आधार है। वही मोक्ष, निर्वाण पद इत्यादि नामों से पुकारा जाता है। इसी को सूफ़ियों और संतों की भाषा में राज़ी-ब-रज़ा (यथा लाभ संतोष) कहते हैं। यानी हर हालत में, चाहे कैसी भी क्यों न हो, दुनियाँ, तर्कें खुश रहना चाहिए। यहाँ पर बुराई-भलाई से निजात (छुटकारा) मिल जाता है। आगे के संस्कार मिट जाते हैं। कोई भी इच्छा शेष नहीं रह जाती। यहाँ तक कि आख़िर में परमात्मा से भी बेनियाज़ हो जाता है। यही गीता का चौथा पद है। तर्कें दुनियाँ, तर्कें उक़बा, तर्कें मौला, तर्कें तर्क। भावार्थ-- पहले दुनियाँ को मन से छोड़ो, फिर गुरु के ख़याल को छोड़ो और अन्त में ख़याल को भी छोड़ दो।

परमात्मा जिस पर अपना फ़ज़ल (कृपा) करें और बतुफ़ैल पीराने उज़्ज़ाम (वंश के महापुरुषों की कृपा से) अपनी इनायत (देन) और करम (कृपा) फ़रमायें। जब आदमी किसी से प्रेम करता है तो वह उसकी मौहब्बत हर वक़्त चाहता है। हर समय इच्छुक होता है कि उसके पास बैठे और उसको देखता रहे। फिर धीरे धीरे उसकी शकल अपने हृदय में रख लेता है और उसी को देखता रहता है। जिस्मानियत (स्थूल शरीर) से आगे बढ़ता है। प्रीतम की आदतें उसमें आ जायें और जिस्मानियत और इखलाकियत (चरित्र, आचरण) से वही बन जाय और उसी जज़्बे (प्रेमावेश) में पुकार उठता है --

मन तो शुमद तो मन शुदी, मन तन शुदम तो जां शुदी !

ताकस न गोयद बाद अज़ीं। मन दीगरम तो दीगरी !!

जिसका अर्थ है - मैं तू हो जाऊँ और तू मैं हो जा। मैं जिस्म बन जाऊँ और तू मेरी जान बन जाये ताकि फिर कोई यह न कह सके कि तू और है और मैं और हूँ।

कभी-कभी शरीर भी एक सी शकल इख़्तयार कर लेता है।

इसके बाद इखलाक़ (आचरण) में तब्दीली (सुधार) शुरू होती है। जिस्म (गुरु की शकल) की शकल अब ख़याल में नहीं आती बल्कि एक इखलाक़ी (महान व्यक्तित्व) की खयाली शकल सामने रहती है। पहले इन्द्रिय आनन्द का मज़ा था, अब मानसिक आनन्द है जो ज़्यादा लतीफ़ (सूक्ष्म) देरपा (देर तक रहने वाला) और खास खसूसियत (विशेषता) रखता है। इसी हालत को मज़जूबियत या अवधूत गति कहते हैं। इसमें अजीब आनन्द होता है जिसके

लिए इन्सान सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार रहता है । जब इखलाक मुकम्मिल (सम्पूर्ण) हो जाता है यानी दोनों की एकता हो जाती है तो कदम और आगे की ओर बढ़ता है । आत्मा की नज़दीकी (सामीप्य) हासिल होनी शुरू हो जाती है । गुरु का ख्याल गायब हो जाता है, सिर्फ एक ख्याल कायम रहता है। अजीब मस्ती सी छापी रहती है जो अपनी मिसाल (उदाहरण) नहीं रखती। वह हलकी और दायमी (स्थायी) होती है। फिर वह मुबारक दिन आ जाता है जब उसे अपनी आत्मा का साक्षात्कार हो जाता है । जिसने इसका अनुभव कर लिया है उसकी तमाम इच्छायें खत्म हो गयीं । अब न कुछ जानने को रह जाता है, न हासिल करने को। यह हालत कश्फी भी गुज़रती है और कसबी भी। (कश्फी = गुरु की खेंच शक्ति से , कसबी = अपनी मेहनत से) अब प्राण, मन, बुद्धि और आत्मा अपनी असली हालत में ज़ाहिर हो जाती है । इसका हाल जुबान से वर्णन नहीं हो सकता बल्कि शुद्ध बुद्धि ही उसका अनुभव कर सकती है। इस बयान से आपको तस्सली हो गयी होगी और समझ में आ गया होगा कि इस प्रेम की इब्तदा (आरम्भ) और इन्तहा (अन्त) कहाँ तक है। बढ़े चलो । एक ख्याल सामने रखो और सब और से आँखें मीच लो। अपनी हस्ती (आपे को) खत्म कर दो, कोई इच्छा बाकी न रह जाय सिवाय एक ख्वाहिश के - उसके आगे परमात्मा को भी भुला दो, सिर्फ वही रह जाय ।

एक सन्त ने अपने मुरीद (शिष्य) से पूछा - " तू मुझे क्या समझता है ? " उसने उत्तर दिया - " बराय खुदास्त (खुदा की जगह) " फ़रमाया " कुफ़्र अस्त "। (यह कुफ़्र है) बराय खुदा न मी दानी (मुझे खुदा क्यों नहीं समझता। " गुरु को खुदा की जगह समझना शिर्क (नास्तिकता) है ।

सब को मिलाकर एक कर लो । और उसी में अपने आप को लय कर दो और आखिर को वह भी ख्याल छोड़ दो । जो असल है वही शेष रहेगा, बाकी सब गायब हो जायेंगे । परमात्मा ने तुमको पैदा करके अपने आपको पोशीदा (अव्यक्त) और तुमको ज़ाहिर कर दिया । तुम्हारा फ़र्ज़ (कर्तव्य) है कि अपने आपको पोशीदा करके उसको ज़ाहिर कर दो, बस ।

ख़िदमत (सेवा) तीन तरह से होती है- (१) जिस्म (शरीर) से, (२) रूपये पैसे से, (३) मन से । शुरू- शुरू में आदमी जिस्म से यानी हाथ -पांव से ख़िदमत करता है । रूपये के मुकाबले जिस्म से ख़िदमत करना आसान है । बाद को जैसे-जैसे मौहब्बत बढ़ती जाती है, रूपये

से खिदमत करने लगता है और मौहब्बत की तकमील (पूर्णता) होने पर अपना सब कुछ दे डालता है। इसी को -----(समर्पण) करना कहते हैं। यह आखिरी खिदमत है। यह सब बतदरीज (क्रमशः) होता है। अपनी कोई ख्वाहिश न रखना। अपने प्रीतम की ख्वाहिश को अपनी ख्वाहिश समझना, मन का देना है। यह मौहब्बत की इन्तहा (पराकाष्ठा) है। जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है। आप बराबर आगे बढ़ रहे हैं। हीरे में सिफ़ात (गुण) कुदरतन (प्राकृतिक) रूप से मौजूद होते हैं लेकिन उसको काम में तब लाते हैं जब तराश-खराश (गढ़त) करके ठीक शक़ल में तब्दील कर लेते हैं। इस दुनियाँ के दुःख तकलीफ़ें ही ऐसे औज़ार हैं जिनके बराबर इस्तेमाल से इन्सान की असली शक़ल निकल आती है और वह काम के लायक हो जाता है।

आपका दूसरा प्रश्न यह है कि जब मैं अपने बच्चों और स्त्री व रिश्तेदारों से प्रेम करता हूँ तो कैसे कह सकता हूँ कि मुझे अपने इष्ट से प्रेम है जबकि मौहब्बत सिर्फ़ एक से होती है।

उत्तर - एक स्त्री अपने पति के माँ-बाप, भाई-बहिन, रिश्तेदार, यहाँ तक कि उसके माल और दौलत सभी से प्रेम करने लगती है, सबका लिहाज़ और देखभाल करती है। लेकिन क्या वह उनसे सचमुच मौहब्बत करती है? नहीं, उसकी मौहब्बत का मरकज़ (केंद्र) उसका पति है। जैसे जैसे ताल्लुकात (सम्बन्ध) उसके पति के रिश्तेदारों से हैं वैसे ही उसके ताल्लुकात भी हैं। जिससे उसके पति को मौहब्बत है उससे वह मौहब्बत करती है और जिससे पति नफ़रत करता है, वह भी नफ़रत करती है।

एक के साथे सब साथे, सब साथे सब जाय

आप अपने इष्ट से प्रेम करते हैं और उसकी सूरत को सबमें देखकर प्रेम करते हैं।

खाते हो ज़िन्दा रहने और उसका नाम लेने के लिए, काम करते हो उसको खुश करने के लिए, अपने बाल-बच्चों की देख भाल करते हो उसका हुक़म बजा लाने के लिए, गरज़े (आशय यह है) कि जो कुछ करते हो, उसके ख़याल से, उसको खुश करने के लिए, उसकी नज़दीकी, उसका प्यार, हासिल करने के लिए। और इस तरह आपके ये सब काम आपकी पूजा ही हैं और चलना फिरना आपकी परिक्रमा है। अभी अगरचे (यदि) ऐसा ख़याल मुस्तक़िल (पक्के)

तौर से कायम नहीं हुआ है तो कोशिश करो और मदद लो अपने इष्ट से। यह भी हो जायेगा और तुम खुद महसूस करने लगोगे कि तुम किससे मौहब्बत करते हो। जो दुनिया की बिना गरज़ (स्वार्थ) के मौहब्बत करता है वही सच्चा प्रेमी उस परमात्मा का है और जो आँख बंद किये हुए अपनी धुन में लगा है वह अभी दूर है। वह अपने ही सुधार में लगा हुआ है और अभी साधक है, सिद्ध नहीं हुआ है।

मौहब्बत करना बुरा नहीं बल्कि खास इन्सानियत (मानवता) है। मज़हब आपको पत्थर नहीं बनाता कि पत्थर की तरह ठोस हो जाओ, बल्कि बताता है कि दुनियाँ में सबसे मौहब्बत करो। यहाँ तक कि उससे भी जो तुम्हारी जान का दुश्मन है, लेकिन हरेक में जल्वा (दर्शन) अपने प्रीतम का देखो और यही सीधा और सच्चा रास्ता इस असली प्रेम को हासिल करने का है। क्या तुम नहीं देखते कि हिन्दू सर्प को दूध पिलाते हैं जिसमें ज़हर हलाहल भरा है, जो इन्सानी ज़िन्दगी का शत्रु है। मैं दुआ करता हूँ कि परमात्मा तुमको सच्चा प्रेम दें और सीधे और सच्चे रास्ते पर कायम रखें।

अपने भाइयों की तालीम में निगाह रखो, उनके लिए दुआ करो, उनके लिए कुर्बानी करना सीखो। उनके दुःख में दुखी और सुख में सुखी होना सीखो। अपनी हस्ती को अपने इष्ट का ध्यान करते हुए भुला दो। उनकी भलाई में तुम्हारी भलाई है और वही सच्ची खिदमत इष्टदेव की है।

आपका शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

१६-४-५३

प्यारी बेटी खुश रहो ।

चिठी आयी, मैं आराम से आ गया । कोई परेशानी नहीं हुई ।

प्रेम और विश्वास जिस दिल में है, वह बहुत गहरा है । वह कभी नहीं मरता है । जितना मिलता है उतना ही और चाहता है । खिदमत मौहब्बत पैदा करने के लिए की जाती है और जहाँ प्रेम खुद -ब- खुद मौजूद है वहाँ खिदमत की क्या ज़रूरत है ?

परमात्मा तुमको खुश रखे और अपनी मौहब्बत से मालामाल करे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

मार्च, १९५५

बहन खुश रहो ! (महेश चन्द्र की माताजी)

पत्र तुम्हारा मिला, इत्मीनान हुआ । मेरा इरादा भंडारे में फ़तेहगढ़ जाने का है क्योंकि मेरा जाना ज़रूरी फ़र्ज़ है । भंडारा शायद ३, ४, ५ अप्रैल को होगा, इसलिए अगर परमात्मा को मंज़ूर हुआ तो एक रोज़ पहले कासगंज पहुँचूँगा । उम्मीद करता हूँ कि आप भी मेरे साथ चलेंगी । आपने तहरीर किया (लिखा) है कि आपको ख्यालात परेशान करते हैं । आपको चाहिए कि किसी परेशान ख्याल को पास न आने दें । परमात्मा का प्रेम आप में है और उसने भी आपको कबूल कर लिया है, उसके प्रेम का आनन्द भोगिए और आगे बढ़िये । उससे मिलकर एक हो जाइये । यही ज़िन्दगी का उद्देश्य है ।

मेरी तबियत अब यहाँ बिलकुल नहीं लगती । एक एक मिनिट का इन्तज़ार है कि कब हरी दुकान पर आये और मैं इस झगड़े से आज़ाद होऊँ । दुनियाँ एक गोरखधंधा मालूम होता है और जिस किसी चीज़ से लगाव मालूम होता है उसे भी तबियत छोड़ने की चाहती है । वापिसी को तबियत चाहती है । मुझको उस दुनियाँ में रहना पड़ रहा है, जहाँ मैं एक सेकिंड रहना नहीं चाहता । न मालूम यह हालत कब तक रहे और कब वह मुबारिक दिन आये । मेरी इच्छा शक्ति उतनी ही मज़बूत है जैसे कि कभी थी और मेरे लिए कोई चीज़ मुश्किल नहीं ।

परमात्मा आपको खुश रखें और अपनी मौहब्बत का पात्र बनावें ।

आपका भाई - श्रीकृष्ण

(२६)

सिकन्दराबाद

२१-६-५५

प्यारे पुत्र, खुश रहो ! (महेश चन्द्रके लिए)

तुम्हारे दो खत आये, हाल मालूम हुआ । तुम्हारे पास होने की सुनकर बहुत खुशी हुई । परमात्मा करे तुम बहुत जल्द इस लायक हो जाओ कि अपने असली काम में भी कामयाब हो । सब तरफ़ से गाफ़िल रहो और सिर्फ़ एक तरफ़ ध्यान लगाए रहो और ऐसा ध्यान जिससे एक सेकिण्ड को भी गाफ़िल न हो । यही असली तप है । सब चीज़ों को भोगो मगर धर्मशास्त्र के अनुसार और भोग कर उपरति हासिल कर लो । ज़ाहिर में सबसे मिले रहो और अन्तर में सबसे अलग रहो । दिन-रात परमात्मा के प्रेम के लिए तड़पते रहो । इसका रास्ता यह है कि उसी से इसके लिए प्रार्थना करना और अपनी जीवनी को पवित्र बनाना । जीवनी की पवित्रता और चीज़ों को छोड़ने का परिणाम यह होगा कि तुम्हें प्रेम की दौलत मिलेगी जिसको मिल जाने के बाद फिर कुछ मिलना बाकी नहीं है ।

मैं बराबर कोशिश करता रहता हूँ लेकिन कामयाब न हो सका । न मालूम इस उम्र में कामयाब हो सकूँगा या नहीं । सब उसके रहम पर निर्भर है । मैं उसके दरबार में प्रार्थना करता

हूँ कि तुम अपने मिशन में कामयाब हो और जिस काम को मैं न कर सका, तुम पूरा कर सको । मुझको तुमसे बहुत सी आशाएँ हैं लेकिन पूरा करना या न करना उसके हाथ में है । परमात्मा तुमको अपने प्रेम से मालामाल करे ।

मैंने सत्संग ९-१० जुलाई को रखा है । अगर रमेश के बच्चे की तबियत ठीक हो गयी तो उर्मिला और माता जी भी आयेंगी । तुम्हारी मौसी देहली से आयेंगी । सतीश पास हो गया है । शोभा रानी की शादी की बातचीत चल रही है । परमात्मा तुम सबको खुश रखे । बच्चों को प्यार ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(२७)

सिकन्दराबाद

ता। ९-११-५५

प्रिय महेश बाबू, खुश रहो !

चिट्ठी तुम्हारी आयी, हाल मालूम हुआ । तुम्हारी परेशानी मैं अच्छी तरह समझता हूँ लेकिन कर्म तो काटने से ही कटेंगे । उसकी मर्जी में खुश रहने का प्रयत्न करो । वह हमारा मालिक है । अगर हम अपनी मर्जी चाहें तो इसका आशय यह हुआ कि हम उसे अपना मालिक नहीं मानते और स्वयं मालिक बनाना चाहते हैं । हम बन्दे हैं, वह हमारा मालिक है । जो उसका हुक्म है, वही हमारी खुशी है । यही एन ताबेदारी है । परमात्मा तुमको इसकी तौफ़ीक दे ।

राधे बाबू के पहली तारीख को लड़का उत्पन्न हुआ है । २७ तारीख को गोपाल बाबू के लड़के की सालगिरह है और इन दोनों तकरीबों (उत्सवों) की वजह से २६, २७ को देहली में सत्संग है और कुछ लोगों की दावत है । मैं २० तारीख को देहली चला जाऊँगा। ३०, ३१ दिसम्बर और पहली जनवरी को ग्वालियर में भण्डारा है ।

मैंने दुकान बिलकुल छोड़ दी है और तमाम सामान भी लड़कों को बाँट दिया है और मेरा इरादा सिकन्दराबाद रहने का नहीं है बल्कि घूमने का है ताकि गुरु-महाराज के सन्देश को लोगों तक पहुँचा सकूँ । आगे ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है ।

बच्चों को प्यार, बहू को आशीर्वाद। पत्र का उत्तर शीघ्र देना ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(२८)

सिकन्दराबाद

२-१२-५५

प्यारी बेटी ! खुश रहो !

किसी बात की इच्छा, अपनी मर्जी को उसकी (प्रभु की) फ़ौकियत (प्राथमिकता) देना है और अपने को उसका मालिक ठहराना है । इसलिए अपने हक़ के लिए ज़रूर लड़ना चाहिए, लेकिन अगर कामियाबी नहीं होती तो जिस हाल में परमात्मा रखे उसी में प्रसन्न रहना चाहिये ।

बच्चों को प्यार ।

शुभचिन्तक- श्रीकृष्ण

(२९)

सिकन्दराबाद

२२-१-५७

प्रिय भाई (बंशीधर जी) नमस्ते !

प्रेम पत्र मिला । दुनियाँ में सभी गुनहगार हैं, कोई कम कोई ज़्यादा । परन्तु जो अपनी कमज़ोरियों को जानता है और उनके छोड़ने का यत्न करता है, वह अवश्य कामयाब होता है ।

क्यों है ? जिस चीज़ को नहीं चाहते उसका स्वप्न तो दिखाई पड़ता है परन्तु आपका चाह कर भी दर्शन नहीं मिल पाता है ।

उत्तर

सिकन्दराबाद

१९५७

प्रेमी भाईजी,

कृपा पत्र आपका मिला । आपका ख्याल ठीक है । दिल्ली का वातावरण आपके लिए बहुत खराब है । आदमी जो कार्य करता है उसका मन पर अक्स पड़ जाता है और जन मन बाहर से हटकर सोते समय या संध्या में अपने अन्तर की तरफ़ रागिब होता है, वही शकलें सामने आती हैं । इसलिए अभ्यासी को चाहिए कि दुनियाँ के साथ व्यवहार करते समय सचेत रहे और उन्ही चीज़ों से वास्ता रखे जो ज़रूरी हैं । और बे-फ़ायदा बातों और कामों में अपने को न फँसाये । ऐसा अभ्यास करते रहने से मन संध्या के समय और ख्याल नहीं उठायेगा । दूसरे, मन को समझना चाहिए कि यह दुनियाँ तो थोड़े दिनों की है । सब चीज़ों को छोड़ना है । इनसे दिल नहीं लगाना चाहिए वरना छोड़ते समय बड़ा दुःख होगा । तीसरे, अपने गुरु या परमात्मा के लिए दिल में प्रेम की आग को जलाना चाहिए जिसका तरीका यह है कि विरह की बानी के पद गाये जावें जिससे तड़प पैदा हो । ऐसा करते रहने से कुछ दिनों के बाद तबियत लगने लगेगी ।

मन बाहरी चीज़ों का रसिया (प्रेमी) है शुरु में अन्दर की तरफ़ इसे मोड़ने में इसको दुःख होता है और इससे वह भागता है । लेकिन अभ्यास करते रहने से और बाहर से तबियत हटा देने से अन्दर की तरफ़ ठहरने लगता है । अन्तर में ठहरने से उसे अभ्यास में आनन्द आने लगता है और अभ्यासी तरक्की की तरफ़ जाने लगता है । इसके लिए समय की ज़रूरत है । इसलिए घबराना नहीं चाहिए, सब्र और दृढ़ता से कार्य करते रहना चाहिए । शुरु शुरु में गुरु की पवित्र मूर्ति का ध्यान करना चाहिए । अगर उसमें सच्चा प्रेम और विश्वास है तो मन एकाग्र होकर ठहरने और ऊपर की तरफ़ चलने लगेगा, अभ्यास में आनन्द आने लगेगा । चलते

फिरते यह ख्याल रखना चाहिए कि मेरी जगह गुरु ने ले ली है और मैं वही हूँ जो वह है । यह सहज योग है । इसके अभ्यास के लिए न कोई निश्चित वक्त और न कोई निश्चित जगह की ज़रूरत है । प्रत्येक मनुष्य हर जगह और हर समय कर सकता है ।

(३१)

(पत्र गुरुदेव के नाम)

काशी

३०-३-५७

परम् पिता, चरणों में प्रणाम ।

आपका प्रेम पत्र मिला और हृदय को एक अजीब शान्ति मिली । आपके यहाँ से लौटने के बाद तीन दिन काम किया और फिर उसके बाद मुज़फ़्फ़रपुर चला गया । वहाँ पर एकान्त कहीं नहीं था और न ही समय मिल पाता था । फिर भी मैं एक दिन भी विचलित नहीं हुआ तथा जो कुछ भी थोड़ा बहुत हो सका अभ्यास, मनन और चिन्तन करता रहा । बहुत अच्छा था । परन्तु वहाँ से लौट कर जब काशी आया, मेरे मन ने मुझे फिर डॉवाडोल कर दिया । मुझे चारों तरफ़ अँधेरा दिखाई देता था । हरचन्द्र कोशिश करता था पर मन बंध कर काबू में नहीं आया । आपका चित्र देखकर मुझे डर मालूम देता था । उसके सामने जाने की कोशिश नहीं कर पाता था । मन सर्वदा बुराई करने तथा नीच कर्मों की ओर ले जाता था। पता नहीं ऐसा क्यों हुआ ? मैं चाह कर भी अपने मन को वश में नहीं कर पाता हूँ । कल से शान्ति है । मेरी खोई हुई चीज़ मुझे वापस मिल गयी है । मैं फिर पहली जैसी हालत में हूँ । आज अभ्यास करते समय मेरा मन खूब लगा । अब हमारे अन्दर यह दृढ़ भावना जाग्रत हो गयी है कि भविष्य में मेरा मन मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा । मैं उसका सामना करूँगा । मुझे आप अकेला न छोड़ दें । आपकी पकड़ ढीली पड़ते ही मैं कुमार्ग पर जाने लगता हूँ । मैं तो कभी कभी यही सोच में पड़ जाता था कि परम् पिता मुझसे रुष्ट तो नहीं हो गए हैं जिससे हमारी यह हालत हो रही है।

आपका आज्ञाकारी

X X X

(उत्तर)

प्रिय भाई जी ,

प्रेम पत्र मिला । मन दुनियाँ का रसिया है और दुनियाँ की चीज़ों में आनन्द पाता है । उसका कुदरती स्वभाव दुनियाँ के विषयों की तरफ़ है और उसी तरफ़ मनुष्य को ले जाता है । जब आत्मा अपने ज़ाती (निजी) आनन्द को भूल कर अज्ञानवश विषयों में आनन्द समझने लगती है और विषयों से मौहब्बत करने लगती है तो अपने आपको और अपने प्रीतम परमात्मा को भूल जाती है और आवागमन के चक्कर में फंस जाती है । एक-साथ मन दुनियाँ के विषयों को नहीं छोड़ता और उस तरफ़ ले ही जाता है लेकिन अगर आत्मा उसमें आनन्द न ले और अपने परमात्मा की तरफ़ फिर जाय, या उसको स्वयं का अनुभव हो जाय, तो फिर दुनियाँ के विषयों में उसको आनन्द नहीं आता और उससे तृप्ति हो जाती है ।

आहिस्ता -आहिस्ता मन भी उन विषयों को छोड़ देता है ।

परमात्मा के दो रूप हैं । एक, जो घट- घट में वासी है और दूसरा रूप उसका स्थूल है जो गुरु है । शुरू-शुरू में स्थूल रूप से ताल्लुक़ जोड़ा जाता है, फिर आहिस्ता-आहिस्ता कारण रूप परमात्मा से ताल्लुक़ हो जाता है और इस तरह आसानी से अभ्यासी बहुत जल्दी परमात्मा के प्रेम का पात्र बन जाता है । परमात्मा के प्रेम के आते ही बुराइयाँ दूर होने लगती हैं और आख़ीर में सिवाय उसके प्रेम के कुछ नहीं रहता । यही मोक्ष और मुक्ति है ।

गुरु उसको कहते हैं जिससे बेहतर, खुशतर, और प्यारी चीज़ दुनियाँ में और कोई न हो और जिसके लिए दुनियाँ की हर चीज़ को छोड़ा जा सकता हो । और इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता दुनियाँ से तृप्ति और परमात्मा से प्रेम पैदा हो जाता है ।

जो काम तुम करते हो उससे तुम्हें घृणा है । बड़ी अच्छी हालत है। परमात्मा से गुरुके ज़रिये प्रेम बढ़ाते जाओ। सब मामलात आहिस्ता आहिस्ता ठीक हो जायेंगे । घबराओ नहीं, गुरुजन हाथ पकड़ कर छोड़ा नहीं करते । इस ख्याल को दूर कर दो। अभ्यास बराबर करते रहो। कोशिश करने पर भी और परमात्मा का ध्यान करते रहने पर भी अगर कोई बुरा काम हो

जाता है तो समझ लो कि यह पिछले कर्मों का फल है। इससे घबराओ नहीं । पछताओ और आइन्दा के लिए अहद(प्रण), करो कि फिर ऐसा नहीं होगा ।

बच्चे जब चलना सीखते हैं तो शुरू में गिरा करते हैं । गिरना बुरा नहीं है मगर गिरकर न उठना बुरा है। गुरु महाराज तुम्हारा कल्याण करें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(३२)

गाज़ियाबाद

२९-५-५७

प्रिय भाईजी , दुआ ।

आपका प्रेम पत्र मिला । मैं ६ ता० से बाहर गया था । अब कल सिकन्दराबाद पहुँचूँगा, ११ मई तक यहीं रहूँगा । फिर ग्वालियर की तरफ़ चला जाऊँगा । जून के महीने यहीं रहूँगा । अगर आपको सहूलियत हो तो जून के महीने में सिकन्दराबाद आ सकते हैं ।

असली अभ्यास वही है कि जो ग्रंथि मन की वजह से पड़ गयी है, खुल जाय और आत्मा आज़ाद हो जाय। वगैर मन के काबू किये यह ग्रंथि नहीं छूटती । दिल को काबू में करना बहुत मुश्किल है और सब यत्न इसी के लिए किये जाते हैं । इसको प्यार की रस्सी से गुरु के साथ बाँध देते हैं। शुरू-शुरू में यह बहुत उछल कूद करता है लेकिन जितना प्रेम का रिश्ता मज़बूत होता जाता है उतनी ही उछल कूद कम होती जाती है और एक दिन पूर्ण रूप से गुरु के आधीन हो जाता है और तभी आत्मा का प्रकाश पूर्ण रूप से होता है। वगैर मन के पूरे तौर पर शांत हुए आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता। इसके लिए गुरु की मौहब्बत बहुत मददगार है। जब जब मौका मिले, गुरु का ज़ाहिरी सत्संग करना चाहिए और जब दूरी हो उस समय सुरत शब्द का अभ्यास करते रहियो। जो साहब मेरी सौहबत के ख्वाहिशमंद हैं, वे जून में तशरीफ़ ला सकते हैं। जो खिदमत में कर सकता हूँ हाज़िर हूँ। जब तक सौहबत का मौका न हो, अभ्यास करते रहियो। उम्मीद है परमात्मा की कृपा से आपके लड़के की तबियत ठीक हो

गयी होगी और वह इम्तहान में बैठ गया होगा। अपने हाल से मुतबातिर (बराबर) खबर देते रहा करो ।

सत्संगी भाइयों को नमस्ते। मैं अच्छी तरह से हूँ परमात्मा तुमको खुश रखे।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(33)

सिकन्दराबाद

७-९-५७

प्रियजी नमस्ते ।

आपका कृपा पत्र बहुत मुद्दत (समय) के बाद मिला । मैं अक्सर जल्दी दीक्षा नहीं दिया करता, जब तक यह न देख लूँ कि वह शख्स (व्यक्ति) आगे भी काम करेगा या नहीं । क्योंकि दीक्षा देने का बाद जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ जाती है। मैंने आपके मज़बूर करने पर दीक्षा दी और आप आज कई महीने के बाद खत लिख रहे हैं, ये बड़ी भूल है। दीक्षा लेने के बाद आपका यह फ़र्ज़ (कर्तव्य) है कि जो अभ्यास आपको बतलाया गया है उसे बराबर करते रहें । अपने हाल से खबर देते रहें और जब मौका मिले, मिलने की कोशिश करें । बाकी जिम्मेदारी दीक्षा देने वाले की है, वह खुद ठीक कर लेगा ।

अधम अधम कहते रहने से उद्धार नहीं होगा। जहाँ आप पुराने कर्म भोगने के लिए मज़बूर हैं, वहाँ साथ ही साथ अपनी आइन्दा (भविष्य में) तक्रदीर बनाने के लिए भी आज़ाद हैं, इसलिए अपने कर्म से आप अधम हैं तो आत्मा के लिहाज़ से आप शक्तिशाली हैं और जो चाहें कर सकते हैं, सिर्फ़ हिम्मत बांधने और कर्म करने की ज़रूरत है और इसी के लिए गुरु किया जाता है । इन कमज़ोर खयालों को छोड़ो । काम करना शुरू करो और भण्डारे पर मिलने की कोशिश करो ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

ता० १७ अक्टूबर १९५७

..... साहब, नमस्ते ।

कृपा पत्र आया, हाल मालूम हुआ । मेरी हालत को चाहे दूसरा न जान सके, लेकिन आप एक प्रोफेसर होते हुए खूब समझ सकते हैं । एक विद्यार्थी है जो ५ साल से पढ़ने का इरादा कर रहा है और पढ़ाई शुरू नहीं करता और इस पर चाहता है कि मास्टर घर पर ही आकर पढ़ाना शुरू कर दें । मज़मून (विषय) ऐसा सख्त है कि जिसके अन्दर जन्म गुज़र सकते हैं । मास्टर सब कुछ चाहता है लेकिन बेबस है और उसको अपनी बेबसी पर झुँझलाहट आती है। आपने अपना यह जन्म बनाने के लिए इतना समय और रुपया खर्च किया और अब भी बराबर कर रहे हैं और जानते हो कि वह विद्या जो हमेशा हमेशा के लिए आदमी को शान्ति और सुख देती है कितना वक्त चाहती है ? क्या मास्टर की झुँझलाना नाराज़गी है या मौहब्बत है ?

मुझको और किसी चीज़ की ख्वाहिश नहीं है और उस पर भी अपना सब समय आपकी खिदमत के लिए देने को तैयार हूँ, इस आशा में कि शायद आपके ज़रिये आपका और दूसरों का फ़ायदा हो जाय । गुरुदेव फ़रमाया करते थे कि आलिमों (विद्वानों) और रईसों (धनाढ्यों) के हिस्सों में यह दौलत नहीं है और मेरा भी यही तज़ुर्बा होता जाता है। आपकी कई रोज़ की छुट्टी थी, उस पर आप भण्डारा खत्म होने से पहले ही चले गए। इसकी वज़ह शर्मिंदगी नहीं बल्कि मन का धोखा है जो आपको इससे बराबर हटा रहा है। ऐसा मालूम होता है कि आपका हिस्सा मेरे पास नहीं है। मेरा वक्त आखिर है और ५-६ साल गुज़रने पर भी आपका अक्वल (प्रारम्भ) है ; अगर आपको सचमुच मुझ पर विश्वास है और ब्रह्मविद्या सीखने का शौक है तो मैं हर वक्त हाज़िर हूँ। मैं २-४ रोज़ में गाज़ियाबाद चला जाऊँगा और शायद २ महीने वहीं रहूँ। आगे ईश्वर बेहतर जानता है ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

२०-१०-५७

प्यारी बेटी, खुश रहो ।

चिट्ठी तुम्हारी आई, हाल मालूम हुआ ।

शब्द सुनने, प्रकाश देखने, सब की गरज़ परमात्मा का प्रेम है। अगर गुरु सही है तो उसका प्रेम आखीर में परमात्मा तक पहुँचा देता है । तुम्हारी हालत अच्छी है । अगर शब्द सुनाई नहीं देता तो कोई हर्ज़ नहीं है । सब सुनाई देने लगेगा। जिसने हाथ पकड़ा है सब ठीक कर देगा ।

यह रास्ता प्रेम का है। प्रेम खुद-ब-खुद ही आगे का रास्ता साफ़ कर देगा। तुम्हें प्रेम है और सच्चा प्रेम है। तुम्हारा रास्ता खोटा नहीं हो सकता। परमात्मा पर भरोसा रखो और रास्ते पर बढ़ी चलो। बच्चों को प्यारा।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

२०-१०-५७

.....जी, नमस्ते ।

चिट्ठी आई, हाल मालूम हुआ । यहाँ से जाने के बाद तबियत का लगना कम हो जाना कुदरती (प्राकृतिक) बात है । वह दूसरे की चीज़ थी जिसका आनन्द आप महसूस (अनुभव) कर रहे थे। अब आपको खुद अपना केंद्र बनाना है जो घट के अन्दर है और जो कायम (स्थिर) रहने वाला है। लेकिन इसके लिए वैराग्य और अभ्यास की ज़रूरत है। अभ्यास आप करते रहिये, वैराग्य गुरु कृपा से खुद -ब -खुद हो जायेगा। लेकिन इसके लिए समय की ज़रूरत है।

गुरु का ध्यान करते रहिये और जब जब शब्द सुनाई दे या प्रकाश दिखाई दे उसको देखते रहिये और सुनते रहिये। अभ्यास बाकायदा करते रहिये। उसमें नागा नहीं होनी चाहिए और अपने हाल से इत्तला (सूचना) देते रहिये। गुरु महाराज ने चाहा, फ़ायदा होगा ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(३७)

गाज़ियाबाद

१४-२-५८

प्रिय जी, नमस्ते ।

पत्र मिला, समाचार जानो मैंने किशनचन्द्र जी को टूण्डले लिखा था कि वे ८ व ९ मार्च ५८ का सत्संग रख लें। अगर उन्होंने सत्संग रखा तो मैं ८ मार्च को वहाँ पहुँच जाऊँगा । और अगर किसी वजह से वे सत्संग नहीं रखते तो फिर आप होली के दिनों में सिकन्दराबाद तशरीफ ला सकते हैं । मैं सिकन्दराबाद में मिलूँगा । मैं मथुरा नहीं जा रहा हूँ आप मथुरा अवश्य जाइये ।

यह जानकर खुशी हुई कि अभ्यास में आपकी तबियत लगने लगी है। संध्या में तबियत का लगना इस बात पर मौकूफ़ (निर्भर) है कि मन दुनिया से कितना उपराम है और परमात्मा से कितनी लगन है । जितनी लगन ज़्यादा है और वैराग्य है उतना ही परमार्थ बनेगा। सत्संग में शामिल होने पर भी मन का न लगना इस बात का सबूत है कि अभी मन दुनियाँ की ख्वाहिशात (इच्छायें) रखता है, परमात्मा से प्रेम नहीं। जितना परमात्मा से प्रेम बढ़ेगा आदमी दुनियाँ से उपराम होता जावेगा। परमात्मा करे आपकी लगन रोज़ बरोज़ तरक्की करे। ऐसी हालत में गैर -सत्संगी से अलहदा रहें और एकांत सेवन करें। अपने हाल से बराबर सूचित करते रहो ।

अतुल स्नेह सहित ।

दुआगो - श्रीकृष्ण लाल

ग्वालियर

२०-४-५८

माई डियर जी ,

चिठी आई । गुरु तुम्हारे अन्दर है, ख्वाहिशात तुम्हारे अन्दर हैं, जब ख्वाहिशात (इच्छायें) सामने आ जाती हैं, गुरु हट जाता है । जब ख्वाहिशात हट जाती हैं, गुरु सामने आ जाता है। जैसे चाँद (चन्द्रमा) चमक रहा है लेकिन आँख पर ऊँगली रख लेने से चाँद दिखाई नहीं देता, ऊँगली के हट जाने से चाँद दिखाई देने लगता है । जब ख्वाहिशात दिल में पैदा हो जाती हैं, गुरु का प्रेम जाता रहता है । जब ख्वाहिशात जाती रहती हैं, गुरु का प्रेम आ जाता है । इसको समझो और गौर करो तुम असलियत को पहचान जाओगे । गुरु की दिली-ख्वाहिश (हार्दिक इच्छा) होती है कि उसके भाई उसकी ज़िन्दगी में ही आत्मा का अनुभव करके हमेशा हमेशा की खुशी हासिल कर लें और यही उसकी असली ख्वाहिश होती है । मगर वह मज़बूर है। जब तक ख्वाहिशात का खात्मा (समाप्ति) न हो जाये आत्मा का अनुभव नहीं होता और हमेशा की असली खुशी नहीं मिलती । इसलिए हर समय कोशिश करते रहो और दिल को ख्वाहिशात से खाली करते रहो, यही असली रियाज़त और अभ्यास है। अक्सर ऐसा भी देखा जाता है कि गुरु अपने आत्मिक बल से थोड़ी देर के लिए अभ्यासी की आत्मा के ऊपर से मन और बुद्धि के परदे हटा देता है और आत्मा का साक्षात्कार करा देता है। यह तभी मुमकिन (सम्भव) है कि मुरीद फ़िदायी (शिष्य गुरु पर न्योछावर हो) और गुरु सर्वशक्तिमान हो ।

मौजूदा हालत में दोनों में कमी है। अगर परमात्मा किसी समय मुझको यह काबिलियत (योग्यता) देगा तो ज़रूर मैं इस तरीके का आपके साथ और दूसरे भाइयों के साथ बरताव करूँगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमात्मा अपने चरणों का प्रेम दे जो सबकी असल है ।

मैं २४ ता० को ९ बजे करीब इलाहबाद पहुँचूँगा और अगर मुमकिन (सम्भव) हुआ तो दो तीन घंटे ठहरूँगा। मुझको २-५-५८ की शाम को अमृतसर पहुँचना है क्योंकि सरदार जी की लड़की की शादी है और इन सात दिनों में मुझे बनारस, गोरखपुर जाना है । मुझे अफ़सोस है

कि इस मौके पर इलाहबाद न ठहर सकूँगा । अगर परमात्मा को मन्ज़ूर हुआ तो किसी और समय खिदमत को हाज़िर हो जाऊँगा। सब प्रेमी भाइयों को दुआ । परमात्मा सबको खुश रखें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(३९)

गाज़ियाबाद

१६-५-५९

प्रिय श्री राम सागर लाल जी,

आपस में जैसा निश्चय कर लिया है सत्संग कर लीजिये । इसमें सबका फ़ायदा है। आपकी हालत अच्छी है । परमात्मा आपको और तरक्की देगा । ये दिमागी शब्द हैं । जब तवज्जह (सुरत) का रुख (प्रवाह) बाहर की तरफ़ होता है, सुनाई नहीं देते । जब तवज्जह का रुख अन्दर को हो जाता है सुनाई देने लगते हैं । Concentration (एकाग्रता) होने की वजह से आनन्द आने लगता है । अगर सर में दर्द होने लगे या जी घबराने लगे तो ध्यान शुरू कर देना चाहिए और शब्द सुनना बंद कर देना चाहिए । आगे चलकर अभ्यास बढ़ने पर जब तवज्जह का रुख और ज़्यादे अन्दर की तरफ़ जायेगा तो सूक्ष्म रूहानी (आत्मिक) शब्द सुनाई देने लगेंगे जिनमें तेज़ी कम और आनन्द ज़्यादा आवेगा और सर चकरायेगा भी नहीं । लेकिन उसके लिए और अभ्यास की ज़रूरत है । परमात्मा आपको और तरक्की दे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

गाज़ियाबाद

२५-७-१९५८

प्रिय भाई नमस्ते !

शुरू में आर्थिक स्थिति खराब होने से तबियत परेशान होती है लेकिन आगे चलकर इसमें आनन्द आता है। परमात्मा जिसको प्यार करता है उसको भूखा रखता है ताकि वो उससे गाफ़िल (विस्मृत) न हो जाय। अगर वो एक समय देना चाहता है तो हम दो समय क्यों माँगे ? उससे कुछ मत माँगो। माँगो तो सिर्फ़ उसका प्यार माँगो। अगर दोनों समय नहीं मिलता, तो एक समय खाओ और जिस हाल में रखे उसमें खुश रहो और उसका शुक्र अदा (धन्यवाद) करो। इत्मीनान रखो, यह हालत ज़्यादा दिन नहीं रहेगी। कोशिश करते रहो। भाई, नौकर हो ही जाओगे। सत्संग बराबर चालू रखो। सब चीज़ें बिछुड़ जायें लेकिन सत्संग खराब न हो। तुम्हारे लिए तो यह और भी ज़्यादा ज़रूरी है क्योंकि तुम वहाँ की देख भाल करने वाले हो। बहू को नीम की पत्तियां साफ़ करके घोंट छान कर काली मिर्च के साथ पीस कर खिलाओ। परमात्मा चाहेगा ठीक हो जायेगी।

बच्चों को प्यार।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

गाज़ियाबाद

३० सितम्बर १९५८

प्रिय बाबू जी, दुआ।

परमात्मा तुमको खुश रखे और राहेरास्त (सदमार्ग) पर कायम रखे। आपका खत मिला। संतमत का आधार सिर्फ़ सतगुरु पर मुनहसिर (निर्भर) है। अगर उसको समझने में

गलती हो गयी तो तमाम इमारत नेस्तनाबूद हो (ढह) जायेगी और खातिरखाह (जैसा आप चाहते हैं) फ़ायदा नहीं होगा ।

१) संतमत में लक्ष्य उस आदि शक्ति का बांधते हैं जो सबका आधार है । उस तक पहुँचने का ज़रिया सतगुरु है ।

२) सतगुरु वह है जो दयाल देश से जीवों का उद्धार करने के लिए पैदा हुआ हो या वह जिसने ऐसे गुरु की सौहबत में रहकर आत्मा का साक्षात्कार कर लिया हो । उसको मुराद, गुरुमुख, आचार्य वगैरह भी कहते हैं। हमारे सिलसिले में तहरीरी (लिखित) इज़ाज़त देते हैं ।

३) एक वक़्त में एक सोसाइटी में सिर्फ़ एक ही गुरु होता है ।

४) जगह-ब-जगह तालीम (शिक्षा) देने के लिए मास्टर, मॉनिटर मुक्कर्रिर (नियुक्त) कर देते हैं जो तालीम देते हैं । बाज़ मौकों पर उनसे उपदेश भी दिलवा देते हैं लेकिन इससे वह गुरु नहीं हो जाते। गुरु सिर्फ़ एक ही होता है और चाहे किसी के ज़रिये उपदेश दिलवाया जावे लेकिन वह मुरीद एक गुरु के माने जाते हैं ।

५) अपनी ज़िन्दगी में एक या दो और बाज़ मौकों पर इससे भी ज़्यादा मॉनीटरों को उपदेश की इज़ाज़त दे देते हैं । बाज़ों के साथ इसमें शर्त लगा देते हैं और बाज़ों के साथ कोई शर्त नहीं लगाते

६) लेकिन हर हालत में मौजूदा गुरु की ज़िन्दगी में दूसरा कोई उपदेश नहीं दे सकता । उपदेश की इज़ाज़त मौजूदा गुरु के विसाल (शरीरान्त) के बाद अमल में लाई जाती है ।

७) खास हालतों में इज़ाज़त मंसूख (रद्द) कर दी जाती है और बाज़ हालतों में वह खुद जाती रहती है ।

८) हमारे सिलसिले में गुरु की शक़ल का ध्यान करने की बहुत कम इज़ाज़त देते हैं ।

९) सिर्फ़ गुरु की ही शक़ल का ध्यान करना चाहिए। मॉनीटर या मास्टर जिसकी मार्फ़त उपदेश लिया है उसकी शक़ल का ध्यान नहीं करना चाहिए ।

१०) तालीम गुरु से ही लेनी चाहिए। लेकिन वख्त जरूरत मास्टर या मॉनिटर यानी सत्संगी या साथ से मदद ली जा सकती है लेकिन इजाज़त लेकर। लेकिन किसी सूरत में भी गुरु को ओवरलुक (उपेक्षा) नहीं करना चाहिए। उससे सिलसिला (सम्बन्ध) बराबर कायम (स्थापित) रखना चाहिए।

११) गुरु से खौफ़ (भय) रखना अच्छा है लेकिन इसकी वजह से अपनी हालत को न कहना ग़लती है।

भंडारे में बहुत से सत्संगी नहीं आते। आचार्य उनके ख्यालात को खूब जानता है कि कौन किस वजह से नहीं आता है, वह इतना ग़ाफ़िल (भूला हुआ) नहीं है। अपने ऐतकादात (विश्वास) को सही करो।

ख्याल दो का नहीं किया जाता, सिर्फ़ एक का ख्याल करना चाहिए। किसका ख्याल करना चाहिए यह मैं पहले लिख चुका हूँ।

मैं अच्छी तरह हूँ परमात्मा आपको खुश रखे।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(४२)

सिकन्दराबाद

९-११-५८

प्यारी बेटी, खुश रहो।

चिढ़ी तुम्हारी मिली। दुनियाँ एक घना जंगल है। यहाँ हर क़दम पर खूँख़वार (खून पीने वाले) जानवर घूम रहे हैं यानी दुनियाँ को लुभाने वाली चीज़ें हमको अपनी तरफ़ खेंच रही हैं। यही रास्ते का भूल जाना है। अगर गुरु या ईश्वर साथ है और उसकी याद है, और उसके कहने पर चल रहे हैं तो आसानी से रास्ता कट जाता है और फिर अपने असली वतन को वापस चले

जाते हैं वर्ना जन्म जन्म इसी तरह भ्रमते रहते हैं। दुनियाँ की चीज़ों की ख्वाहिश मत करो । यह सब फँसाने वाली हैं चाहे वह लड़के की ख्वाहिश ही क्यों न हो । दुनियाँ में वह भाग्यशाली है जिसके औलाद (संतान) नहीं है। दुनियाँ से उतना ही वास्ता रखो जितना ज़रूरी है, बाकी वक़्त परमात्मा की याद में लगाओ। ईश्वर तुम्हें खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(४३)

सिकन्दराबाद

२१-११-५८

प्रियबाबू जी, नमस्ते ।

आपका पत्र मिला। मैं आपके हर ख़त का जबाब देता रहता हूँ, मुमकिन है वह सब आपको मिल गए होंगे। यह जानकर खुशी हुई कि आपका अभ्यास ठीक चल रहा है और आपको फ़ायदा मालूम हो रहा है। आगे चलकर ऐसी भी हालत होगी कि कभी तबियत लगेगी कभी नहीं । मन समुन्द्र के समान है, इसमें ज्वार भाटा आता ही रहता है, कभी आगे बढ़ता है तो कभी पीछे। जब मन को बाहर से हटा कर किसी चीज़ पर ठहराया जाता है तो आनन्द मालूम होता है। लेकिन जब चढ़ाई ऊपर को होने लगती है तो देवासुर संग्राम शुरू हो जाता है । ऐसी हालत में अभ्यासी को घबराना नहीं चाहिए। तबियत लगने व न लगने का ख़्याल छोड़कर अभ्यास बाकायदा (नियमानुसार) करते रहना चाहिए और जब -जब मौका मिले गुरु की सौहबत से फ़ैज़याब (लाभान्वित) होना चाहिए । जब मन रज से हट कर सत पर आ जायेगा उसका ठहराव हो जायेगा और हालत मुस्तक़िल (स्थिर) हो जाएगी। इस हालत के आने में समय लगता है। बहुत से अभ्यासी इस भेद को न जानकर घबरा जाते हैं और अभ्यास छोड़ बैठते हैं। ऐसी हालत में प्रार्थना से बहुत फ़ायदा होता है ।

परमात्मा करे तुम सच्चे रास्ते पर कायम रहो। यह रास्ता शुरू में दुःखदायक है पर बाद में बड़ी शांति देता है ।

अपना होम्योपैथिक इलाज जारी रखो और परमात्मा पर भरोसा रखो ।

राम सन्देश आपके पास पहुँचता रहेगा । चन्दा जब हो भेज देना । मैं अच्छी तरह हूँ ।
परमात्मा तुमको खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(४४)

सिकन्दराबाद

२१-११-५८

प्रिय बाबू बंशीधर जी, नमस्ते ।

आपकी चिट्ठी मिली। मैं अच्छी तरह हूँ। कल देहली जा रहा हूँ वहाँ से कहाँ जाऊँ, यह निश्चय नहीं है। जब तक अच्छा मकान न मिले , उस मकान को न छोड़ें । कोशिश करो कोई साथी मिल जाय। सत्संग के लिए कोशिश करने का मतलब यह नहीं है कि तुम सब के पास मारे -मारे फिरो। इसमें अपनी और सत्संग दोनों की बेइज़्जती है । सत्संगियों से मौहब्बत करो । उनकी जहाँ तक हो सके मदद करो। जो आवे उसके साथ मेहनत करो, यानी अभ्यास करो, कराओ । अपने आपको नेकी का नमूना बनाकर पेश करो ताकि लोगों पर तुम्हारी रहनी- सहनी का असर पड़े। यही असली प्रोपेगंडा (प्रचार) है। परमात्मा तुम्हें दीन व दुनियाँ में तरक्की दे। सब भाइयों को दुआ । हैड मास्टर साहब जनाब मातादीन से नमस्ते कह दें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

६-१२-५८

प्रिय भाई श्री बंसीधर जी, नमस्ते

परमात्मा तुमको खुश रखें और सीधे रास्ते पर कायम रखें। श्री धनुषधारी पाण्डेय, श्री रामदेव मिश्रा और श्री राम सागर लाल आये। आपका खत भी मिला। समाचार से आगाही (जानकारी) हुई। तीन चार रोज़ साथ रहे। हमारा धर्म यह है कि गुरुदेव के बतलाये हुए रास्ते पर चलें, जो कभी कभी आपके सामने आता रहता है, इसी में खैरियत है और इसी रास्ते पर चलकर परमार्थ की कमाई बन सकती है। परमात्मा आपको तौफ़ीक़ दें कि इस रास्ते पर चल सकें। सब भाई मिलकर संगठन कायम रखें। एक दूसरे की सहायता करें। -- यही असली सत्संग है। आपस में छोटाई बड़ाई का ख्याल न करो। जिसको तालीम की इज़ाज़त दी जाती है उसको खिदमत सुपुर्द की जाती है न कि इज़ज़त जो इस खिदमत को ठीक तौर पर अंजाम कर पाते हैं, सहज ही में गुरु कृपा और परमात्मा की कृपा हासिल कर लेते हैं और उनका परमार्थ बन जाता है।

मैं अच्छी तरह हूँ और दुआ करता हूँ कि तुम सब भाई खुश रहो और सीधे रास्ते पर कायम रहो ताकि अपने रूहानी (आध्यात्मिक) वाल्देन (माता पिता) का नाम रोशन करो। हम सबों को अपने कर्मों का भोग भोगना पड़ता है। जो उन में बह जाते हैं वो आवागमन के चक्कर में फँस जाते हैं। जो दुनियाँ में रहते हुए भी और सब काम करते हुए अपनी ख्वाहिशात पूरी करते हुए, अपनी आत्मा को परमात्मा के चरणों में लगाए रहते हैं, यानी परमात्मा का प्रेम रखते हैं, और दुनियाँ के सुख-दुःख को नाशवान समझ कर उसमें नहीं फंसते, अपने पिछले संस्कारों को आसानी से भोग लेते हैं और आगे के भी संस्कार नहीं बनते और मोक्ष के अधिकारी बन जाते हैं। मुझको यह पढ़कर खुशी हुई कि दुनियाँ की मुसीबतों का मुकाबला करते हुए भी आपका मन उसकी याद से गाफ़िल (भूलना) न हुआ। परमात्मा करे तुम्हारी यह हालत पुख्ता हो जाये। सब भाइयों को सलाम व दुआ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

१५-१२-५८

अजीजम (चिरंजीव) दुआ।

परमात्मा तुमको खुश रखे और आपका दृढ़ विश्वास बनाये रखें,

(१) मैं जरूर दुआ करूँगा कि आपकी तबियत संध्या में लगने लगे और उम्मीद रखता हूँ कि क़बूल (स्वीकार) होगी और आपकी रुकावट दूर हो जाएगी।

(२) दिल पर क़ाबू पाना बहुत मुश्किल काम है। इससे दुनियाँ की मौजूदगी (अस्तित्व) कायम है। इसके ग़ायब होते ही दुनियाँ ग़ायब हो जाती है। **दुनियाँ की रचना ब्रह्मा ने की जो परमात्मा के मन का दूसरा नाम है।** और तुम्हारी दुनियाँ की रचना तुम्हारे मन ने की जो ब्रह्म के खास (गुण) रखता है। इस को क़ाबू में लाना दुनियाँ का सबसे मुश्किल काम है। यही देवासुर संग्राम है। अब तुम मन के स्थान पर हो। शुरू में दुनियाँ से मन हटाकर चित्त को एकाग्र किया जो शुरू का काम था। अब दूसरा शुरू है यानी निचले तबक़ात (घाट) से उठा कर आख़ीर धुर तक पहुँचना है। यह काम बहुत मुश्किल है। लेकिन घबराना नहीं चाहिए। इसके बाद कुछ करना धरना नहीं रह जाता। इसके बाद सच्चा ज्ञान यानी अनुभव पैदा होने लगता है और आदमी मोक्ष का अधिकारी हो जाता है। यह अभ्यास वैराग्य और गुरु कृपा से यानी सत्संग से क़ाबू में आ जाता है। इस जगह गुरु की मूर्ति का ध्यान और उसका सत्संग काम देता है। एकांत सेवन और हक़-हलाल (ईमानदारी) की कमाई इसका परहेज़ है। यह हालत पहले से बेहतर है लेकिन मुश्किल। अब शैतान से मुक़ाबला शुरू हुआ है। **इस रास्ते में खुश-ऐतक़ाद (विश्वासी) और मज़बूत इरादे वाले ही कामयाब होते हैं। कम मेहनत और मठुरों के लिए यह रास्ता नहीं है।** कोशिश किये जाओ। अगरचे बेबस हो लेकिन हिम्मत को काम में लाओ। वह देख रहा है, मुन्तज़िर (बाट जोहता) है तुम्हारी मौहब्बत का। तुम्हारे एक क़दम बढ़ाने से वह सौ क़दम तुम्हारी तरफ़ आएगा जिसकी शहादत (साक्षी) कुरान शरीफ़ में मौजूद है। लेकिन मौहब्बत उसकी पैदा करो जो तुमको पैदायशी है लेकिन छिपी हुई है। दुनियाँ की

वासनाओं ने अपना मोटा पर्दा उस पर डाल दिया है । जिस तरह हो सके इस पर्दे को हटाओ । दुनियाँ की मौहब्बत कम करो। इसके खत्म होते ही परमात्मा का प्रेम जाग उठेगा । आत्मा में परमात्मा का प्रेम जागने पर परमात्मा उसको अपनी आनन्दमयी गोद में चिपटा लेगा और दोनों मिलकर एक हो जायेंगे। आत्मा की हस्ती परमात्मा में लय हो जाएगी। यह सब मुनासिबत (आंतरिक सम्बन्ध) की हद है । इसके बाद ब्रह्मा (मोक्ष) और असली ज़िन्दगी है । जिसको चाहे यह ज़िन्दगी बख्शे, वह मालिके-कुल (सर्वाधीश) है ।

मैं अच्छी तरह हूँ परमात्मा आप सबको खुश रखें ।

खैरअन्देश (शुभचिन्तक)- श्रीकृष्ण

(४८)

गाज़ियाबाद

२९-१२-५८

प्रिय भाई सच्चिदानन्द जी, नमस्ते ।

आपका १ नवम्बर का पत्र मिला । जो आपने जनाब किबला (पूज्य) लाला जी साहब (परमसन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज) के दर्शन किये और करते रहते हैं, यह बहुत अच्छी बात है। लाला जी साहब बराबर लोगों को दर्शन देते रहते हैं, जिससे उनको बड़ा फ़ायदा पहुँचता रहता है ।

संध्या में अपना ख़याल भूल जाना और किसी चीज़ की सुधि न रहना अच्छा है, लेकिन यहाँ पर रुकावट नहीं होनी चाहिए यानी अगर होश के साथ बेहोशी हो, वह हालत इससे अच्छी है अभ्यास करते रहिये, वह हालत भी खुद आ जाएगी कि होश के साथ बेहोशी रहे । अभ्यास में उतार चढ़ाव आता ही रहता है। सम अवस्था बहुत दिन बाद पैदा होती है । इसलिए परेशान नहीं होना चाहिए। फ़िलहाल (अभी) आने की ज़रूरत नहीं है। मैं इरादा करता हूँ कि २४ जनवरी को उस तरफ़ आऊँ। दूसरी जनवरी से सात तक इलाहाबाद ठहरूँगा और यदि मौका मिला तो

एक दो रोज़ के लिए बनारस आऊँगा। आइन्दा जो ईश्वर को मन्ज़ूर है। उस वक़्त मिलने की कोशिश करना ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(४९)

गाज़ियाबाद

३-१-१९५९

प्रिय.....नमस्ते ।

आपका कार्ड मिला । इससे पहले एक ख़त आया था जिसका जबाब दे दिया था । पहुँचा होगा । आपके पाँच रूपये मिले, भण्डारे में जमा कर दिए हैं ।

हमारे सिलसिले में शब्द का अभ्यास कराया जाता है लेकिन जिन सत्संगियों को शुरू में जब तक शब्द सुनाई नहीं देता, उन्हें गुरु मूर्ति का ध्यान करने को बता देते हैं । शब्द जारी होने पर शब्द सुनने का अभ्यास किया जाता है । जिन साहब को गुरु का ध्यान करने को बतलाया गया है उनको गुरु का ध्यान करना चाहिए। मॉनीटर, जिनके साथ वह सत्संग कर रहे हैं , या जिनसे उपदेश दिलाया गया है, उनका ध्यान नहीं करना चाहिए । जो भाई सत्संग करने के लिए मुक़र्रिर किये गए हैं या जिन भाई से उपदेश दिलाया गया है, बाज़े लोग ग़लती से उनका ध्यान करने लगते हैं। यह ग़लत है ।

आपको अगर शब्द सुनाई देता है या प्रकाश दिखाई देता है तो उसका ध्यान करना चाहिए। अगर ऐसा नहीं है तो शुरू में गुरु का ध्यान कर सकते हैं ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(५०)

गाज़ियाबाद

10-1-59

प्रियनमस्ते

आपका १५ दिसम्बर का खत मिला। अपने कसूरों के लिए रोना और गिड़गिड़ाना बहुत अच्छा है, इससे शांति तो मिलती है लेकिन माफ़ी नहीं मिलती। माफ़ी उसी हालत में हो सकती है जब आइन्दा (भविष्य) में वह काम न किया जाया लिहाज़ा जो चीज़ छोड़ो, पक्के इरादे के साथ छोड़ो और जान की बाज़ी लगा दो, तभी आदतें छूटेंगी। अपनी आदतों को बदलना बड़े शूरवीरों का काम है और दुनियाँ में यह बड़ा मुश्किल काम है। लेकिन इसमें भी लोग कामयाब हुए हैं, फिर तुम कामयाब क्यों नहीं हो सकते? लेकिन कोशिश करने और परमात्मा पर भरोसा रखने की ज़रूरत है।

कोशिश किये जाओ। जब उससे नफ़रत होने लगेगी, जब पुराने संस्कारों का दौरा (वेग) खत्म हो लेगा, खुद-ब-खुद आदतें खत्म हो जायेंगी।

में अच्छी तरह हूँ परमात्मा तुम्हें खुश रखे।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(५१)

गाज़ियाबाद

२०-१-५९

प्रिय भाई,.....नमस्ते।

आपका कार्ड मिला। इससे पहले मुझे आपका कोई खत नहीं मिला।

प्रश्न (१) - आपका पहला सबाल है कि परमात्मा ने दुनियाँ को क्यों पैदा किया ?

उत्तर - इसको भिन्न भिन्न मतों ने मुख्तलिफ़ (अलग-अलग) तरीकों पर समझाया है लेकिन तस्सलीबख़श (संतोषजनक) नहीं है । उसमें कोई न कोई एतराज़ (तर्क) निकलता है । एक बार परमसन्त रामकृष्ण परमहंस से भी यही सबाल किया गया था । इसका जबाब उन्होंने इस प्रकार दिया कि परमात्मा की नज़दीकी हासिल करो, उससे मिलकर एक हो जाओ (सायुज्य) तभी इस मज़मून (विषय) को अच्छी तरह समझ सकोगे । और बात भी ऐसी ही है। परमात्मा के विषय में बात-चीत, सिर्फ़ आत्मा ही अनुभव कर सकती है, बुद्धि उसको नहीं समझ सकती । दुनियाँदारों (संसारियों) की आत्मा के ऊपर इन्द्रिय, मन, बुद्धि के परदे पड़े हुए हैं । इसलिए वे परमात्मा के भेद को नहीं समझ सकते, जब तक वे इन तीनों पर्दों को अपने ऊपर से न हटा दें। पूर्ण रूप से तो उसी वक़्त आपकी समझ में आयगा जब आप इन्द्रियों, मन व बुद्धि की गुलामी से आज़ाद होंगे लेकिन, फिर भी समझाने की गरज़ से कुछ न कुछ लिखा जाता है ।

समुन्द्र अपनी हालत पर कायम है । उसमें चाँद , सूरज हवा के असर से लाखों करोड़ों ही बुलबुले पैदा होते हैं और हज़ारों नज़़ारे (दृश्य) दीखते हैं, लेकिन इनके शान्त हो जाने पर न कहीं बुलबुले हैं । न कहीं नज़़ारे हैं। समुन्द्र ज्यों का त्यों है। वह हमेशा से कायम है, कायम रहेगा। उसमें न कहीं प्रलय है और न उत्पत्ति। जो बुलबुलों पर निगाह रखते हैं वे प्रलय व उत्पत्ति दोनों अनुभव करते हैं और जो समुन्द्र पर निगाह रखते हैं उनको ये दोनों चीज़ें वहम (भ्रम) दिखाई देती हैं । सिर्फ़ एक शक्ति काम कर रही है, अपनी ख्वाहिशात (इच्छायें) और संस्कारों के वश जीव उसमें मुख्तलिफ़ (विभिन्न) नज़़ारे (दृश्य) देखता है। जब तक संस्कार बाक़ी हैं, नज़़ारे मौजूद हैं और जब ये ख़त्म हो जाते हैं नज़़ारे भी ग़ायब हो जाते हैं ।

(२) दूसरा सबाल आपका यह है कि परमात्मा किस से पैदा हुआ ? जो चीज़ दो चीज़ों से मिलकर पैदा होती है - वह जन्म लेती है और मरती है और तब्दील होती रहती है । लेकिन जो मुफ़रत यानी एक है न वह पैदा होती है और न मरती है । दुनियाँ में परमात्मा ही एक ऐसी चीज़ है जो "एक" है । न कभी पैदा होता है, न मरता है । वह हमेशा से मौजूद है और हमेशा कायम रहेगा। उसके लिए यह सबाल पैदा नहीं होता कि वह किससे पैदा हुआ ।

(3) तीसरा सबाल आपका यह है कि ईश्वर अपने भक्तों से किस चीज़ की आशा करता है ? ईश्वर प्रेम मुजस्सिम (मूर्तिमान) है। जो आत्मायें उस से प्रेम करती हैं वे उसके नज़दीक (समीप) हैं और जो कोई आशायें और ख्वाहिशात (इच्छायें) रखती हैं , वे नीचे खिसक आती हैं, जन्म धारण करती हैं ताकि ख्वाहिशात को भोग कर खतम कर दें और असली प्रेम चमकने लगे जिसके पैदा होने पर आत्मा परमात्मा की नज़दीकी हासिल (प्राप्त) कर लेती है। इसलिए जो जीव उससे मिलना चाहते हैं उनको उससे असली प्रेम होना चाहिए। जो शख्स अपने नुक़्सों (अवगुणों) को दूर करना चाहते हैं वे शीशे में शकल देख कर अपने खतो -खाल (मुँह के धब्बे) ठीक कर लेते हैं वर्ना शीशा बेगरज़ (स्वार्थ रहित) है, कोई उसमें अपनी शकल देखे या न देखे । परमात्मा इच्छा रहित है। उसमें कोई इच्छा नहीं है । जो जीवन, हमेशा का सुख, पूर्ण ज्ञान और हमेशा की ज़िन्दगी चाहते हैं और जनम-मरण के चक्कर से छूटना चाहते हैं वे उसका ध्यान करके, यानी उसमें अपनी शकल देखकर, इन्द्रियों, मन व बुद्धि के जंजाल से आज़ाद हो जाते हैं और अपने असली रूप में आ जाते हैं जो आत्मा है, और उससे मिलकर एक हो जाते हैं। जो अभी मन के चक्कर में फँसे हैं वे पैदा होते हैं और मरते हैं ।

इस किस्म (प्रकार) के सबालात (प्रश्नों) से न आपको कोई फ़ायदा होगा और न आप समझ सकेंगे और दूसरों का वक़्त रायगां (बर्बाद) करना है । काम की बात करो । अपने मन को नफ़सानी ख्वाहिशात (वासनाओं) से साफ़ करते चलो और इससे निकलने की कोशिश करो, वर्ना आखिर वक़्त तक इसी दलदल में फँसे रहोगे, हाथ कुछ नहीं आएगा ।

परमात्मा आपको सीधा रास्ता दिखाये ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(५२)

गाज़ियाबाद

२४-१-५९

प्रिय भाई नमस्ते ।

१२ दिसम्बर का खत मिला। दुनियाँ सब अपने मतलब की है। सिर्फ़ अपने कर्म और परमात्मा का ध्यान काम देता है, लेकिन दुनियाँ इसका आसानी से पीछा नहीं छोड़ेगी। यह बार-बार नए रंग रूप में आकर अपनी तरफ खींचती है। असली वैराग्य बहुत दिनों बाद पैदा होता है।

यह पढ़कर खुशी हुई कि सत्संग ठीक चल रहा है। साथ में सत्संग करने से सभी का फ़ायदा है। तुम्हारी हालत ठीक है। अगर रिश्तेदारों से मौहब्बत का बर्ताब किया जाय तो द्वेषभाव छोड़ देते हैं। मनीआर्डर के रूपये मिले। परमात्मा तुमको बरकत दे। मैं अच्छी तरह से हूँ।

सब भाइयों को नमस्ते ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(५३)

गाज़ियाबाद

२५-१-५९

प्रिय भाईनमस्ते ।

मुश्किले नेस्त कि आसां न शबद ,
मर्द बायद कि हिरासां न शबद ।

कोई मुश्किल ऐसी नहीं है जो मेहनत करने से आसान न हो जाय। आदमी को चाहिए कि हिरासा (निराश) न हो। जब और लड़के पास हो सकते हैं तो क्या वजह है कि तुम पास न

हो। इसमें शक नहीं कि बड़ी उम्र में याद नहीं रहता लेकिन एक की जगह दो दफ़ा पढ़ना पड़ेगा । जाड़े की रातें बहुत बड़ी होती हैं । जितना हो सके मेहनत करो। परमात्मा ने चाहा तो कामयाबी होगी ।

उसी पर भरोसा करो ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(५४)

गाज़ियाबाद

९-५-५९

प्रिय सच्चिदानंद बाबू,

गुरु या परमात्मा का प्रेम गुरु तो हर समय ही देते रहते हैं और परमात्मा का तो प्रेम उसके अन्तर में मौजूद ही है और उसी से उसका रिश्ता उस परमात्मा से मिला हुआ है। अगर ऐसा न हो तो किसी का उससे रिश्ता बंध ही नहीं सकता था और घर की तरफ लौटने के कोई मायने नहीं हैं। लेकिन गुरु या परमात्मा का प्रेम उस समय इन्सान क़बूल करता है जब वो इन्द्रियों के भोग, इन्द्रियों की वासनाओं और बुद्धि के तर्क से ऊँचा हो जाता है। इसलिए कोशिश करते रहो और इन बातों से ऊंचे उठो। अपने मन की भावनाओं को बराबर देखते रहो और उसको ऊपर उठाने का जतन बराबर करते रहो ।

परमात्मा तुम्हारा कल्याण करें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

१४-४-५९

प्रिय भाई रामसागर जी,

अभ्यास जहाँ तक हो वहाँ तक बढ़ते रहो। यह जो अपने देखा वह कल्पित नहीं है। आपको अभ्यास में देवताओं का साया मालूम हुआ। दुर्गा का स्थान कण्ठ का है और शिव का स्थान हृदय का है और हनुमान जी का स्थान गुदा का है, और " ॐ " का स्थान आँखों के बीच का है। यह सब रास्ते की सैर है, जो दिखाई दे, देखते चलो, खाहिश मत करो।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

२३-४-५९

प्रियवर भाई

चिन्ती मिली। वैराग्य के वगैर अनुराग नहीं होता। वैराग्य ज्ञान होने पर होता है। जब यह निश्चय हो जाता है कि जो कुछ मिलना है वह अवश्य मिलेगा, और जो नहीं मिलना है वह इस जन्म में नहीं मिलेगा फिर आदमी अपने मन को उस परमात्मा में लगा देता है और अपनी बुद्धि को तुच्छ समझकर, उसका आश्रय छोड़कर परमात्मा के सहारे काम करता है। इस तरह मन और बुद्धि के शांत होने से खुद-ब-खुद परमात्मा में विश्वास होने लगता है।

ध्यान और शब्द दोनों करते रहो। जिसको मन चाहे उसको करो, लेकिन दूसरे अभ्यास को भी छोड़ना नहीं है, बल्कि कभी-कभी करते रहें। ध्यान से आत्मा को शक्ति मिलती है और प्रेम पैदा होता है। और शब्द सुनने से मन शुद्ध होता है जिससे आचरण ठीक

होता है और आदमी सत पर आ जाता है । दोनों तरह का अभ्यास करते रहो। परमात्मा तुम्हारी मदद करेंगे । बहू को आशीष, बच्चों को प्यार ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(५७)

सिकन्दराबाद

२३-४-५९

प्यारे भाईनमस्ते ।

२१ मार्च का खत मिला । मैं १९ ता० को वापस आया, थका हुआ था। इतने अर्से में थकावट भी बहुत हो गयी थी । बाज़े खतों को देखने तक का मौका नहीं मिला । वजह काम की ज़्यादाती और थकावट । अब खतों के जबाब दे रहा हूँ मेरे पास काम बहुत ज़्यादा रहता है और कोशिश करने पर भी रोज़ का रोज़ काम खत्म नहीं होता । इसलिए तुम्हें जबाब की ज़ल्दी की आशा नहीं रखना चाहिए। जबाब पहुँचेगा ज़रूर। यह नहीं कहा जा सकता कि कितना ज़ल्दी ।

पहले ख्याल पैदा होता है फिर ख्याल में पुख्तगी (परिपक्वता) । यानी अगर सच्ची लगन है तो उसी के मुताबिक़ काम करने लगता है और फिर वह चीज़ मिल जाती है । ऐसा नहीं हो सकता कि सच्ची लगन हो और चीज़ न मिले। देर और सवेर ख्वाहिश पर निर्भर है।

नफ़सानी ख्वाहिश यानी कामेन्द्री पर बहुत देर में क़ाबू आता है। इसका एक परहेज़ और एक इलाज है। परहेज़ यह है कि स्त्रियों की सोहबत से हमेशा परहेज़ रखें और अपनी स्त्री के सिवाय किसी के साथ एकांत में न बैठें। इलाज यह है कि जो स्त्री सामने से गुज़रे उसके चरणों में अपना सर ख्याली तौर से रखें और दिल में प्रार्थना करें कि " हे माता ! तू जगत-जननी की अवतार है, मैं तेरा कमज़ोर बालक हूँ मेरा इम्तिहान न ले।" अगर यह इलाज और परहेज़ नहीं करेगा तो कभी क़ामयावी नहीं होगी ।

अपने वक़्त का टाइम टेबल बना लो। उस पर चलने की कोशिश करो। कुछ दिनों में पुख़्तगी आ जायगी। अगर तुम अपने ख़याल में पक्के हो ज़रूर कामयावी होगी ।

मेहनत करो और खूब मेहनत करो फिर उस परमात्मा पर विश्वास रखकर उस पर छोड़ दो । जो वगैर मेहनत किये दुआओं के भरोसे कामयावी चाहते हैं वे पागल हैं ।

जब तुम्हें रूपये की ज़रूरत हो मुझे लिख सकते हो । रुपया पहुँच जायेगा । लेकिन bare necessities (आवश्यकता) पर ही खर्च करना चाहिए और उसका इन्तज़ाम परमात्मा कर देता ही जैसा तुमको खुद तज़र्बा हुआ ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(५८)

गाज़ियाबाद

६-५-५९

प्रिय भाईनमस्ते ।

आपका २४ अप्रैल का पत्र मिला ।

यह वैराग्य झूठा है और धोखा है । जब आदमी की दुनियाँ में कामयाबी नहीं होती या अपनी जिम्मेदारियों से घबरा जाता है तो दुनियाँ से भागना चाहता है। हमारा लक्ष्य परमात्मा और गुरु है। जब गुरु हर वक़्त काम करता है और सबसे अलग है, यानी अपना स्वार्थ छोड़कर काम करता है और परमात्मा हर वक़्त काम करते हुए भी सबसे अलहदा है, फिर तुम कैसे काम से बच सकते हो। जब तक ज़िन्दगी है, काम करना है। काम करते रहो लेकिन अपना समझ कर नहीं, उसका समझ कर ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

गाज़ियाबाद

६-५-५९

प्रिय भाई.....जी नमस्ते ।

आपका पहला खत मिला, जबाब दे दिया गया, मिला होगा। आप गोरखपुर न मिल सके, इसमें ग़लती मेरी ही थी न कि आपकी । ख़ैर, जो कुछ भी हो, परमात्मा ने चाहा तो फिर जल्द ही मिलेंगे। कर्म कटने से ही कटेंगे, उसके लिए मत घबराओ । जो आये उसे परमात्मा का प्रसाद समझ कर खुशी-खुशी भोगो । यह आपकी खुशकिस्मती (सौभाग्य) है कि आपको प्रकाश दिखाई देता रहता है । परमात्मा करे यह आपको स्थायी हो जाय । दिल में जो चीज़ है वह खुल कर आएगी और ज़रूर आएगी । लेकिन वो दुनियांवी ख्वाहिशात (सांसारिक इच्छाओं) से दबी हुई है । दुनियावी ख्वाहिशात कम करते चलो और उस चीज़ का तुमको खुद अनुभव हो जायगा। जिस मुबारिक दिन तमाम दुनियांवी ख्वाहिशात का अंत हो जायेगा, वह चीज़ जिसकी तुमको तलाश है पूर्ण रूप से प्रकट होगी और वही असली ज़िन्दगी है । अभ्यास में ऐसा होता ही रहता है । अभी तक मन ग़ालिब (ऊपर सवार) है। जहाँ तक मन है, इसकी लहरें उठती रहती हैं । जब मन शांत हो जाता है, इसकी लहरों का उठना बंद हो जाता है । आत्मा का अनुभव होने लगता है और वह हालत स्थायी होने लगती है । आपका प्रेम छिपा नहीं है । परमात्मा करे आपका प्रेम उस तरफ़ हो जाय जो प्रेम का भंडार है ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

गाज़ियाबाद

७-५-५९

प्यारी बेटी.....

मुझे हर वक़्त आपके आने से खुशी होगी । लेकिन को अपने पतिदेव की आज्ञा के बिना नहीं आना चाहिए। अगर वे (प्रसन्नता) से इज़ाज़त दें तो आ सकती हैं । को अपने पिता जी की मर्ज़ी के बिना नहीं आना चाहिए । मुझे कोई नाराज़गी नहीं है लेकिन यह ज़रूर चाहता हूँ कि ब्याही हुई लड़कियाँ अपने पति की आज्ञा में रहें और क्वॉरी लड़कियाँ अपने बाप, भाई या किसी सरपरस्त (सरंक्षक) के कहने में रहें । आज़ाद लड़कियाँ परमार्थ नहीं कमा सकतीं और उनको मुझसे मिलने में कोई फ़ायदा नहीं है । परमात्मा तुमको खुश रखे और सच्चे रास्ते पर कायम रखे।

शुभचिन्तक- श्रीकृष्ण

गाज़ियाबाद

७-५-५९

प्यारी बेटी..... खुश रहो ।

२३ मार्च की तुम्हारी चिठी मिली । तुम सच्चे मायने में बेटी हो और तुम्हें पिता कह कर ही सम्बोधित करना चाहिए । मुझे यह पढ़कर खुशी हुई कि तुम मुझे अपना समझती हो और तुम मुझे सच्चे मायने में बाप ही पाओगी ।

शुरु में अभ्यास में तबियत नहीं लगती, बल्कि यह गुरु-कृपा होती है जिसकी वजह से गुरु के सामने मन एकाग्र हो जाता है और आनन्द आने लगता है, लेकिन गुरु के हटने के बाद वह हालत जाती रहती है। जब अभ्यास पुख्ता (पक्का) हो जाता है और परमात्मा का प्रेम पैदा

हो जाता है और मन शांत हो जाता है तो फिर हर वक़्त तबियत लगने लगती है। इससे परेशान नहीं होना चाहिए, बल्कि अभ्यास पर ज़ोर देना चाहिए। दिन में जब फुर्सत हो, अभ्यास करो, मन एकाग्र हो जायेगा और शांत होगा। फिर आनन्द ही आनन्द आने लगेगा। तबियत न लगने और आनन्द न मिलने की वजह से जो परेशानी मालूम पड़ती है यह बस इस बात की निशानी है कि तुम्हारी आत्मा परमात्मा का प्रेम चाहती है और उसके न मिलने की वजह से परेशान होती है। परमात्मा करे कि तुम्हारी यह प्यास बराबर बनी रहे।

परमात्मा तुमको सच्चे रास्ते पर कायम रखे।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(६२)

गाज़ियाबाद

१९-५-५९

प्रिय सच्चिदा बाबू, नमस्ते।

आपकी चिट्ठी मिली। जहाँ प्रेम में कोई गरज़ रहती है वहाँ प्रेम घटा बढ़ता है। जो प्रेम गरज़ (स्वार्थ) से रहित होता है, वह बढ़ता ही है। हुक्म पर चलने और सेवा करने का भाव रखने से प्रेम की वृद्धि होती है। मैं तो सभी को प्रेम करता हूँ, जो याद रखते हैं उनको फ़ायदा होता है और जो दुनियाँ में फंसे हैं, उनको फ़ायदा नहीं होता। असली प्रेम यह है कि दोनों की याद भूल जाय। मैं गाज़ियाबाद ही हूँ और ३१ मई तक रहूँगा। आप कभी भी आ सकते हैं।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

गाज़ियाबाद

२०-५-१९५९

प्रिय

आपका पत्र मिला । जो अपने लिखा है, बिलकुल ठीक है। परमात्मा तो हमेशा सहायता करता ही रहता है और कभी न कभी आपको फ़ायदा होगा ही। लेकिन अगर कोई रास्ते का सच्चा दिखाने वाला मिल जाय तो रास्ता जल्दी तय हो जाता है । आत्मोन्नति का हरेक मनुष्य अधिकारी है और कोई वजह नहीं कि आप उन्नति न कर सकें । बाहरी नाम से कोई फ़ायदा नहीं होगा। सुरत अन्तर्मुखी होनी चाहिए । जिस रास्ते पर चलकर आनन्द और शांति मिलती है वह अन्दर है न कि बाहर । मैं सेवा करने के लिए हर वक़्त तैयार हूँ, फ़ायदा होना न होना दूसरे के हाथ में है। सुरत का अंतर्मुखी होना वगैर दूसरे की मदद के नहीं हो सकता और इसमें हाज़िरी की ज़रूरत है। अगर आप यहाँ आ सकें और कुछ दिन निवास कर सकें तो उसकी ज़ात (ईश्वर) से उम्मीद की जा सकती है कि फ़ायदा ज़रूर होगा। वह बड़ा दयालु है और सच्चे दिल की पुकार सुनता है । यहाँ पर ठहरने और खाने का सब इन्तज़ाम है । आपको तकलीफ़ न होगी । मैं १ जून को बाहर चला जाऊँगा और २० जून को वापिस आ जाऊँगा । और यदि आपका इरादा हो तो इन तारीखों को बचा कर आर्यें ।

परमात्मा आपकी मदद करे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

गाज़ियाबाद

२३-५-९९

प्रिय भाई.....नमस्ते ।

चिट्ठी मिली । आपके परमानेन्ट (नौकरी में स्थायी) होने की खबर सुन कर खुशी हुई । परमात्मा चाहेगा तो आप मौजूदा जगह पर भी परमानेन्ट हो जावेंगे । सब उसके रहम पर मौकूफ़ (निर्भर) है ।

आपका कहना बिलकुल ठीक है । बाज़ लोग दुनियांवी ख्वाहिशात (इच्छा) के ज़ेरअसर (प्रभाव) में - और इस ख्याल से कि उपदेश लेने से दुनियाँ के काम बन जायेंगे, उपदेश ले लेते हैं, और इसी तरह से गुरु भी तादाद बढ़ाने की हविस और इस ख्याल से कि आगे चलकर शायद ठीक हो जायें, उपदेश दे देते हैं जिसका नतीज़ा यह होता है कि शिष्य अविश्वासी हो जाता है और गुरु को भी परेशानी होती है। अगर शिष्य अक्रीदा (विश्वास) पुख्ता होने पर गुरु धारण करें और गुरु शिष्य को परख कर उपदेश दें तो फिर बदएतक्राद (अविश्वास) होने का सबाल ही नहीं ।

आपकी हालत ठीक है। मुक्करिरा (निश्चित) वक़्त पर नियम के साथ, तबियत लगे या न लगे, अभ्यास करते रहिये और अपने हाल से खबर देते रहिये ।

शुभचिन्तक- श्रीकृष्ण

(६५)

गाज़ियाबाद

२३-५-५९

श्री जी,

आपका १८ तारीख का खत मिला। क्या वगैर प्रेम के तड़प होती है ? क्या वगैर आग के तपन होती है ? यह रास्ता आहिस्ता चलने का है जिससे दीन और दुनियाँ (लोक परलोक) दोनों बनती हैं। तेज़ी से चलने में रुकावट आ जाती है। मन के घाट को आहिस्ता-आहिस्ता बदलते चलो। परमात्मा मदद करेगा।

जब आपकी माताजी की तबियत ठीक हो जाय तब आप आ सकते हैं। माय ३१ मई तक यहीं रहूँगा।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(६६)

गाज़ियाबाद

२६-६-५९

प्रिय भाई सच्चिदानन्द, नमस्ते।

चिट्ठी मिली, हाल मालूम हुआ। मैं शादी में आना चाहता था, लेकिन मौसम की गर्मी और अपनी कमज़ोरी देखकर हिम्मत नहीं पड़ी। दूसरे, ग्वालियर से बहुत से आदमी आ गये थे।

परेशानी का होना और शांति की तलाश अच्छी चीज़ है। लेकिन तलाश बाहर बेकार है। वह मिलेगी तो अन्तर में मिलेगी। घर बार, दफ्तर को छोड़ने से शांति नहीं मिलती बल्कि कई बार ज़्यादा अशांति बढ़ती है। दुनियाँ से तज़र्बा लो। अपने मन को दुनियाँ की मौहब्बत से खाली करो पर परमात्मा में लगाओ। तभी शांति मिलेगी। लेकिन यह काम एक दो रोज़ का

नहीं है और इतना आसान नहीं है । बड़ी मेहनत के बाद शांति मिलती है । हर वक़्त अपने मन पर निगाह रखो और समझा समझाकर दुनियाँ की मौहब्बत से अलग करो और हिम्मत न हारो । कोशिश किये जाओ । बड़ी महनत के बाद यह रतन मिलता है । परमात्मा करे तुन कामयाब (सफल) हो ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(६७)

गाज़ियाबाद

२६-६-७९

प्यारे बाबू सच्चिदानन्द जी, नमस्ते ।

तुम्हारे पहले ख़त का जबाब दे चुका हूँ । मेरे पास बहुत काम हैं और सैकड़ों ख़तों का जबाब देना होता है । आपको यह आशा नहीं रखनी चाहिए कि ख़त का जबाब फ़ौरन दिया जा सकेगा ।

तुममें कमियाँ बहुत हैं और उसका गुस्सा दूसरों पर उतारते हो । अपनी कमियों को देखो और उनको दूर करने की कोशिश करो, तभी शान्ति मिलेगी । बजाय दूसरों पर गुस्सा करने के अपने पर गुस्सा करो । दूसरों को शांति पहुँचाओ, तब तुमको शांति मिलेगी । दूसरों को परेशान करके तुम खुश नहीं रह सकते । घर बार नौकरी छोड़ना फ़िज़ूल की बातें हैं। ज़्यादा समय अभ्यास में लगाओ ।

परमात्मा तुम्हारी मदद करें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(६८)

गाज़ियाबाद

८-७-५९

प्यारे बाबू सच्चिदानन्द जी, नमस्ते ।

चिठी मिली । आदतों को छोड़ना बहुत ज़रूरी है । इनको वगैर छोड़े तरक्की नहीं होती लेकिन इनको छोड़ना भी दुनियाँ में बहुत मुश्किल काम है और अपनी कोशिश से यह छूटती भी नहीं । इनको छोड़ने की तरक्कीब यह है कि पहले अपनी तरफ़ से ख़ूब कोशिश करो और जान की बाज़ी लगा दो फिर नाकामयाब (असफल) होने पर परमात्मा से प्रार्थना करो, रोओ और गिड़गिड़ाओ। तभी उसकी दया उमड़ेगी और आदतें छूटेंगी ।

मिलने की जल्दी ज़रूरत नहीं है। जब आसानी से मौक़ा मिले मिल लेना ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(६९)

गाज़ियाबाद

८-७-५९

प्रिय बाबूनमस्ते ।

गुरु अपना और परमात्मा का प्रेम हर समय देते ही रहते हैं और परमात्मा का प्रेम उनके अन्तर के अन्तर में मौजूद ही है। उसी से उनका रिश्ता परमात्मा से जुड़ा हुआ है। अगर ऐसा नहीं होता तो फिर किसी का उससे रिश्ता बन ही नहीं सकता और अपने असली घर लौटने के कोई मायने ही नहीं । लेकिन गुरु या परमात्मा का प्रेम उसी समय इन्सान क़बूल (ग्रहण) करता है जबकि इन्द्रियों के भोग, इन्द्रियों की वासनाओं और बुद्धि की तरफ़ से ऊपर हो जाता है । इसलिए कोशिश करते रहो कि इन बातों से ऊँचे उठो । अपने मन की भावनाओं को बराबर देखते रहो और ऊपर उठने का जतन बराबर करते रहो ।

परमात्मा तुम्हारा कल्याण करें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(७०)

गाज़ियाबाद

८-७-५९

प्रिय.....नमस्ते ।

चिट्ठी मिली । मन दुनियाँ में मुद्दत (चिरकाल) से फँसा हुआ है और दुनियांवी ख्वाहिशात (सांसारिक इच्छाएं) हर समय उठाता है । दुनियाँ में सबसे मुश्किल काम इनसे छुटकारा पाना है । संतों ने इसका एक ही इलाज बताया है कि इसको परमात्मा या गुरु के चरणों से बाँध दो । शुरू में यह बड़ी उछल-कूद मचाता है लेकिन अगर गुरु कमाई किये हुए है और शिष्य में श्रद्धा और विश्वास के साथ गुरु से प्रेम है तो आहिस्ता-आहिस्ता रुकने लगता है। और जितना ज़्यादा यह रुकता है उतना ही आनन्द को बढ़ाता जाता है। इसलिए शुरू में यह नहीं रुकेगा । कोशिश करो कि दुनियाँ से हटकर परमात्मा के चरणों में लगे । घबराओ नहीं, काम मुश्किल है लेकिन फिर भी बड़ा सुखदायक और हमेशा रहने वाला है । जो मेहनत करते हैं और लगे रहते हैं उनको ज़रूर कामयावी (सफलता) होती है ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(७१)

गाज़ियाबाद

९-७-५९

प्रिय..... नमस्ते ।

चिट्ठी मिली । हाल मालूम हुआ ।

यह रास्ता प्रेम का है और तुम अधिकसरी हो । शुरू दिन से तुमको फ़ायदा होना शुरू हो गया ।

दुनियाँ में हर शख्स अपने ख्याल में मस्त है । कोई रूपये में, कोई स्त्री में, कोई औलाद में और कोई मान-बड़ाई में । और ऐसी ही शिक्षा दूसरों को देता है। जब तक ख्वाहिश के मुताबिक़ गुरु बातचीत करता है वह उनका सब कुछ है, जब गुरु उनके खिलाफ़ कोई बात कहता है तब वह बद-ऐतकाद (विमुख) हो जाता है और गुरु में सौ नुक़्स (दोष) देखने लगता है । ऐसे लोगों की सौहबत तुमको मिली । इससे तुम्हारे ख्याल डाँवा-डोल हुए और मन इस चक्कर में फंस गया , मेरे दिल में तुम्हारे लिए वही मौहब्बत है जो पहले थी । तुम्हारी हालत देखकर दुःख ज़रूर हुआ कि नेक (अच्छा) रास्ता चलते हुए खोटा रास्ता हो गया । सूर्य निकल रहा है। एक शख्स (व्यक्ति) अपनी आँखों पर ऊँगली रख लेता है और शोर मचता है की अँधेरा है। इसमें सूर्य का क्या क़सूर है ? ऊँगली हटा लो , अँधेरे की शिकायत दूर हो जाएगी। गुरु के खिलाफ़ किसी की बात को मत सुनो । अगर कोई बात सुनने में आ जाय और वह गुरु के खिलाफ़ है तो गुरु से साफ़ -साफ़ कह दो। वो तुमको असलियत बता देंगे। अगर इस पर भी तुमको तसल्ली न हो तो ऐसे गुरु को छोड़ दो ।

इन्सानी चोला बड़ी मुश्किल से मिलता है और इसको बेफ़ायदा ज़ाया (नष्ट) नहीं करना चाहिए। कहना मानने का मतलब यह नहीं कि जो कुछ कहा जाय उसको सच मानकर, चाहे अक़ल उसके खिलाफ़ फ़तवा (निर्णय) दे और मन उसको न माने, उस काम में लग जाओ । यह अंधविश्वास है, इससे गिरने का डर रहता है । कहना मानने का सही मतलब यह है कि जो कुछ ख्वाहिशत (इच्छायें) छुपी हुई हैं, उनको साफ़-साफ़ बता दो और जिस वजह से तुम ऐसा चाहते हो , उसको भी समझा दो और फिर जैसा हुक़म दिया जाय उस पर अमल करो। परमात्मा तुमको सच्चे रास्ते पर क़ायम रखे ।

बच्चों को प्यार ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(७२)

गाज़ियाबाद

२५-७-५९

कृपया पत्र क्रमांक ४० देखें ।

(७३)

गाज़ियाबाद

२५-७-५९

प्रिय भाई,

चिढ़ी आपकी मिली । एक काम को बार-बार करते रहने से आदत पैदा हो जाती है और इस आदत को छोड़ने में जन्म लग जाते हैं । इसको छोड़ने पर ही मोक्ष का अधिकारी होता है । यह आदतें इतनी आसानी से नहीं छूटतीं जैसा तुम समझ रहे हो । जब आदमी तपाया जाता है और पिघलता है तब सुरत उस घाट से हटती है । यह आग प्रेम की या कर्म की है। इसमें शक (संदेह) नहीं कि तुम अपने पिछले कर्मों से पछता रहे हो लेकिन पछताना और साथ-साथ उन कर्मों को करते भी रहना, सच्चे मायनों में पछताना नहीं है । आग सुलगा रहे हो लेकिन अभी सुलगी नहीं है । कोशिश किये जाओ , परमात्मा मदद करेगा ।

बच्चों को प्यार ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(७४)

गाज़ियाबाद

७-८-१९५९

प्रिय भाई, गुरुदेव कल्याण करें ।

यह प्रकाश जो आप महसूस (अनुभव) करते व देखते हैं, यही आत्मा का असली प्रकाश है और

सबकी ज़िन्दगी का एन इसरार (अति आवश्यक) है । यह सबके अन्दर भी है और बाहर भी । आत्मा जाग्रत अवस्था में बाहरी इन्द्रियों पर बैठ कर काम करती है । इसी में इन्द्रियों से काम लेती है। स्वप्न अवस्था में अन्तःकरण पर बैठकर काम करती है और इसी वजह से हम सोच विचार करते हैं । सूरज सिर्फ बाहरी अँधेरे को दूर करता है और बसा हर जगह यही आत्मा फैली है ।

जब आप आँखें बंद करते हैं तो प्रकाश अन्दर दिखलाई देता है जो असल है, और जब बाहर का ख्याल आता है तो वही प्रकाश जो सबकी असल है, आपको दिखाई देता है क्योंकि आप आत्मा के नज़दीक होते हैं। जागने पर जब आप आत्मा के स्थान से नीचे उतर आते हैं तो वह बाहरी प्रकाश दिखाई नहीं देता है। परमात्मा ने चाहा तो आगे चलकर यह प्रकाश खुली आँखों हर जगह दिखाई देगा। रास्ता बिलकुल साफ़ और सही है ।

आपका ख्याल ठीक है । जो आनन्द ख्याल में है वह खत लिखने में नहीं लेकिन कभी कभी दोस्तों की खैरियत मालूम करने के लिए तबियत चाहती है और खत का इंतज़ार रहता है।

मन बहुत दूर जाता है और ख्वाहिश (इच्छा) किसी न किसी किस्म (प्रकार) की बाक़ी रहती है। दिल के बर्तन को माँजे जाओ और गुरु के फ़ैज़ (कृपा) से धोते जाओ। एक दिन वक़्त आयेगा जब तमाम बुराइयाँ धुल कर दिल का बर्तन चमक उठेगा और प्रीतम का दीदार नसीब होगा। यह ख्याल न करना कि तुम में नुक़्स नहीं है । यह शैतानी (माया का) धोखा है ।

मुझे पूरा यक़ीन है कि आपके सुपरवीज़न (देख रेख) में सत्संग बराबर ठीक चलता ही रहेगा। सब भाइयों को मेरी दुआ व नमस्ते । आपको देखने की तबियत चाहती है । मुझे दुःख है कि मैं खत अपने हाथ से नहीं लिख रहा हूँ क्योंकि तबियत मेरी इस समय ठीक नहीं है । बड़े भाई को सत-श्री अकाल कहना ।

बच्चों को दुआ ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(७५)

गाज़ियाबाद

२०-११-५९

प्रिय भाई (राम सागर जी)

.....अभ्यास करे जाओ । हालत जानने की कोशिश मत करो, वक्त पर सब खुल जायेगा। यह प्रेम का मार्ग है। इसमें करनी कोई ज़्यादा फ़ायदा नहीं करती, मगर उसका सहारा जरूर लेना चाहिए। मैं कोई ऋषि या बड़ा अभ्यासी नहीं हूँ । मुझमें सबका प्रेम है और मैं सबको प्यार करता हूँ । इसमें धोखा नहीं है और तुम इस पर भरोसा कर सकते हो ।
शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(७६)

गाज़ियाबाद

३-१२-५९

प्यारी बेटी, खुश रहो ।

..... इन्सान में दो शक्तियाँ काम कर रही हैं - एक मन दूसरी आत्मा । मन दुनियाँ की चीज़ों का रसिया है, उसको इन्हीं चीज़ों में रस मिलता है। दूसरी शक्ति आत्मा है जिसको कि परमात्मा के प्रेम में आनन्द मिलता है । बीमारी की हालत में आत्मा कमज़ोर पड़ जाती है और मन का ज़ोर होता है। इसलिए मन पूजा से भागता है। चारों तरफ़ पानी का दीखना परमात्मा का रूप है जो हर जगह फैला है । कोशिश करके मुक़र्रिर वक्त (नियत समय) पर अभ्यास करती रहो। आहिस्ता-आहिस्ता सब ठीक हो जायगा ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

कासगंज

२४-१२-५९

प्रिय भाई.....

मैं आज यहाँ आया हुआ हूँ और २८ तारीख को वापस हो जाऊँगा। ईंट-पत्थर अपने मन की वासनाएँ हैं। इनसे तुम डर गए। गुरु दरअसल आत्मा या परमात्मा है। जब किसी शख्स (व्यक्ति) में, वह आदमी जो आत्मा से प्यार करता है, आत्मा या परमात्मा का प्यार देखता है, तो उसे प्यार करने लगता है। गुरु न तो यह जिस्म (देह) है और न मन, वह इससे अलहदा है। वह आत्मा है और वही गुरु है। तुम्हारा गुरु हर समय तुम्हारे साथ है मगर मन की वासनाओं और इन्द्रिय भोग की ख्वाहिशों (इच्छाओं) के नीचे दबा हुआ है। अभ्यास यह है कि मन की ख्वाहिशात और इन्द्रिय भोग से बचो ताकी आत्मा अपने असली रूप में ज़ाहिर (प्रकट) हो। उससे मिल कर एक हो जाना ही असली मोक्ष है। अगर इस जन्म में तुम्हारी मोक्ष नहीं हुई तो जब जब जन्म लगे तुम्हारा गुरु भी तुम्हारे साथ जन्म लेगा जब तक कि मोक्ष न हो यानी अगर तुम में आत्मा या परमात्मा की मौहब्बत है, तो जब जब जन्म लगे कोई न कोई आदमी ऐसा मिलेगा जिसमें आत्मा या परमात्मा का प्रेम होगा और वही तुम्हारा गुरु होगा।

यह आत्मा या परमात्मा का प्रेम कभी मरता नहीं, दब जाता है। इसी वजह से कहा जाता है कि गुरु कभी मरता नहीं, सिर्फ़ बिछुड़ना हो जाता है। कोशिश करते रहो और मन को आहिस्ता-आहिस्ता सँभालते चलो। तम से रज पर और रज से सत पर लाओ। जो परमात्मा पर विश्वास रखते हैं और उस पर भरोसा करते हैं वह उनको कभी अकेला नहीं छोड़ता। गुरु रूप में आकर दर्शन देता है और भवसागर से पार कर देता है।

बच्चों को प्यार।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दराबाद

२२-२-६०।

प्रिय भाई

जो कपडा ज़्यादा मैला है वही ज़्यादा सफ़ाई का हकदार है । ज़्यादा गुनहगार (दोषी) होना भी इस मामले में एक बरकत है। सफ़ाई भी ज़रूर होगी अगर कहने के मुताबिक अमल किया जाय ऊर्जा, इलाज बतलाया गया है उस पर विश्वास रखा जाय ।

(१) जो कर्म किये हैं उनका फल अवश्य मिलता है । लेकिन अगर परमात्मा के कदमों (चरणों) का आसरा लिए रहो तो कर्म आसानी से कट जाते हैं और आगे के संस्कार नहीं बनते।

(२) मन जिन चीज़ों का आदी (अभ्यस्त) हो जाता है उनको आसानी से नहीं छोड़ता, उनका चिन्तन करता रहता है और मौक़ा मिलने पर उनको भोगता है । लिहाज़ा जिन चीज़ों को आप बुरा समझते हैं, कोशिश कीजिये कि वे आपके सम्पर्क में न आयें, वरना कोशिश करने पर भी आप उनसे न बच सकेंगे ।

(३) अभ्यास पर ज़ोर दीजिये और मन को अभ्यास से किसी वक़्त भी ख़ाली न होने दीजिये ।

(४) जहाँ तक हो सके सब के साथ मिलकर सत्संग कीजिये । जो अभ्यास चल रहा है वह ठीक है । जो हालत होगी मिलने पर बता दी जायगी ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(८०)

सिकन्दराबाद

प्यारी बेटी,

खुश रहो। चिट्ठी तुम्हारी मिली। प्रकाश का दिखना अच्छा है। जगह-जगह का प्रकाश अलहदा अलहदा है और यही प्रकाश आहिस्ता-आहिस्ता रंग बदलता जायगा। जो आवाज़ें सुनाई दे रही हैं, ये सब शब्द हैं, कुछ मायावी और कुछ रूहानी (आत्मिक)। घंटे और दूसरे बाजे की तरफ ध्यान मत दो। अगर ध्यान शकल पर जमता है तो पहले उस पर ध्यान जमाओ। और शब्द के सुनाई देने पर उसको कानों से सुनो और कोशिश करो कि तबियत इसी में लय हो जाय।

मैं मार्च के आखिर हफ्ते में बनारस आऊँगा। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे घर के हालात दुरुस्त हो जायें। परमात्मा तुमको खुश रखे।
शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(८१)

(गुरुदेव का एक पत्र श्री सत्य प्रकाश जी, एडवोकेट, इलाहबाद के नाम)

सिकन्दराबाद

२४ मार्च, १९६०।

अजीजम दुआ,

खत मिला। मशकूर फ़रमाया (धन्यवाद)। मैंने श्री.....को धोतियाँ मौहब्बत के ख्याल से भेजी हैं। अगर उन्हें पसंद नहीं हैं और नौकरी पर हर्फ़ (नौकरी छूटने का डर) आता है तो मुझको दुःख होगा। यह धोतियाँ वापस कर दें। मैं खुशी से उनको वापस ले लूँगा।

मेरा अब बुढ़ापा है। ६६ वर्ष की उम्र है। कोई न कोई बीमारी लगी रहती है। अब पेशाब में शक्कर आती है और दिल के दौरों भी होते हैं। न मालूम किस वक़्त तलबी (बुलावा) हो जाय।

मैंने कई मर्तबा (बार) आने का इरादा किया लेकिन किसी न किसी बीमारी ने रोक लिया। ऐसी हालत में कैसे कोई प्रोग्राम बना सकता हूँ मेरी तबियत भी इस भागा-दौड़ी के काम से उक्त गयी है। अब यही चाहता हूँ कि एक जगह मुक्रीम (स्थायी) हो जाऊँ। आइन्दा जो ईश्वर को मंजूर है।

आप वकील हैं। एक ख्याल खुद पैदा करके या दूसरे से लेकर उसको पुख्ता (मजबूत) कर लेना और सही मान लेना और डिग्री भी पास कर देना कहाँ तक अक्लमंदी है ? मुझको न किसी से मौहब्बत है और न नफ़रत । जो मुझसे मौहब्बत करते हैं, मैं उनसे मौहब्बत करता हूँ और खिदमत को हाज़िर रहता हूँ जो बिला मुआवज़ा (बदला) है। बदला कुछ नहीं चाहता । और जो मुझसे अलहदा रहना चाहते हैं, उनके बारे में मैं सोचना भी नहीं चाहता और अलहदगी अख्तियार कर लेता हूँ। जब मुझे किसी की खुशी और नाखुशी की परवाह नहीं है, क्योंकि मुझे किसी से कुछ लेना देना नहीं है, तो फिर मैं अपना रवैया (तरीका) क्यों बदलूँगा । मेरा इष्ट एक है और वह हरवक़्त मेरे सामने है । उसी के मुताबिक़ ज़िन्दगी ढालने की कोशिश करता रहा और करता रहूँगा। कामयाबी (सफलता) कितनी हुई, रोज़ेजज़ा (परमात्मा के दरबार में पेश होने के दिन) पता लगेगी, और कामयावी होगी या नहीं यह भी वही बेहतर जानता है। जो मुझमें भलाई देखते हैं और जो मुझमें बुराई देखते हैं दोनों अक्वल अपने दिल का अक्स देखते हैं। यह दूसरी बात है कि वह बुराइयाँ मुझ में भी हों, इससे मुझे इन्कार नहीं है ।

मेरा इरादा फ़िलहाल १३ अप्रैल तक बाहर जाने का नहीं है । इसके बाद नहीं कह सकता कि बाहर जाऊँ और किधर जाऊँ। आप ज़रूर तशरीफ़ लायें। मुझको खुशी होगी और जो खिदमत में कर सकूँगा उसके लिए हाज़िर हूँ। लेकिन तशरीफ़ लाने से पेशतर मुत्तला (पहले सूचित करें) फ़रमायें टटकी मैं हाज़िर रहूँ। परमात्मा आप सबको खुश रखे ।

खैरअन्देश - श्रीकृष्ण लाल

(८२)

सिकन्दराबाद

१०-४-६०

प्रिय भाई रामसागर लाल,

.....परमात्मा की कृपा है और बुजुर्गों की साया (छत्रछाया) है, जो हालत गुज़र रही है वह बहुत ऊंची है। वर्षों के अभ्यास से भी यह हालत नहीं मिलती। हर एक को इसका शुक्रिया अदा करना चाहिए। शुक्रिया यह है कि अपने बुजुर्गों की इज़्ज़त करे और उनमें विश्वास लावे और जो काम मना है उससे बचे। परमात्मा आपको और तरक्की दे।
शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(८३)

गाज़ियाबाद

१३-४-६०

प्रिय भाई, नमस्ते।

आज मैं यहाँ आया। आपका खत मिला। आयन्दा पत्र सिकन्दराबाद के पते पर जी भेजिये।

मन को काबू में लाना बहुत ही मुश्किल काम है। वैराग्य और अभ्यास दो ही इसके साधन हैं। यह निश्चय हो जाना कि जो चीज़ें क्षण-भंगुर हैं, यानी तब्दील होने वाली हैं और उनसे हमेशा का सुख नहीं मिल सकता, उनसे अलहदगी अख्त्यार कर लेना ही वैराग्य है। परमात्मा का नाम दिल की ज़बान यानी ख्याल से लेते रहना अभ्यास है। बीच-बीच में उससे प्रार्थना करते रहना चाहिए।

अगर सतसं ज़ाहिरी न हो सके तो खतोकिताबत (पत्राचार) से सत्संग करते रहना चाहिए, इससे फ़ायदा होता है। मैं अच्छी तरह से हूँ।

परमात्मा आप सबको खुश रखे।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(८४)

गाज़ियाबाद

११-५-१९६०

प्रिय भाई, नमस्ते।

चिट्ठी तुम्हारी मिली। सच बोलना और हलाल (ईमानदारी) की कमाई पर गुज़ारा करना बहुत बड़ी तपस्या है और अगर इसी को कोई अंत तक निभा ले तो यह अकेला ही भवसागर से पार कर देगा। तुम्हारी रूहानी (आध्यात्मिक) हालत बहुत अच्छी है जिसको तुम खुद अनुभव करते हो।

परमात्मा तुम्हारा यह अहद (प्रण) निभा दें। जो उस पर भरोसा करते हैं उनके सब काम वह खुद पूरे करता है। लेकिन जल्दी नहीं, कई बार आजमाने (परीक्षा) के बाद। जो सच्चे जी से उसकी शरण ले लेते हैं वही कामयाब होते हैं। रास्ता बहुत सख्त (कठिन) और लम्बा है। प्रार्थना करते रहो कि परमात्मा तुमको कामयाब करे।

बहू को असीसा उसका हाल तुमने कुछ नहीं लिखा। उसका हाल लिखते रहा करो और अपने साथ संध्या पर बिठाया करो।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(८५)

सिकन्दराबाद

२५-५-६०

प्रिय बाबू जी,

आपकी चिट्ठी मिली। मैं इलाहबाद गया था, तीन रोज़ ठहरा। जून में गर्मी होगी, अगर परमात्मा ने चाहा तो जौलाई में बनारस पहुँचूँगा। उस वक़्त मिल लेना। अगर आदमी दोपहर

को मिल सकें तो दोपहर को सत्संग करो लेकिन अपना काम वक्त पर करते रहो ।..... बाबू इलाहबाद में मिले थे अब आज कल में मय घर में (पत्नी सहित) आ रहे हैं ।

शुभ कर्म करना और परमात्मा की याद रखना यही असली परमार्थ है और उसी के लिए अभ्यास किया जाता है । अभ्यास ध्यान से शुरू करना चाहिए। इसके बाद शब्द सुनने की कोशिश करनी चाहिए । अगर सुनाई न दे तो फिर ध्यान करना चाहिए । जिस अभ्यास में तबियत ज़्यादा लगती हो वही अभ्यास ज़्यादा करो चाहे ध्यान या शब्द सुनना जो भी हो ।

आपका दूसरा खत २५-५-६० का लिखा भी मिला । मैंने दूसरे भाइयों से इसलिए कहा था ताकि आपको सौहबत (संग) मिल जाय और काम चलता रहे। और अगर आपको एक दो आदमी अपने ख्याल के मिल जाते हैं तो काफ़ी हैं। ज़्यादा परेशान न हों ।

अंदरूनी (आंतरिक) अभ्यास करने से मन पर ज़ोर पड़ता है। पुरानी आदतें छोड़नी पड़ती हैं। इसलिए इसके अधिकारी कम मिलते हैं। इसके अधिकारी वही हो सकते हैं जो दुनियाँ से उपराम हो चुके हैं या जिनमें परमात्मा का प्रेम कुदरती (स्वाभाविक) हो । यह ख्याल तुम्हारा ठीक है कि परदा कर जाने के बाद गुरु से फ़ायदा बहुत कम लोग हासिल कर पाते हैं। फ़ायदा वही हासिल कर सकते हैं जो गुरु की ज़िन्दगी में साक्षात्कार कर चुके हों । आत्मा का साक्षात्कार कम से कम तो एक जन्म में हो पाता है वरना कई जन्म लग जाते हैं। क्योंकि वगैर मन की ख्वाहिशों के समाप्त किये और बिना बुद्धि की शुद्धि के आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता और मन की सफ़ाई और बुद्धि की शुद्धि कई जन्मों में हो पाती है । लेकिन जो कुछ मनुष्य एक जन्म में हासिल कर लेता है वह नष्ट नहीं हो पाता और दूसरे जन्म में आगे से शुरू करता है । एक तरीका ज़रूर ऐसा है जिसमें थोड़े ही दिनों में आरज़ी (अस्थायी) तौर पर आत्मा का अनुभव हो सकता है और इखलाक़ (आचरण) की तकमील (पूर्णता) यानी मन की गढ़त और बुद्धि की शुद्धि बाद को होती रहती है । यह तरीका ख़ास-ख़ास हालतों में ही काम में लिया जाता है । इसमें दो शर्तें ज़रूरी हैं। पहली यह कि गुरु मुक़म्मिल (पूर्ण) हो । दूसरी यह कि शिष्य फ़िदायी हो यानी परमात्मा के दर्शन के सिवाय और कोई चाह न हो और अपने को गुरु के लिए पूर्ण रूप से समर्पण कर चुका हो यानी गुरु के हुक़म के पालन के सिवाय और कोई धुन न हो । जब यह दोनों हालतें मिलती हों तभी काम आसानी से बनता है । मैं हरचंद

कोशिश में हूँ कि हरेक को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचे लेकिन कामयावी दूसरे के हाथ में है । परमात्मा तुमको तौकीफ़ दे (इस योग्य बनाये) और अपनी दया करें ।

मेरा इरादा जौलाई में उधर आने का है । अगर न आ सकूँ तो फिर आप तशरीफ़ ले आयें । सब उसके हाथ में है ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(८६)

सिकन्दराबाद

३१-५-१९६०

प्रिय भाई रामसागर जी,

शब्द सुनाई देने पर जुबान (जिह्वा) से ॐ के जाप की ज़रूरत नहीं है। उस शब्द को ही ॐ ख्याल कीजिए और अगर शब्द भी बन्द हो जाता है और कुछ होश नहीं रहता तो ये हालत बहुत अच्छी है ।

अपने मकान की दीवारों में आग लगाना अपनी बुराइयों को दूर करना है। लेकिन सब दूर न हो सकीं, कुछ बाकी रह गयीं। तुम्हारी हालत बहुत अच्छी है । इसके लिए परमात्मा का शुक्र करना चाहिए । असली शुकुराना (कृतग्यता) ये है कि उस पर पूरा भरोसा रखिये और गुरु में विश्वास रखिये कि वो जो कुछ भी काम करने को कहते हैं उसमें तुम्हारी ही भलाई है और उनसे प्रेम बढ़ाइये । जिन कामों से मतलब नहीं उनसे दूर रहियो। ग़ैर स्त्री और बच्चों की सौहबत से बाचिये ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(८७)

गाज़ियाबाद

३१-५-६०

प्रिय भाई शर्मा जी नमस्ते ।

चिट्ठी आपकी मिली । मैं इलाहबाद तीन दिन के लिए गया था। मैं अब अच्छी तरह हूँ । अगर मौका मिला तो जौलाई में उधर आऊँगा । सबसे बड़ी रियाज़त (अभ्यास) यह है कि परमात्मा के चरणों में ध्यान लगावें और दुनियावी तकलीफ़ें आवें तो उन्हें खुशी से बरदाश्त करें । जो बात समझ में न आवे उसे देहधारी गुरु से दरयाफ़्त (मालूम) करें और उसपर चलने की कोशिश करें । परमात्मा से प्रार्थना करें कि सहन-शक्ति दें और अपनी याद बनाये रखें । जो शख्स परमात्मा की याद में रहते हैं उनपर शैतान यानी प्रकृति (माया) का हमला नहीं होता । अपने हाल से हर माह (मास) खबर करते रहें । परमात्मा तुमको खुश रखे और तरक्की दे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(८८)

गाज़ियाबाद

२४-११-६०

प्रिय भाई, नमस्ते ।

चिट्ठी आयी, हाल ,मालूम हुआ । तुम्हारी परेशानियों को सुन कर दुःख हुआ । मेरे ख्याल में सब का कारन यह है कि तुमने विद्यार्थी अवस्था में शादी कर ली। ऐसी हालत में इन परेशानियों का आना ज़रूरी था ।

माँ-बाप शादी तो कर देते हैं लेकिन बहू के आने पर यह चाहते हैं कि लड़का उसकी तरफ़ रागिब हो (न झुके), यह नामुमकिन (असम्भव) है । इधर बहू बड़ी-बड़ी तमन्नार्यें लेकर आती है । न उसके पास रुपया होता है और न मालिक की मौजूदगी जिससे वह अपनी ख्वाहिशों को

पूरा कर सके । इन दोनों वजहों से आदमी परेशान हो जाता है, किसकी सुने और किसकी न सुने ।

अब तुमको चाहिए कि किसी की बात को न सुनो, न बहू की, न मां-बाप की। कोशिश करके इम्तिहान पास करो । जब रुपया कमाने लगोगे, सब झगड़े खुद -बखुद ही तै हो जायेंगे ।

इसके अलावा अगर और कोई तकलीफ़ हो तो साफ़-साफ़ लिखो ताकि सलाह दी जा सके ।

में अच्छी तरह हूँ । परमात्मा तुमको खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(८९)

गाज़ियाबाद

२६-११-६०

..... नमस्ते ।

आपकी चिट्ठियाँ दोनों मिलीं लेकिन चूँकि मैं गाज़ियाबाद रहता हूँ, देर से मिलीं, इसलिए देर से जबाब दे रहा हूँ ।

परमार्थ में चार बातें हायल (बाधक) होती हैं :-

- १) आलस ,
- २) स्त्री या यों कहिये " काम शक्ति"।
- ३) मन की वासनायें - जिनमें दौलत, रुपया पैसा व अन्य धन सभी शामिल हैं ।
- ४) खुदी (अहंपना)

जब इन चीज़ों से छुटकारा मिल जाता है तभी परमार्थ की कमाई शुरू होती है । इन चीज़ों का बराबर हमला होता रहता है, कभी कम और कभी ज़्यादा । इनको छोड़ना ही असली

तप है । लेकिन लाखों में से एकआध कामयाब (सफल) हो सकता है, पर तरक्की हर कोई कुछ न कुछ कर सकता है ।

इस तरह कई जन्मों में पार हो जाता है । छोड़ने से पहले एक हालत और भी आती है जिसमें इन चीज़ों को भोगता तो है लेकिन ख्वाहिश (इच्छा) जाती रहती है । ऐसी हालत में वह संयमी हो जाता है, यानी एतदाल (संतुलन) के साथ भोगता है । इन चीज़ों को तुम अभी नहीं छोड़ सकते, इसमें वक़्त लगेगा, लेकिन संयमी हो जाओ, यानी ज़रूरत के मुआफ़िक भोगो ।

शुभचिन्तक : श्रीकृष्ण

(९०)

गज़ियाबाद

२४-११-६०

प्रिय भाई

आपकी चिट्ठी मिली, हाल मालूम हुआ । मन की हालत एक दरिया (नदी) की लहर की तरह होती है। एक हालत पर कभी कायम नहीं रहती। मुझसे एतकाद (विश्वास) रखने का कोई सबाल नहीं। परमात्मा है और अवश्य है। अगर हम अपनी गलतियाँ दूर करना चाहते हैं तो उसका ध्यान करना भी ज़रूरी है। तरीका जो बताया गया है वह उसी की पूजा का है। एतकाद (विश्वास) परमात्मा और तरीके में होना चाहिये। गुरु तो महज़ एक ज़रिया है।

अभ्यास करते रहो। उसमें विश्वास रखो। दुनियाँ के मामलों में ज़्यादा मत फंसो। तबियत को शान्ति रहेगी और आनन्द मिलेगा। यही असली फ़ायदा अभ्यास का है।

मैं दिसम्बर के आखिरी हफ़्ते में वहाँ आऊँगा। आयन्दा परमात्मा बेहतर जानता है। सब भाइयों को नमस्ते ।

शुभचिन्तक- श्रीकृष्ण

गज़ियाबाद

२७-११-६०

प्रिय भाई नमस्ते ।

आपका २२ नवम्बर का खत मिला। मैं अच्छी तरह से हूँ परमात्मा का शुक्र है ।

दो रास्ते हैं (१) कर्म का, (२) दया का ।

कर्म का रास्ता ऋषियों का है और दया का रास्ता भक्तों का है । कर्म के रास्ते के लिए तमाम क्रायदे और कानून हैं। दया के रास्ते के लिए न कोई क्रायदा है न कानून । उसकी दया ही दया है। या तो सब कुछ उसी पर छोड़ दीजिये, वह चाहे जो कुछ करे, वह मालिक है । तमाम उम्र में इन्सान से वह नहीं हो सकता जो इसकी दया से एक पल में हो जाता है । पलक मारते ही तमाम जन्मों के कर्म कट जाते हैं और फिर अगर उसका प्रेम मौजूद है तो चाहे हज़ारों जन्म हों और महा तकलीफ़ में कटें, क्या परवाह - सिर्फ़ प्रेम का सहारा चाहिए । परमात्मा करे तुम्हें खुद अनुभव हो । जो शक्ति और चीज़ मिले, उसी पर न्योछावर कर दो सिर्फ़ प्रेम की भीख मांगों और बस ।

मैं इलाहबाद २३ को पहुँचूँगा। २६ को वहाँ से चल दूँगा। ३० तक बनारस रहूँगा और ६ तक गोरखपुर । आगे जो परमात्मा की मर्जी ।

परमात्मा आपको खुश रखे ।

शुभचिन्तक-श्रीकृष्ण

(९२)

गाज़ियाबाद

२८-११-६०

प्यारी बेटी, खुश रहो ।

चिट्ठी तुम्हारी आयी । स्त्री का शरीर अपने पति और लड़कों का है । गुरु का तो सिर्फ़ मन होता है । तुम जैसी चाहो खिदमत अपने ख्याल से कर सकती हो और उससे तुमको फ़ायदा होगा, लेकिन जिस्म (शरीर) को छूना (पाँव दबाना) पाप है चाहे वह बाप का ही क्यों न हो ।

मैं अच्छी तरह हूँ । परमात्मा तुमको खुश रखे ।

शुभचिन्तक- श्रीकृष्ण

(९३)

गाज़ियाबाद

१२-१२-६०

प्रिय भाई, नमस्ते।

आपका कृपा पत्र मिला। हाल मालूम हुआ । परमात्मा आपको और तरक्की दे । अगर ईश्वर को मंज़ूर है तो मैं पहली जनवरी को गोरखपुर पहुँच जाऊँगा ।

दिल के आईने में है तस्बीरे यार,

जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली

ख्याली शकल दिल के मन्दिर में रखनी चाहिए। तस्बीर में स्थूलता है और फिर वह मूर्ति पूजा में आ जाती है। फिर भी आपकी ख्वाहिश पूरा करने के लिए मैं फोटो भेजने की कोशिश करूँगा। इस वक्त मौजूद नहीं है ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

गाज़ियाबाद

१२-१२-६०

..... नमस्ते ।

मैं आजकल गाज़ियाबाद में रह रहा हूँ । कल सिकन्द्राबाद गया था तो आपका खत मिला । मैं मथुरा १५ ता । को दोपहर को पहुँचूँगा और शिकोहाबाद १८ ता० को शाम को साढ़े आठ बजे को गाड़ी से पहुँचूँगा और २० ता० सवेरे कानपुर चला जाऊँगा ।

ब्रह्मविद्या के अभ्यास के लिए ज़रूरी है कि साधन भी हों और साथ ही साथ सत्संग। वगैर दोनों बातों के रास्ता तै नहीं हो सकता। आपने अभ्यास को ज़रूरी समझा और सत्संग को त्याग दिया, इसलिए यह हालत हुई। वक्त का न मिलना मन का बहाना है। सब बातों के लिए वक्त मिलता है लेकिन सत्संग में आने के लिए वक्त नहीं मिलता। भाई की नाराज़गी, बीमारी का बहाना, छुट्टी का न मिलना, यह सब रूकाबटें सत्संग के लिए ही आती हैं। शमा (दीपक) जल रही है, यह परवाने के किये पैग़ाम है कि आये और जले और ज़िन्दगी (जीवन) हासिल करे। उसका जलना ही लोगों को बुलाना है। अगर मक्खी नहीं आती और दूर रहती है तो इसमें शमा (दीपक) का क़सूर है या मक्खी का। गुरु का दया का हाथ तो हर वक्त है और हर वक्त उसकी ख़्वाहिश है कि साधक सीधे रास्ते पर आ जाय लेकिन जब तक यह दुनियाँ की वासनाओं को नहीं छोड़ता, उसको हाथ नज़र नहीं आता ।

सख्ती हरेक के साथ नहीं की जाती और उससे फ़ायदा भी कुछ नहीं। आप खुद समझदार हैं। सोचिये और जबाब आपको खुद मिल जायगा ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्द्राबाद

४ -२-६१

प्रियबाबू जी, नमस्ते ।

आपकी चिट्ठी मिली । मैं २३ -१-६१ को वापिस आ गया हूँ । जब से आया हूँ, बीमार हूँ बुखार तो अब नहीं है लेकिन खांसी व कमजोरी बराबर चल रही है । मैं मथुरा से चलते समय टूँडला एक घंटे के लिए ठहर गया था । टूण्डले पर ३-४ घंटे इन्तज़ार किया और जब कोई बस आगरे नहीं आयी तो मज़बूरन रेल से शिकोहाबाद आया। घर का पता मालूम नहीं था इसलिए दिक्कत हुई। मथुरा या आगरा जाने का ख्याल तक नहीं आया । आप किताब पढ़ते रहियेगा, मैं समझने की कोशिश करूंगा ।

खैरात (दान) का रुपया अलहदा जमा करते रहियेगा । जहाँ ज़रूरत समझें खैरात करते रहियेगा। जो बचेगा साल के आखिर में, मैं बतला दूँगा कि कहाँ लगाना है। जब भी परमात्मा को मन्ज़ूर होगा, मैं वहाँ आऊँगा ।, अभ्यास बराबर करते रहियेगा । इसका फ़ायदा आपको आगे चलकर मालूम होगा । परमात्मा के प्रेम के सभी अधिकारी हैं, जिनमें भी इन्सानी रूह (आत्मा) है वही उसका अधिकारी है। इनमें लाखों में से एक भी निराश नहीं जाता। वह हर वक़्त गोद फैलाये तैयार बैठा रहता है, सिर्फ़ उस और जाने की ज़रूरत है । निराशा के ख्याल को अपने दिल में जगह न दें, इससे कमजोरी आती है । विश्वास रखिये, ज़रूर कामयाबी होगी । ज़रूरत इस बात की है कि जो बात बतलायी जावे उस पर अमल करने की कोशिश की जावे क्योंकि जो रास्ता चल चुका है वह उसकी गुत्थियों (ग्रंथियों) और रास्ते से बाकिफ़ (परिचित) है ।

**ब मैं सज्जादा रंगी कुन गरत पीरे मुर्गा गोयद
कि सालिक बेखबर न बुचद जि राहो रस्म मंज़िल हा**

मतलब कि अगर तेरा गुरु कहे कि अपने संध्या के कपड़ों को, जो बहुत पवित्र हैं, शराब से जो निहायत ना-पाक (अपवित्र) चीज़ है, रंग दे, तो तुरन्त वैसा कर डाल क्योंकि रास्ते का जानने वाला उसकी पेचीदगियों (ऊँच-नीच) से ख़ुब वाकिफ़ है। मतलब यह है कि

गुरु धर्म-शास्त्र के खिलाफ भी कोई बात करने को कहे तो कर डालनी चाहिए क्योंकि वह खूब जानता है कि उसमें साधक की क्या बहतरी (भलाई) छुपी हुई है ।

उस पर विश्वास करके और अपना हमदर्द समझ कर उसके कहने पर अमल करना चाहिए, इसी का नाम विश्वास है । ऐसा करने से प्रेम मिलेगा । यही सीधा और सच्चा रास्ता है । अगर शुरू से ही हुक्म के मानने को तर्क (छोड़ना) किया जायगा कि क्यों और किस वास्ते किया जाय तो कामयाबी मुश्किल से होगी । शुरू में यह बात न समझ में आ सकती है और न समझायी जा सकती है । आप में अधिकार भी है और ख्वाहिश (इच्छा) भी है । कोशिश करने और विश्वास करने की ज़रूरत है । ज़रूर कामयाबी होगी। मैं दुआ करता हूँ कि परमात्मा आपको अमल की तौफ़ीक़ (योग्यता) दे और श्रद्धा बढ़ाये। परमात्मा ने चाहा तो दोनों बच्चे कामयाब (पास) होंगे । बहन को नमस्ते, बच्चों को प्यार ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(९६)

सिकन्द्राबाद

५-३-१९६१

प्रिय भाई रामसागर जी,

सत्संग में बराबर जाते रहना बड़ा अच्छा है। सबके साथ मिलकर (बैठने से) ज़्यादा तरक्की होती है। मन तो हमेशा हर एक को तंग ही करता रहता है। यह मरता नहीं है। इसको बराबर दुरुस्त करते रहना चाहिए। आलस को रोकने के लिए कम और ताज़ा खाना चाहिए। अभ्यास में जल्दी नहीं करना चाहिए। आहिस्ता-आहिस्ता मन को ठीक करना चाहिए।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(९७)

सिकन्द्राबाद

५-३-६१

प्रिय भाई, नमस्ते ।

कार्ड मिला । दुनियाँ में सब कामों के लिए समय मिलता है लेकिन नहीं मिलता तो राम का नाम के लिए समय नहीं मिलता और सिवाय राम नाम के कोई काम नहीं आता। इसी मूर्खता में तमाम संसार फँसा हुआ है और तुम भी फँसे हो। अगर ज़िन्दगी का कुछ लाभ उठाना चाहते हो तो इस मूर्खता को दूर करो और जहाँ तक मुमकिन हो सत्संग में जाओ ताकि तरक्की हो । इस रास्ते में अपना बल कुछ काम नहीं देता। गीता या किसी धार्मिक पुस्तक का पढ़ना अच्छा है लेकिन नाम की महिमा सबसे ज़्यादा है जो सच्चे दिल से लिया जाय । सच का पालन करो । दुनियाँ के झगड़ों से दूर रहो, तभी कुछ फ़ायदा हो सकता है ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(९८)

गज़ियाबाद

३०-१-६९

प्रिय रामसागर बाबू,

दुःख में परमात्मा को याद न करना और संध्या छोड़ देना अपनी कमज़ोरी बतलाता है । यह बतलाता है कि बनिस्बत परमात्मा की याद के दुनियाँ के कामों की ज़्यादा क़दर है । परमात्मा की याद किसी हालत में नहीं भूलना चाहिए । सुख-दुःख तो आते ही रहेंगे । ऐसा कौन है जो इनसे बचा है । इनसे घबराना नहीं चाहिए । परमात्मा पर भरोसा करो और मुसीबत का सब्र से मुक़ाबिला (सामना) करो ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्द्राबाद

१-८-१९६१

प्रिय भाई, नमस्ते ।

चिठी मिली । असली परमार्थ यह है कि दुनियाँ की सब ख्वाहिशात (इच्छायें) मिट कर या भोग कर खत्म हो जायें, मन दुनियाँ से उपराम हो जाये। यही असली वैराग्य है । आत्मा मन के ऊपर आ जाय यानी परमात्मा से सच्चा प्रेम हो जाय । यह सब सच्चे गुरु से प्रेम, सत्संग और अभ्यास से ही हो सकता है । लेकिन यह काम वर्षों के और आहिस्ता -आहिस्ता के हैं। अभ्यास करते रहो । दुनियाँ से उतना ही वास्ता रखो, जितना ज़रूरी है । जिस हालत में उसने रखा है उसी में खुश रहो । दुःख और सुख दोनों हालतों में एक समान रहो । न दुखी हो और न सुखी। दुनियाँ उसकी है, वही मालिक है, उसके आगे अपनी ख्वाहिश (इच्छा) पेश करना सख्त गुस्ताखी (ढीठपना, मूर्खता) है । दुःख हो या सुख खुशी से सहन करो, क्योंकि वह तुम्हारे प्रीतम की निशानी है ।

(१) विश्वास रखो कि वह सब जगह मौजूद है।

(२) वह सर्व -शक्तिमान है ।

(३) कोई कार्य बिना उसके हुकम के नहीं हो सकता। जो काम तुम्हारे मुताबिक (योग्य) है उसी में तुम्हारी भलाई है और हर हालत में वह तुम्हारे फ़ायदे के लिए है । ऐसा पक्का विश्वास करके और सच्चे दिल से उसका नाम लो, अपना सब बोझ उस पर डाल दो, उसी का आसरा लो, उसी से मदद माँगो और उसकी दया पर पूरा भरोसा रक्खो। यही सच्चा मार्ग है। इसी पर चलकर शान्ति मिल सकती है। परमात्मा तुम्हें सच्चा ज्ञान दे, आप तशरीफ़ लाइये और अपने साथ अपनी वाईफ (पत्नी) व बच्चों को भी लाइये। मैं १० ता० को एक सप्ताह के लिए मैनपुरी जा रहा हूँ ।

परमात्मा तुम सबको खुश रखे ।

आपका शभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१००)

सिकन्द्वाबाद

३-१०-१९६१

अज़ीज़म दुआ (गिरिजानन्द लाल)

आपकी चिठ्ठी २४ -८-६१ को मिली । कुछ कामों के कारण जल्दी जबाब नहीं दे सका । हमारे यहाँ का तरीका श्रद्धा और विश्वास का है । पहला विश्वास परमात्मा पर, दूसरा संत मत के अक्रीदों (सिद्धांतों) पर, तीसरा गुरु पर । जो गुरु के सिवाय दूसरी जगह इधर-उधर भटकते फिरते हैं, उनको फ़ायदा नहीं होता । एक को पकड़ना चाहिए और दूसरे का ख़याल तक नहीं आने पाये, तभी फ़ायदा होता है । जो अनाधिकारी हैं, उनसे कुछ नहीं कहा जाता और न उनको तम्बीह (सावधान) की जाती है और न उनकी कोई परवाह की जाती है । जो अधिकारी हैं, उनको फटकारा भी जाता है और बाज़ (विशेष) हालतों में सज़ा तक दी जाती है ताकि वे ठीक रास्ते पर कायम रहें । तुमसे कहने का मतलब नाराज़गी नहीं था बल्कि अपनी ग़लती से आगाह (जानकारी) करना था । अपने अक्रीदों (विश्वास) को ठीक रखो । परमात्मा चाहेगा तो बराबर तरक्की होगी । परमात्मा तुम्हें खुश रखे । बच्चों को प्यार ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१०१)

सिकन्द्वाबाद

४-११-६१

प्यारी बेटी , खुश रहो ।

आपकी २४ अक्टूबर की चिठ्ठी मिली । जो परमार्थी जीव हैं उनको दुनियाँ अच्छी नहीं लगती क्योंकि जो चीज़ वे चाहते हैं वह दुनियाँ में नहीं है । इसी वजह से तबियत घबराती

रहती है। लेकिन दुनियाँ में रहना है और यहाँ के फ़र्ज़ (कर्तव्य) पूरे करने हैं। तुम्हारा प्रियतम हर वक़्त तुम्हारे साथ है। आहिस्ता-आहिस्ता दुनियाँ से अलग होते जाओ और उसके चरणों में प्रीति जोड़ो। जिस रोज़ उसके पवित्र चरणों में दिल लग जायगा, मन शान्त हो जायगा। अभी तक दूरी है, मिलाप नहीं हुआ है। दोनों को निभाना है - दुनियाँ और दीन (लोक और परलोक)। ज़ाहिरी दुनियाँ से वास्ता रखो और अन्दर से आहिस्ता-आहिस्ता सबसे अलग हो जाओ। उस पर भरोसा रखो। वह सब देखता है। जब वक़्त आएगा, सब काम हो जायेंगे।

मैं अच्छी तरह हूँ। परमात्मा तुम्हें खुश रखे।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१०२)

गज़ियाबाद

२९-१२-६१

प्रिय भाई, नमस्ते।

सब लोगों को अपनी हालत की समझ नहीं होती। दूसरे, जब तक तवज्जो (सुरत) का आधा अंश रज से निकलकर सत पर नहीं आ जाता, हालत का अन्दाज़ा नहीं होता। तम से आलस, कामेन्द्री भोग और गुस्सा अधिक होता है। रज में दीन और दुनियाँवी ख्वाहिशात (लोक परलोक की इच्छाएं) होती हैं और मनुष्य उनको पूरा करने की कोशिश करता है। सत में धर्म से प्यार, इन्द्रिय-दमन, दया और दान होता है। तीनों हालतें साथ-साथ रहती हैं। कभी किसी का उभार और कभी किसी का उभार होता रहता है।

तुम्हारी हालत तम से निकलकर रज पर है लेकिन अभी सत की तरफ़ कम है। अभ्यास किये जाओ और परमात्मा से प्रार्थना किये जाओ, इन दोनों से ही हालत बदल जायगी।

मैं अच्छी तरह से हूँ। परमात्मा तुम सबको खुश रखे। सब भाइयों को नमस्ते।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१०३)

सिकन्द्राबाद

२८-५-६२

प्रिय भाई सच्चिदा बाबू, नमस्ते ।

मुझको बड़ी खुशी होगी जिस रोज़ तुम सच्चे मायने में जो कुछ तुम्हारे पास है मुझको दे दोगे और बतौर कारिन्दे के काम करोगे । कारिन्दे का काम मालिक की मर्जी पर काम करना है और जहाँ और जैसे रखे उसमें खुश रहना चाहिए ।, यही असली मुक्ति है। तुमको चाहिए कि मैं जहाँ और जैसे रखूँ उसी तरह खुश रहो । इसमें बड़ी शान्ति है । परमात्मा तुमको शक्ति दे ।

मेरा जून में आने का कोई निश्चय नहीं है । कटो की तबियत खराब चल रही है और गर्मी भी बहुत बढ़ रही है । इसलिए सब बाल बच्चों को लेकर यहाँ आ जाओ ।

परमात्मा तुमको खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१०४)

सिकन्द्राबाद

७-६-६२

प्रिय भाई, खुश रहो ।

चिठी मिली, हाल मालूम हुआ। मन की तीन अवस्थायें हैं । तम, रज और सत। जब मन में बहुत सी फिकरें और ख्वाहिशात (चिन्ताएँ और इच्छायें) होती हैं तो यह हालत रज की है । इसमें मन चंचल और परेशान रहता है । जब कोई ख्याल नहीं रहता तो मन सो जाता है । यह अज्ञान की अवस्था है इन दोनों अवस्थाओं से मन को निकालना चाहिए क्योंकि इन दोनों में मन परेशान रहता है या अज्ञानी बना रहता है । यानी सच्चा ज्ञान नसीब नहीं होता । सच्चा ज्ञान हासिल करने के लिए मन को सत पर लाना होता है। यह तभी हो सकता है जब ईश्वर

का ध्यान करें और ईश्वर की मर्जी में खुश रहें। जब मन की यह 'सत' अवस्था होती है, मन तभी शान्त होता है और आत्मा उसके जाल से निकलकर अपने असली रूप का अनुभव करती है। इस दशा को हासिल करने का साधन सत्संग और अभ्यास है। अभ्यास बराबर करते रहो। परमात्मा तुमको सच्चे रास्ते पर बनाये रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१०५)

सिकन्दाबाद

१४-६-६२

प्यारी बेटी, खुश रहो ।

तुम्हारी चिट्ठी १८ मई को मिली । दुनियाँ में हजारों चीज़े हैं जिनकी लोग इच्छा करते हैं । जिस मनुष्य के दिल में जिस वास्तु की इच्छा छिपी रहती है वह उसी को अच्छा समझता है ।, उसी में लगा हुआ है । वह अपने को सही और सबको ग़लत समझता है । जब अपनी गरज़ (स्वार्थ) की पूर्ति में दूसरों को सहायक नहीं पाता तो उनको खुद-गरज़ (स्वार्थी) समझने लगता है और दुखी होता है। दूसरों को देखकर उनको खुद-गरज़ (स्वार्थी) बताता है और अपने को नहीं देखता जो खुद खुद-गरज़ है। फिर शिकायत क्यों ?

असली मौहबत यह है जो दूसरों की भलाई के लिए हो और अपनी गरज़ उसमें कुछ भी न हो । इस हिसाब से सिवाय ईश्वर के और उन भक्तों के जो उसमें लय हो चुके हैं और ईश्वर की सिफ़तें (गुण) हासिल (प्राप्त) कर चुके हैं और कोई सच्ची मौहबबत नहीं कर सकता ।

जीवन सुख से बिताने का तरीका यह है कि जो कर्तव्य ईश्वर ने तुम्हें सुपुर्द किया है उसको पूरा करो । और कोई गरज़ किसी से न रखो । ईश्वर पर पूरा भरोसा रखो और उसी से प्रेम करो । तभी सुख मिल सकता है, वरना हमेशा दुखी रहोगे । परमात्मा ने तुम्हारी तक्रदीर पहले ही लिख दी है, उसे कोई भी शक्ति नहीं मिटा सकती और न बना सकती है । ज़िन्दगी अपने कर्मों से बनती है । इसलिए अगर खुश रहना चाहती हो तो

ईश्वर के नाम और ध्यान को अपनी ज़िन्दगी का मुख्य कर्तव्य समझो । बाकी जो कर्तव्य तुम्हारे सुपुर्द हैं, अर्थात् रिश्तेदारों की मदद और उनकी खिदमत, उसको अदा करो । जो काम करो ईश्वर को खुश करने के लिए करो । हर काम में उसका भरोसा रखो । इससे तुमको उसका प्रेम मिलेगा । और उसका प्रेम असली प्रेम है । यही ज़िन्दगी का सार है । इसको पाकर तुम कृत-कृत्य हो जाओगी । अगर तुम अपना ध्यान उसी के चरणों में लगाए रखोगी तो शान्ति मिलेगी ।

कोई किसी को न सुख पहुँचा सकता है और न दुःख । सब उसी की मर्जी से होता है । परमात्मा ही सच्चा बाप है।और वह इतना प्यार करता है कि हम उसका अनुमान नहीं कर सकते, परन्तु अँधा प्राणी उसकी और देखता भी नहीं, इसलिए दुखी है। तुम उसकी और देखो तब मालूम होगा कि वह कितना प्यार करता है । सबका प्यार करना धोखा और खुद-गर्जी है ।

मैं अच्छी तरह से हूँ । बाहर जाने का इरादा नहीं है । कभी कभी देहली गाज़ियाबाद जाता रहता हूँ । जो खत भेजो सिकन्द्राबाद के पते पर ही भेजना । परमात्मा तुमको खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१०६)

सिकन्द्राबाद

प्यारी बेटी, खुश रहो ।

तुम्हारी चिठी मिली। मेरी तबियत ठीक है। संध्या करना इन्सान का पहला फ़र्ज है । इन्सानी चोला बार-बार नहीं मिलता। इसको आज-कल पर नहीं टालना चाहिये । दुनियाँ के काम चलते ही रहते हैं और कभी खत्म नहीं होते। इसकी वजह से संध्या का टालना ग़लती है और इस ग़लती की जिम्मेवार तुम हो, और इसका नुक़सान भी तुम्ही को उठाना होगा । परमात्मा तुमको ज्ञान दें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्द्वाबाद

२६-६-६२

प्रिय भाई,

परमार्थ के मायने हैं मन की सबसे बड़ी ख्वाहिश की पूर्ति । संसारी जीव जो दुनियाँ में फंसे हुए हैं उनका परमार्थ मन की ख्वाहिशात (इच्छाओं) का पूरा करना है , यानी जीवन को बेहतर बनाना, दुनियाँ के पदार्थों को हासिल करना और आराम से ज़िन्दगी बसर (व्यतीत) करना है ।

संतों का परमार्थ इससे आगे है । दुनियाँ के पदार्थों का हासिल करना और उनको तजर्बे के बाद एक-एक करके त्याग देना और सच्चा आनन्द, पूर्ण-ज्ञान और ईश्वर का प्रेम हासिल करना। यह तभी हो सकता है जब तमाम दुनियाँ की चीज़ों को एक-एक करके त्याग दिया जाय। **क्योंकि जब तक दुनियांवी (सांसारिक) चीज़ों में प्रेम है , ईश्वर का प्यार नहीं मिल सकता।** दुनियावी चीज़ों में सुख व आनन्द थोड़ी देर का है और उसे छोड़ते वक़्त उतना ही दुःख होता है जितना मिलने के वक़्त सुख हुआ था । इसलिए दुनियावी चीज़ों में सुख के साथ दुःख लगा रहता है । उनमें हमेशा का आनन्द न पाकर छोड़ देना और इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता तमाम दुनियावी चीज़ों से मन को हटा लेना है । **त्याग मन से होता है न कि चीज़ों को छोड़ देने से ।** जब मनुष्य तमाम चीज़ों से मन के लगाव को हटा लेगा तब परमात्मा का प्रेम और सच्चा आनन्द और सच्चा ज्ञान मिलेगा । और यही तमाम दुनियावी व बहिशती (स्वर्गीय) ख्वाहिशों (इच्छाओं) का निचोड़ है । यही इन्सान की सच्ची और सबसे बड़ी ख्वाहिश है और यह ईश्वर की नज़दीकी से ही मिल सकती है । यह है संतों का परमार्थ। - दुनियाँ की चीज़ों से आहिस्ता-आहिस्ता उपराम होकर उनको छोड़ते जाना । जिसके बाद सच्चा और हमेशा का सुख, सच्चा ज्ञान और परमात्मा से अनुराग हो जाता है। इसी से मुक्ति यानी दुनियाँ में आना-जाना बंद हो जाता है। **क्योंकि हम जिस गरज़ (आशय) से दुनियाँ में आते हैं वह पूरी हो जाती है।**

हर काम के करने का फल मिलता है लेकिन जो काम सोच समझकर अपने लक्ष्य को सामने रखकर और ठीक युक्ति से किया जाता है उसका फल भी पूर्ण रूप से मिलता है और जल्दी और आसानी से मिलता है ।

जो शख्स ईश्वर की भक्ति दुनियावी गरज़ को पूरा करने के लिए करते हैं, वह झूठी भक्ति है। उससे संतों का परमार्थ जो असली चीज़ है, वह नहीं मिलता। दुनियावी सामान पिछले संस्कारों व इस जन्म के कर्मों का फल है । ईश्वर की भक्ति से ये चीज़े नहीं मिल सकतीं चाहे कितनी ही मुद्त (समय) और कितने ही ज़ोर शोर के साथ की जाय। उसके लिए उस चीज़ का जो मालिक है, यानी जिस देवता के हाथ में है उसकी भक्ति की जाय, वही उसे दे सकता है। जैसे लक्ष्मी, सरस्वती, विष्णु भगवान । दूसरे किस्म की भक्ति वह है जो ईश्वर के प्रेम के लिए की जाती है, उसमें दुनियावी ख्वाहिश शामिल नहीं होती, यह भक्ति अगर्चे (यद्यपि) कच्ची ही क्यों न हो, यानी कभी ईश्वर की तरफ़ रग़बत (झुकाव) होती हो, कभी नहीं, तब भी एक दिन पक्की हो जायगी और ईश्वर का प्रेम हमेशा के लिए मिल जायगा और इसके बाद आवागमन के चक्कर से छूट जावेगा ।

इसलिए जो शख्स दुनियावी चीज़े चाहता है उसे देवताओं की, जो दुनियाँ की चीज़े देने वाले हैं, पूजा करनी चाहिए। और जो शख्स दुनियाँ से उपराम हो गए हैं और इस आने जाने से निकलना चाहते हैं उनको ईश्वर की भक्ति करना चाहिए।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्दाबाद

१७-१०-६२

प्रिय भाई, नमस्ते ।

चिठी आपकी मिली । जब आदमी के सँस्कार उभरते हैं तो ज़बरदस्ती उसे अपनी तरफ़ खींच ले जाते हैं। चाहे वह कितना भी निकलना चाहे, नहीं निकलने देते और फिर एक सँस्कार खत्म होने के बाद दूसरा सँस्कार उभर खड़ा होता है और आखिर-दम (अंतिम समय) तक यही होता रहता है। इसका इलाज यही है जो आप खुद कर रहे हैं । अपनी कोशिश में कमी न रहे। ईश्वर से प्रार्थना करो और रोओ । जब उसकी कृपा होगी सब ठीक हो जायेगा। फिर इसके सिवाय हम-आप कर ही क्या सकते हैं । उसके रहम पर निगाह है, उस पर छोड़ दो । जो चाहे करे। तुमने शादी की, एक सँस्कार से निबट गए, लेकिन क्या और सँस्कार भोगने को नहीं हैं ? घबराओ नहीं । चलते चलो । मैं भी दुआ करूँगा तुम्हारी हालत सुधरे । और यह तो उम्र भर भुगतना ही है । इससे क्यों घबराते हो ? मेरी खुद यही हालत है । उसी का आसरा है । वही पार लगावेगा। तुम्हारी हालत का मुझे अन्दाज़ा था जब तुम आये थे । शुरू में तो तुम्हारे सँस्कार अच्छे थे और तुम वगैर मेहनत के ठीक चल रहे थे । अब बुरे सँस्कार उभरे हैं। इससे क्यों घबराते हो ? जो कटे सो अच्छा है। अपनी हालत का अन्दाज़ा होना और हरेक ख्याल को देखते रहना तरक्की की निशानी है, लेकिन तुम अपने आपको मन समझ रहे और कर्ता समझते हो। इसीलिए दुखी हो। तुम आत्मा हो और आत्मा का काम सिर्फ़ शक्ति देना है और वह साक्षी है, कर्ता-धर्ता नहीं, कर्ता मन है । अगर अपने आपको साक्षी समझो तो परेशानी दूर हो जाय। सूर्य चमक रहा है । उसकी रौशनी फूल पर भी पड़ती है और मैले पर भी पड़ती है लेकिन उसको इससे गरज़ (मतलब) नहीं और न ही वह इसको जानता है कि वह रौशनी मैले को दे रहा है या फूल को। वह तो सिर्फ़ रौशनी देता है । आत्मा बचे हुए संस्कारों को रौशनी देती है उन्हें उभारती है और शांति देती है और यह भी समझती है कि ये सँस्कार अच्छे हैं या बुरे और उनसे अपनी रूचि के माफ़िक मौहब्बत या नफ़रत करती है । अपने आपको कर्ता समझती है । इसीलिए खुश होती है और दुखी होती है और आइन्दा के लिए सँस्कार बनाती है।

अगर वह अपने असली रूप को समझकर सिर्फ द्रष्टा बनी रहे और कर्ता न बने तो न दुखी हो और न सुखी और न आगे के संस्कार ही बनें। इसलिए भाई, जो ख्याल तुमने अपने मन में किसी वक्त में जमा किये हैं वो जरूर सामने आयेंगे। उस ईश्वर से प्रार्थना करते रहो कि बुरे ख्यालों से बचाये। ऐसी जगह से परहेज करो जहाँ वह ख्याल ताकत पायें। उसके चरणों में ध्यान लगाओ और उसी का आसरा पकड़ो, चाहे बुरा हो या भला।

परमात्मा तुम पर कृपा करेगा। बच्चों को प्यार।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१०९)

गज़ियाबा

१०-१२-६२

प्यारी बेटी, खुश रहो।

मैं बाहर गया हुआ था। आज आपकी चिट्ठी मिली। जब मैं उधर आऊँगा तो आपको खबर कर दूँगा।

मन हमेशा बेफ़ायदा इधर-उधर की सोचता रहता है और जब तक वह सोचता रहेगा सन्ध्या में मन नहीं लगेगा। इसलिए उसको बेफ़ायदा उमंगों से हटाना चाहिए। लेकिन चूँकि वह मुद्त से इन बातों को सोचता रहा है, एक साथ नहीं छोड़ता, समय लगता है। लेकिन अभ्यास और गुरु के प्रेम में फंस कर आहिस्ता-आहिस्ता शांत होने लगता है। इसलिए अभ्यास करती रहो और कभी उसको न छोड़ो और गुरु की बातों को सोचकर प्रेम बढ़ाओ। जितना ही यह बढ़ता जायगा, मन शांत होता जायगा। खत बराबर लिखती रहो।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्द्वाबाद

१९-११-६३

अजीजमबाबू,

दुआ । परमात्मा आपको खुश रखे और सच्चे रास्ते पर कायम रखे । असली गुरु ईश्वर है । सच्चे भक्त के द्वारा उस तक रसाई (पहुँच) हो सकती है । उसका ध्यान ही ईश्वर का ध्यान है। देहधारी गुरु का धर्म यह है कि वह उसको सही रास्ता बतादे और समय-समय पर सहायता देता रहे । जब इस तरह से जीव गुरु द्वारा आत्मा या परमात्मा तक रसाई कर लेता है तो फिर अन्दर से उसको निर्देश (instructions) मिलते रहते हैं । लक्ष्य सब का एक ही है लेकिन वहाँ तक पहुँचने का साधन सबका अलग-अलग है और उसको निर्देश (instructions) बुद्धि द्वारा आत्मा से अन्दर से मिलते रहते हैं। यह निज-अनुभव है। कभी-कभी अपने अहं अर्थात् इच्छाओं के कारण यह ग़लत भी हो जाता है इसलिए यदि शरीरधारी गुरु वर्तमान है तो उसकी पुष्टि करा ली जाया मैं चाहता हूँ कि आप दीन और दुनियाँ (लोक और परलोक) में तरक्की करें..... इस प्रकार यदि ईश्वर चाहेगा तो यह चेतावनी (हिदायत) स्वयँ आपको अन्दर से मिलेगी ।

बुरे आदमियों को बुराइयों के कारण छोड़ना नहीं है, बल्कि उन्हीं का उद्धार करना है । परमात्मा ने चाहा तो सब बुराइयाँ जाती रहेंगी ।

मैं अच्छी तरह से हूँ । पोस्ट मास्टर साहब और सभी सत्संगी भाइयों को नमस्ते ।

परमात्मा आपको खुश रखे। बच्चों को प्यार ।

आपकी भलाई चाहने वाला - श्रीकृष्ण

सिकन्द्राबाद

४-१२-६३

प्रिय भाई, नमस्ते ।

चिट्ठी आपकी आयी । हम सब की यही हालत है । एक कर्म कटने नहीं पाता कि सैकड़ों नए कर्म आ घेरते हैं। इनसे छुटकारा पाना नामुमकिन (असम्भव) नहीं तो नामुमकिन सा जरूर है । प्रभु की कृपा वगैर गुरु कृपा के नहीं होती और गुरु कृपा वगैर निज कृपा के नहीं होती। निज कृपा यह है कि 'सत' पर चलो जिससे मन शुद्ध हो और मन के शुद्ध होने से बुद्धि की शुद्धि होती है । और बुद्धि की शुद्धि होने से सच्चा ज्ञान मिलता है और अपना रास्ता खुद निकाल लेती है । सत के रास्ते पर चलने से हमेशा-हमेशा की शान्ति और भरपूर आनन्द, जो कभी खत्म न हो, जिसके बाद किसी और आनन्द की ख्वाहिश ही न रहे, मिलता है। ऐसा आनन्द मिलने पर सब ख्वाहिशात (इच्छाएं) लय हो जाती हैं और इन्सान आवागमन से छूट जाता है। यही निर्वाण पद है और यही मोक्ष है। सत का रास्ता यह है कि सच्चाई से अपना जीवन बिताओ ।

१) **सच्चा विश्वास** - सच्चा विश्वास यह है कि इसका पूरा यकीन हो कि अपनी तकदीर के बनाने वाले हम खुद हैं।

२) **हक़ हलाल की कमाई** - जो जायज़ (उचित) तरीके से मिलता हो उसी में गुज़र करना।

३) **सच्ची मौहब्बत** - जो लोग ईश्वर भक्त हैं उनकी संगत

४) **सच बोलना**

५) **सच्चा कर्म** - जिस कार्य से दूसरों को फ़ायदा हो सच्चा कर्म है।

६) **सच्ची याददाश्त** - जो गुरुदेव से सुना है या पढ़ा है या शास्त्रों में लिखा है उसको कर्म करते वक़्त याद रखना ।

इन छः सत पर चलने से परमात्मा से प्रेम पैदा हो जाता है और दुनियाँ से उपरामता पैदा हो जाती है, फिर बुद्धि खुद अपना रास्ता निकाल लेती है। जिज्ञासु जितना आगे बढ़ता जाता है, शान्ति और आनंद प्राप्त होता है। यही देवासुर संग्राम है जो एक जन्म नहीं कई जन्म चलता है। कुब्बते इरादी यानी इच्छा शक्ति, अटल विश्वास की ज़रूरत है जो अभ्यास से पैदा होती है। रास्ता लम्बा और मुश्किल है। लाखों आदमियों में से कोई एक-दो इस पर चलने की कोशिश करते हैं। लाखों चलने वालों में से कोई एक दो कायम रहते हैं और आखीर तक कायम रहते हैं वही कामयाब होते हैं। परमात्मा आपको तौफ़ीक़ (योग्यता) दे कि इस रास्ते पर आप कायम रह सकें।

मेरा खयाल था कि मार्च या अप्रैल में जब ज़रा सर्दी कम हो तो उस तरफ आऊँ। मुझको १५ जनवरी तक गोरखपुर पहुँचना है क्योंकि वहाँ पर १९ तारीख का भण्डारा है, लेकिन अगर आप लोगों की ऐसी ही ख्वाहिश है तो मुझको यही तारीखें मन्ज़ूर हैं। जैसी आपकी राय हो लिखें ताकि उसी के मुताबिक़ अमल किया जावे। सब भाईयों को नमस्ते।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(११२)

सिकन्द्राबाद

१४-१२-६३

प्रिय भाई.....नमस्ते।

जो भी खत आपका आता है उसका जबाब हम दे देते हैं। हमारा खयाल है कि आपके चोट लगने का कोई खत हमको नहीं मिला।

अभ्यास और सत्संग करने का यह फल है कि प्रभु के चरणों में प्रेम पैदा हो जाय। प्रेम पैदा होने पर बुद्धि खुद ही उससे मिलने का रास्ता निकाल लेती है। सबकी हालत एक सी नहीं होती, और न सबकी रुकावटें एक सी हैं, इसलिए रास्ता भी भिन्न-भिन्न होता है। एक नुख्सा सबको माफ़िक़ नहीं आता। किसी को स्त्री के साथ रहने और उसके साथ अपने ताल्लुक़ात

रखने में फ़ायदा होता है, किसी को बिलकुल अलहदा रहने और उसको माँ- रूप समझने में फ़ायदा होता है । अब जैसा जिसको माफ़िक हो। इसलिए आप इष्ट के ध्यान में रहकर जो रास्ता आपको सही मालूम हो उस पर चलने की कोशिश करें ।

अपने मन पर कभी भरोसा न करें । यह बड़ा धोखेबाज़ है और मक्कार है। काम-शक्ति को रोकना इन्सान की शक्ति के बाहर है । अवतारों ने इसे शुद्ध तो किया लेकिन मारा नहीं ।, सूक्ष्म रूप में कायम रखा । इसलिए हमेशा इससे होशियार रहना जब तक ज़िंदगी कायम है ।, वरना ऐसे गढ़े में उठाकर फेंक देगा जहाँ से उठना नामुमकिन हो जायगा ।

परमात्मा कल्याण करें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(११३)

सिकन्द्राबाद

७-७-६४

प्रिय भाई,नमस्ते ।

चिट्ठी आपकी मिली । शुरु में परमार्थ को कोई नहीं जानता। दुनियाँ के सुखों को परमार्थ समझता है । जब कुछ समझ आती है तब देखता है कि परमार्थ और स्वार्थ बिलकुल भिन्न हैं, ठीक एक दूसरे के विरोधी हैं, तो वह कोशिश करता है कि दुनियाँ को छोड़कर परमार्थ की तरफ़ चले। लेकिन दुनियाँ उसको इतनी आसानी से नहीं छोड़ती ।, कुछ न कुछ बहाना लगाकर फँसाये रखती है । बहुत से तो परमार्थ को छोड़कर फिर दुनियाँ ही के हो जाते हैं। लेकिन बाज़े (कुछ) ऐसे भी होते हैं जो बराबर लड़ते रहते हैं, दो-चार जन्मों में कामयाब (सफल) हो जाते हैं और दुनियाँ से सदैव के लिए सम्बन्ध -विच्छेद कर लेते हैं ।

इससे रास्ते में रिश्तेदार सबसे अधिक रुकावट डालते हैं। और उनसे तिनका तोड़ लेने का भी हुक्म नहीं है। उनके साथ दुनियाँ में कोआपरेट (सहयोग) करते हुए चलो, जीवन में शांति

स्थापित करो, सबसे मेल-जोल करके रहो। सिवाय ईश्वर के किसी को अपना मत समझो और उसी के ध्यान में रहो ।

दुनियाँ थोड़े दिनों की है। यह रिश्ते भी आहिस्ता-आहिस्ता खत्म हो जाते हैं । इसलिए अपने ही रूप में स्थित रहो, दुनियाँ के मामलात में दखल मत दो। जो हो रहा है, ठीक हो रहा है। यह दुनियाँ ईश्वर की है, वह जैसा चाहेगा चलायेगा । इसी में सच्चा सुख है। अपना कर्तव्य किय जाओ और बस ।

तुम दो-तीन ग़लती करते हो। (१) बात को साफ़ नहीं कहते और ख़याल कर लेते हो कि मैं सब कुछ जानता हूँ तुमको सब बात साफ़ कहना चाहिए। (२) सच्चाई पर कायम रहना चाहते हो,लेकिन मोह वश सब बात खुल कर नहीं कहते हो और ख़ामोश हो जाते हो । (३) जब क्रोध आता है ,अक्ल खो बैठते हो । मुझे यह देखकर दुःख होता है और मज़बूरी को लिखा है क्योंकि यह मेरा फ़र्ज़ है ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(११४)

सिकन्दाबाद

१४-७-६४

अज़ीज़म दुआ ।

बहरहाल (यद्यपि) तुमने तो नहीं वरन तुम्हारे भाई ने बताया कि तम्हारी चोरी हो गयी है । जो कुछ तुम कमाते हो उसमें उसमें तुम्हारी बेवा (विधवा) माँ का, तुम्हारी बीबी और बच्चों का, बहिनों और बेटियों का और दूसरे लोगों का हिस्सा होता है । माँ शिकायत करके, बीबी बच्चे लड़ कर अपना हिस्सा ले लेते हैं । परन्तु उन बहिन -बेटियों के बारे में क्या कहोगे जो अपनी ससुराल में हैं और अपना हिस्सा मांगे नहीं आतीं । उस फ़कीर के बारे में क्या कहोगे जो तुम्हारे दरवाज़े पर सदा (पुकार) देते हैं और उन्हें दूर से ही भगा देते हो । शुक्र है अल्लाह

का कि उसने ब्याज नहीं लिया और मूलधन में कमी कर दी। आइन्दा के लिए तौबा करो। बहू व बच्चों को आशीर्वाद।

दुआगो - श्रीकृष्ण

(११५)

सिकन्द्राबाद

५-११-६४

प्रिय भाई, नमस्ते।

चिट्ठी मिली। बन्दा (मनुष्य) हमेशा का गुनहगार (दोषी, पापी) है। यह परमात्मा की कृपा ही है कि वह अपनी कृपा का बल देकर उसके सहारे रखे गुनाहों (पापों) से बचने की कोशिश करना अपना काम है। उसमें सफलता का होना न होना अपने हाथ में नहीं है। परमात्मा बन्दों के गुनाहों की और नहीं देखता, बल्कि दिल देखता है। जिस दिल में उसकी मौहब्बत है, उसका बेडा पार है। माँ की खिदमत किये जाओ। उनका आखिरी वक़्त है। परमात्मा से प्रार्थना करते रहो कि अपनी शरण में रखे और अपना प्यार दे।

जहाँ तक हो सके ख्वाहिशात (इच्छाओं) को कम करो। मैं बीमार हो गया था, अब अच्छा हूँ। गुरु कभी नहीं मरता। जिस्म फ़ानी (नश्वर) है, वह कभी कायम नहीं रह सकता।

परमात्मा तुमको खुश रखे। बहू को आशीर्वाद,

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(११६)

सिकन्द्राबाद

१४-२-६५

प्रिय भाई,

चिठी मिली। आदमी में दोनों बातें कुदरती (स्वाभाविक) हैं। बुराई की तरफ़ जाना और उससे बच जाना, और ये हर इन्सान में मौजूद हैं। कोई इनसे बचा नहीं है। अगर तुमको सच्चे दिल से इनसे छूटने की ख्वाहिश होगी तो परमात्मा मदद करेगा। मैं भी दुआ करता हूँ। सुबह शाम प्रार्थना करो, यहां तक कि आँसू आ जाएँ और कभी-कभी हाल से खबर करते रहो। तुम्हारे भाई साहब की तबियत ख़राब हो गयी थी, यहाँ आये हुए हैं, अब अच्छी तबियत है। खुदा तुमको हर बुराइयों से बचाये और असदजीक प्यारा बनाये।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(११७)

सिकन्द्राबाद

२२-३-६५

प्रिय भाई , नमस्ते।

आपकी चिठी आयी। मन का यही हाल है। जब तक मन के चककर में रहेंगे, यही हालत बनी रहेगी। उससे निकलने का यही उपाय है कि सोचो कि दुनियाँ में कौन सी चीज़ ऐसी है जो क़ायम रहने वाली है और उस पर एतबार (भरोसा) किया जा सके। फिर उससे दिल लगाने में ज़रूरी है कि सुख भी हो, दुःख भी। बल्कि सुख कम, दुःख ज़्यादा। इसलिए दुनियाँ की चीज़ों से दिल हटा कर ईश्वर में लगाओ। जब मन दुनियाँ से बेज़ार होकर ईश्वर के नाम में लगने लगेगा तभी सच्ची शान्ति नसीब होगी।

सिकन्द्राबाद में १६, १७, १८ अप्रैल का भंडारा है। उस वक्त आने की कोशिश करो। यहाँ पर खैरियत है। परमात्मा आपको खुश रखे। सबको दुआ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(११८)

गोरखपुर

२६-११-६५

प्रिय भाई, नमस्ते।

बहुत दिन हुए आपकी चिट्ठी आयी थी। संध्या करते रहो, पर मिलने की कोशिश करो। मुझे ऐसा ख्याल है कि आप सिर्फ एक मर्तबा (बार) मिले और कुछ घंटों के लिए। गोश्त, अंडा, मदिरा आदमी की गिज़ा (भोजन) वहीं पर हैं जहाँ कुछ न मिले वरना यह सब स्वाद की चीज़ें हैं।

मैं आजकल गोरखपुर ठहरा हुआ हूँ और कुछ और ठहरूँगा। पता नीचे लिखा हुआ है।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(११९)

गोरखपुर

३०-११-६५

बरखुरदार (चिरंजीव) हरिकृष्ण जी, दुआ।

परमात्मा आप पर हमेशा अपनी कृपा बनाये रखें, सच्चा ज्ञान दें और सच्चे रास्ते पर कायम रखें।

इन्सानी ज़िन्दगी का आदर्श यह है कि अपने आप को पहचाने और ईश्वर को पहचाने और अपने आपको उसी हस्ती में लय कर दें जो इस आदर्श का रास्ता दिखावे वही सच्चा मज़हब है, जिसने इस आदर्श की प्राप्ति कर ली है, वही सच्चा गुरु है और जो इस आदर्श की प्राप्ति चाहता है, वही सच्चा भक्त है। ऐसा शिष्य हो और ऐसा गुरु हो तभी सच्चे लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। दुनियाँ की किसी चीज़ की भी ख़्वाहिश करने वाला, चाहे वह चीज़ कितना भी बेहतर क्यों न हो, भक्त नहीं है। जिस गुरु में, कितनी ही विद्या क्यों न हो, कितनी ही शक्ति क्यों न हो अगर उसने ईश्वर में अपने आप को समर्पण नहीं किया है, तो वह सच्चा गुरु नहीं है। अगर ऐसा अधिकारी शिष्य हो और ऐसा पूर्ण गुरु मिल जावे, तभी ईश्वर दर्शन होते हैं, लेकिन शर्त यह है कि पूर्ण श्रद्धा के साथ गुरु के बतलाये हुए रास्ते पर चले, और दुनियाँ की बड़ी से बड़ी चीज़ को त्यागने में न हिचकिचाये बल्कि खुशी से त्याग दें। ऐसा संयोग होने से कभी नाकामयाबी नहीं होती, और हर आदमी कामयाब होता है। जितना देर ऐसी हालत हासिल करने में होती है उतनी ही देर आदर्श हासिल करने में होती है।

दूसरे, इस रास्ते में हिम्मत की बड़ी ज़रूरत है, कभी घबराये नहीं, बराबर दुनियाँ से लड़ता रहे और ईश्वर व अपनी कामयाबी का पूरा यकीन रखे। जितनी कामयाबी नहीं होती, वह इम्तहान है और देखा जाता है कि कितनी हिम्मत है, जितनी दुनियाँ की चीज़ें छूटें, वह इम्तहान है, और देखा जाता है कि अपने लक्ष्य से कितना प्यार है। पेशतर (प्रथम) में ईश्वर से प्यार हो लेकिन दुनियाँ की चीज़ों से भी प्यार हो, तो तरक्की देर से होती है। इसलिए ईश्वर के प्यार के साथ दुनियाँ से तर्क (त्याग) भी ज़रूरी है। गुरुजन और ईश्वर हर वक़्त कृपा करते रहते हैं। लेकिन उसका एहसास (आभास) उसी वक़्त होता है जब भक्त कोशिश करके अपने हृदय को दुनियाँ की ख़्वाहिशों और नफ़रत से पाक कर लेता है, इससे पहले नहीं। इसलिए घबराना नहीं चाहिए।..... हर वक़्त ख़याल रखो कि वह हर वक़्त तुम्हारे साथ है, तुम्हारा सच्चा बाप है। प्यार से उसका पवित्र नाम लेते रहो।

जिस हालत में उसने रखा है उसी में खुश रहो। दुःख-सुख से ऊपर उठो। जब तक ज़िन्दगी है, दुःख-सुखों का आना ज़रूरी है। जो ख़िदमत ईश्वर ने दी है उसको ईमानदारी और सच्चे दिल से अदा करो। हर वक़्त ख़याल रखो कि यह दुनियाँ ईश्वर की है, हम सब ही ईश्वर के हैं, जो काम हो रहा है और हम कर रहे हैं, ईश्वर के लिए ही कर रहे हैं।

अपने ख्यालात को हमेशा ऊँचे बनाये जाओ, ख्यालात पर काबू पाने की कोशिश करो, ख्वाहिशात पर काबू पाओ और इन्द्रियों पर काबू पाओ, यही रहनी सहनी का ठीक करना है ।

जब मौका हो सन्तों, गुरुजनों की सेवा करो और उनको खुश करो और उनका सत्संग करो, उनके उपदेशों को हित-चित से सुनो, और उनपर अमल करने की कोशिश करो,..... सौ फीसदी कामयाबी होगी ।

मौसम ठंडा होता जा रहा है इसलिए जल्दी आने की कोशिश करो । रुपया भेजने की ज़रूरत नहीं है । मेरा इरादा अभी यहाँ पर ठहरने का है । आइन्दा जो ईश्वर को मंज़ूर । बैनर्जी साहब (परमसन्त अक्षय कुमार बंधोपाध्याय) से आपका सन्देश कह दिया था । वह दुआ कहते हैं और आपके आने का इन्तज़ार कर रहे हैं ।

परमात्मा तुम सबको खुश रखे और दीन और दुनियाँ बख़्शे ।

खैरअन्देश - श्रीकृष्ण

(१२०)

सिकन्दाबाद

३-१-१९६६

प्रिय भाई, नमस्ते ।

मैं ता० २० को गोरखपुर आ गया । फिर २० ता० को पहुँचने का इरादा है ।

परमात्मा सबसे प्यारा होता है। वह कभी भी सज़ा नहीं देता, हमेशा माफ़ करता है, यदि मनुष्य सच्चे दिल से माफ़ी मांग कर फिर वह काम न करे। अपने दिल को सदा दुनियाँ की मौहब्बत और नफ़रत से साफ़ करते रहो । जितना हृदय शुद्ध होगा, उसकी कृपा का अनुभव होगा । सदैव उसका ध्यान और गुरु का ध्यान करते रहो । परमात्मा तुम पर अपनी कृपा बनाये रखें। मैं अच्छी तरह से हूँ। परमात्मा तुमको खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

गोरखपुर

२९-१-६६

बरखुरदार हरिकृष्ण जी, दुआ ।

परमात्म तुमको खुश रखे और एमालेनेक (शुभ कर्म करने) की तौफीक अता फ़रमावे (साहस दे) । आपका नवाज़िशनामा (पत्र) मौसूल (प्राप्त) हुआ ।

मैं १७ तारीख को यहाँ आ गया था और उसी रोज़ शुक्ल जी को देखने गया और उसी रोज़ परमसन्त गुरुदेव श्री बैनर्जी की खिदमत (सेवा) में पेश हुआ । उन्होंने आपकी खैरोआफ़ियत (कुशल) पूछी लेकिन शुक्ल जी की बीमारी की वजह से कुछ परेशान थे । २० तारीख की शाम को साढ़े चार बजे उनको दौरा हुआ और बेहोश हो गए । दूसरे रोज़ शफ़ाखाने (चिकित्सालय) में भरती करा दिया । लेकिन वह अभी तक बेहोश हैं । पैरेलिसिस (लकवा) का असर मालूम होता है ,और ऐसा मालूम होता है कि 'हेमरेज' (रक्तस्राव) का केस है । ज़ाहिरी उम्मीद मालूम नहीं होती। आइन्दा ईश्वर बेहतर जानता है ।

मेरा ख़याल यही था कि आप की हालत बेहतर होगी। आपके ख़त से उसकी तसदीक (पुष्टि) हो गयी। खुशी हुई। यह बुजुर्गों की कृपा और तुम्हारी कोशिशों का नतीज़ा है । लेकिन, माया से होशियार रहना, यह किसी वक़्त भी माया में फांस लेती है । परमात्मा का नाम हर वक़्त लेते रहो, और उससे प्रार्थना करते रहो कि अपनी कृपा बनाये रखे। मैं भी दुआ करता हूँ परमात्मा करे तुम अपने रूहानी (आध्यात्मिक) बुजुर्गों के क़दम -ब -क़दम (चरण चिन्हों) चलो और उनके नाम को रोशन (चमका) कर दिखलाओ, और जिस काम को मैं न कर सका, तुम कर दिखाओ । भण्डारा बख़ैर ख़ूबी (सकुशल) हो गया। सभी लोग आये थे। गोपाल भी आया था।

श्री शुक्ल जी का २७ ता। रात को देहान्त हो गया। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दें ।

खैरअन्देश- श्रीकृष्ण

सिकन्दाबाद

१२-५-६६

प्रिय भाई, नमस्ते ।

आपकी चिट्ठी मिली । अगर आपके ख्याल नहीं बदले और पहले ही की भाँति हैं , तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है । इसके लिए संग्राम करना पड़ेगा और वक़्त लगेगा। उसका उपाय यह है :-

(१) जब खाली बैठो, पूर्ण विश्वास के साथ ख्याल करो कि ईश्वर तुम्हारे अन्दर है और तुम्हारा सच्चा हितेषी है, उसका नाम बराबर लेते रहो, जो ॐ है ।

(2) जो कुछ होता है ईश्वर के हुक्म से यानी अपने ही कर्मों का फल है, और वो भोगना ही पड़ेगा, इसलिए उसे खुशी से भोगो ।

(3) झूठ का त्याग, सत्य बोलना, क्रोध रोकना, इन्द्री भोग में कम फँसना, दूसरों का दिल न दुखाना, इन बातों का अभ्यास करो ।

मुमकिन है जून में ग्वालियर में सत्संग हो। अगर समय मिले तो शामिल होने की कोशिश करना। घरवाली को अपने पास रखो, उससे मौहब्बत करो सच्चे दिल से, और जब मौका मिले, मेरे पास ले आओ। परमात्मा तुम पर कृपा करे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१२३)

सिकन्द्वाबाद

२५-१२-६६

प्रिय भाई दीन दयाल, खुश रहो ।

चिट्ठी आपकी मिली। हर शख्स (व्यक्ति) में देवताओं और जानवरों के गुण मौजूद हैं । अभ्यास यही है की जानवरों के गुणों को दबाया जाय और देवताओं के गुणों को बढ़ाया जाय । तुमको ईश्वर ने इच्छाशक्ति दी है और बुद्धि दी है। इसलिए जिस चीज़ से दुःख होता है, उसे छोड़ दो और अच्छी आदतें बनाने की कोशिश करो । जिसका साधन यह है :-

(१) संतों का सत्संग और उनकी सेवा

(२) ईश्वर का नाम बराबर लेते रहना ।

(३) अपनी बुरी आदतों को दबाने की कोशिश करना ।

इन बातों पर अमल करो तभी आचरण ठीक हो सकता है। परमार्थ में आचरण का बनाना पहिली शर्त है । ईश्वर कृपा करें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१२४)

नई दिल्ली

२२-२-६७

प्रिय भाई, खुश रहो ।

कल तुम्हारी चिट्ठी मिली । मैं ८ तारीख को बक्सर चला गया था । १७ तारीख को वापिस आने पर बीमार हो गया था। अब अच्छा हूँ । इस इतबार को सिकन्द्वाबाद चला जाऊँगा ।

जिन संत के पास आप गए वहाँ आपका हिस्सा नहीं है । जहाँ आपके विश्वास को धक्का लगे वहाँ नहीं जाना चाहिए । इसलिए वहाँ अब नहीं जाइये । जब महाराज जी दौरे से वापिस आजायें उनका उपदेश गीता का सुनने चला जाया करो और घर पर बैठकर अभ्यास करो। और झगड़ों में न पड़ो ।

सिकन्द्राबाद ३१ मार्च और १-२ अप्रैल का भण्डारा है। अगर मौका हो तो शामिल होने की कोशिश करना। परमात्मा तुमको खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१२५)

सिकन्द्राबाद

१-९-६७

प्रिय

आपकी चिट्ठी मिली, मैं बाहर गया था। जबाब देर से दे रहा हूँ। आपके पास होने की खबर पढ़कर खुशी हुई, परमात्मा आपको ज़िन्दगी में कामयाबी दे। जो उस पर भरोसा करते हैं, कभी निराश नहीं होते। दूसरी बात यह है कि उसके हर काम हमारी भलाई के लिए होते हैं चाहे हम उसे जान सकें या न जान सकें। अगर आदमी पूर्ण रूप से उसकी शरण ले-ले तो हमेशा खुश रहे । अपने घरवाली का हाल लिखा । दो ही सुरते हैं - या तो उसकी तरफ़ से बेपरवाह हो जाओ, उसको उसकी तकदीर पर छोड़ दो या उससे अलहदगी अख्त्यार करो । मारने -पीटने का कोई नतीज़ा नहीं । तीसरा रास्ता बीच का है। उस पर अमल करोगे तो फ़ायदा होगा । जिस आदमी से हमारी ख्वाहिश पूरी होती है, हम उसके गुलाम हो जाते हैं । फिर भी हमारे कहने में नहीं चलती इसलिए अपने मन पर काबू पाओ, स्त्री से कोई ताल्लुक मत रखो। वो अपनी राह, तुम अपनी राह। परमात्मा से उसकी दुरुस्ती के लिए प्रार्थना करो। मैं भी दुआ करता हूँ ।

मैं ता० ७-९-६७ को भोपाल जा रहा हूँ और १५-७-६७ तक वापस आऊँगा। भंडारे पर आने की कोशिश करना। परमात्मा तुमको खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१२६)

सिकन्द्राबाद

६-११-६७

प्रिय भाई नमस्ते ।

आपकी इससे पहले एक चिट्ठी आयी थी । आपके भाई राम-राज बाबू भंडारे पर आये थे । उनको दे दी थी । मेरी राय यह है कि abortion (गर्भपात) नहीं कराना चाहिए । इससे अच्छा यह है कि अगर आपके पिता जी मंजूर करें कि तुम्हारी भावज यहाँ आ जायें और जब फ़ारिग हो जायँ तो वापिस चली जायें । बच्चे को कोई पाल लेगा ।

तुम्हारी दूसरी चिट्ठी आयी जिसमें तुमने पूछा है कि abortion (गर्भपात) कराना चाहिए या नहीं। मेरी राय में तुमको यह काम नहीं कराना चाहिए। तुम्हारी भावी और रामरज कल नौकरी पर चले गए हैं। परमात्मा तुमको खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१२७)

सिकन्द्राबाद

२०-१-६८

प्रिय भाई, नमस्ते ।

चिट्ठी आपकी मिली । दुनियाँ में कोई ऐसा नहीं है जो बुराई से बचा हो । वो बड़ा खुशकिस्मत (भाग्यशाली) है जिसने अपनी बुराइयों को जान लिया ओस उससे भी ज़्यादा खुशकिस्मत वह है जो उनको छोड़ने की कोशिश कर रहा है। अपना लक्ष्य सामने रखो और अपनी कोशिश और उससे प्रार्थना करते रहो। आहिस्ता-आहिस्ता सब ठीक हो जायगा ।

परमात्मा आप पर कृपा करें ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१२८)

सिकन्द्वाबाद

दीपावली १९६८

प्रिय भाई श्री रामसागर लाल जी ,

आपका प्रेम पत्र मिला । आपने लिखा है उसकी मुझको तो खबर भी नहीं लेकिन इससे इतना तो जरूर मालूम देता है कि रास्ता सही है और आपके बुजुर्गों का ताल्लुक उस आदि पुरुष से है जिसने आपको दर्शन दिए । आपको चाहिए कि सबका सहारा छोड़कर उसी एक का सहारा लें, चाहे वह दुनियाँ का हो या दीन (परलोक) का, उसकी शरण लें । यही सीधा और सच्चा रास्ता है । इस दुनियाँ में खुश रहने और सलामती (सुगमता) से निकल जाने का यही रास्ता है ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१२९)

सिकन्द्वाबाद

७-४-६८

प्रिय.....

चिट्ठी मिली । दुनियाँ में हर जीव अपने कर्मों का फल भोगने और उनकी सजा पाकर और सबक लेकर उनको छोड़ने के लिए आता है । इसलिए हर जीव परमात्मा के प्रेम का अधिकारी है। लेकिन उसके लिए संस्कार बनाना चाहिए । जिस हालत में आप रखे गए हैं वही हालत आपके पिछले जन्म के संस्कारों को भुगतवाने के लिए जरूरी थी । इसको आप नहीं बदल सकते। लेकिन बुरे खयालों को छोड़कर दिल में अच्छे खयाल कायम करना, यह आपके अख्तियार में है। लेकिन इसमें कठिनाइयाँ बहुत हैं और यही असली तप है । अगर यह खुद कर सकते हो तो खुद करो और खुद में शक्ति न हो तो किसी महापुरुष की शरण में जाओ। लेकिन

यह सब कुछ ज़बानी (मौखिक) और लिखा-पढ़ी से नहीं हो सकता। बीमार को डाक्टर के पास जाना, दवा पीना और उसके कहने के मुताबिक परहेज़ करना पड़ेगा। अगर कोई ऐसा नहीं करता तो वह अच्छा होने का ख्वाहिशमन्द (इच्छुक) कैसे हो सकता है ? आपने जिन बातों को पकड़ रखा है उन्हें आप छोड़ना नहीं चाहते । जब तक जीव को छूटने की ख्वाहिश खुद की न हो तब तक उसे कोई नहीं छुड़ा सकता। परमात्मा कृपा करें।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(130)

सिकन्द्राबाद

११-५-६८

प्रिय भाई, नमस्ते ।

आपकी चिठी मिली । गुरु बहुत देख-भाल कर करना चाहिये, अगर एक उम्र भी लग जाय तो कोई हर्ज़ नहीं। दूसरे की देखा देखी या कहने से गुरु नहीं करना चाहिये । जब पूर्ण निश्चय हो जाय तब गुरु करना चाहिये । किसी के कहने से, किसी भी हालत में , चाहे कोई क्यों न कहे, गुरु को न छोड़ें जब तक खुद उसमें नुक़स न देखें। गुरु करने के बाद उस पर सब कुछ न्योछावर कर दें, बदले में कुछ न चाहे ।

उसके कहने पर सख्ती से अमल करें। जहाँ तक मुमकिन हो उससे मिलता रहे और सदा ध्यान करे, उसी का असर रखे और उसे ही ईश्वर समझे जब तक ईश्वर के दर्शन न हो जायें। एक साथ ज़्यादा दिनों गुरु के साथ रहने से अधिक फ़ायदा नहीं होता । मौक़ा निकालकर बार-बार हाज़िरी दो, चाहे थोड़ी देर के लिए हो । रूपये की कमी हो तो गुरु से ले लो, इसमें तकल्लुफ़ (संकोच) न करो ।

जो लोग गुरु के ख़िलाफ़ हों उनकी सौहबत से बचो। यदि गुरु की बुराई होती हो तो उस जगह को छोड़ दो और यदि ठहरना ही पड़े तो साफ़ तौर से कह दो कि मैं ऐसा सुनने के लिए तैयार नहीं हूँ। दुनियाँ की मुरब्बत की वजह से परमार्थ का नुक़सान मत करो। जहाँ तक बने,

दोनों को निभायें। यदि ऐसा मौका आ जाय कि एक को छोड़ना पड़े तो दुनियाँ पर लात मर दे, यहाँ तक कि माँ-बाप, स्त्री व सन्तान तक को परमार्थ के मुकाबले में कुर्बान कर दे। गुरु की मौहब्बत, अगर वह दरअसल ईश्वर का अपनाया हुआ है, ईश्वर का साक्षात्कार करा देगी। दुनियाँ से पार हो जायेगा।

यह मेरा अपना व्यक्तिगत तजुर्बा है जिसको आपके फ़ायदे के लिए लिख दिया है। बेटी को प्यार, बच्चों को दुआ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३१)

सिकन्द्राबाद

२७-५-६८

प्रिय भाई, खुश रहो।

चिठी मिली, मैं अच्छी तरह हूँ। इलाज चल रहा है।

जिस्म (शरीर) से हर वक़्त कोई पास नहीं रह सकता और यह तड़प मन की है न कि आत्मा की। गुरु का दर्शन बाहरी आँखों से नहीं होता है। उसका दर्शन दिल की आँखों पर, जो कि छठे चक्र पर हैं, मन को एकाग्र करके अन्दर की तरफ़ किया जाता है। गुरु का जिस्म नूरानी है, अर्थात् प्रकाशवान है, जो अन्दर है। बाहरी जिस्म मिट्टी का है। बाहरी आँखों से आँख फाड़-फाड़ कर देखना ग़लत तरीका है।

**" दिल के आईने में है, तस्बीरे यार,
जब ज़रा गर्दन झुकाई। देख ली।"**

आपने फ़ार्म भर दिया, अच्छा किया, मेहनत करो, परमात्मा करे, कामयाबी हो। बाबू जी को नमस्ते, भू को असीस।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्द्राबाद

६-७-६८

प्रिय भाई, नमस्ते ।

इन्सान (मनुष्य) तीन जिस्मों (शरीरों) की मिलौनी का नाम है । अन्तर के अन्तर रूहानी यानी आत्मा का स्थान है जिसमें ईश्वर का प्रेम, आनन्द और सच्चा ज्ञान है। उसके ऊपर मन यानी ख्वाहिशात (इच्छाओं) का गिलाफ़ (आवरण) है । तीसरा स्थूल शरीर है। आत्मा इस शरीर में अज्ञान की हालत में है। और अपना असली रूप भूलकर उसने मनका रूप इख्तयार (धारण) कर लिया है। मन के साथ दुनियाँ की चीज़ों में बर्त रही है। दुःख और सुख उठा रही है। मन हुकूमत करता है और अपनी ख्वाहिशात (इच्छाएं) पूरी करता है। जहाँ शक्ति है वहाँ उस शक्ति का विकास धाराओं की शकल में हो रहा है और इन धाराओं (vibrations) को ही शब्द कहते हैं। जहाँ तक मन सुरत पर ग़ालिब है वहाँ पर जो शब्द है वह अनहद का शब्द है। ऊंचे स्थान पर यानी शून्य के स्थान पर, जो कि त्रिकुटी से ऊँचा स्थान है, आत्मा को अपना ज्ञान होने लगता है और ईश्वर का प्रेम जाग जाता है। मन की ख्वाहिशात शांत हो जाती हैं और आत्मा मन से न्यारी होने लगती है । इस जगह जो शब्द हो रहा है उसी को मुसलमान सूफ़ी 'ज़िक्र ख़फ़ी ' कहते हैं ।

वह मौहब्बत, जिसको दुनियाँदार मौहब्बत कहते हैं, वह मौहब्बत नहीं है । वह दरअसल मोह है जो किसी न किसी गरज़ (स्वार्थ) से होती है चाहे वह गरज़ छिपी हुई या दबी हुई क्यों न हो। सच्ची मौहब्बत आत्मा को ईश्वर से और ईश्वर को आत्मा से है या भक्त को ईश्वर से होती है। जब उसमें स्वार्थ शामिल हो जाता है तो वह ख़ालिस मौहब्बत नहीं रहती । जहाँ आत्मा है, वहाँ ईश्वर है । पर उस पर माया के परदे पड़ जाते हैं। हममे से सभी मौहब्बत करते हैं पर किसी न किसी गरज़ से और हम भी जब दूसरों से मौहब्बत करते हैं पर किसी न किसी गरज़ से करते हैं। अगर यह गरज़ दूर हो जाय और बिना गरज़ और मुआबज़े (बदले) के मौहब्बत हो तो वही असली मौहब्बत है। इसीलिए कहा गया है कि असली मौहब्बत ही ईश्वर है।

शब्द हर जगह हो रहा है जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, जब तबियत अन्दर की तरफ रागिब होती (झुकती) है, तब शब्द सुनाई देता है और जब मन का रुख (दिशा) नीचे या बाहर की तरफ होता है तब शब्द सुनाई नहीं देता।

मेरी तबियत ठीक नहीं रहती। कुछ न कुछ बना ही रहता है।

सबको दुआ,

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३३)

सिकन्द्राबाद

१६-८-६८

प्यारी बेटी, खुश रहो ।

आपकी दो चिट्ठियाँ मिलीं । मैं बराबर बीमार चल रहा हूँ । कभी कुछ, कभी कुछ, एक रोग खतम नहीं होता दूसरा तैयार हो जाता है। पहले कमर के उलटे हिस्से और पेट पर फलक निकले जिनमें बड़ी तकलीफ़ थी अब पहले से कम तो है मगर तकलीफ़ बराबर है ।

अभ्यास में शुरू-शुरू में मन बड़े शौक से लगता है लेकिन जब मन ऊपर चढ़ने लगता है तब निचला मन यानी वो कर्म जो हम करते रहे हैं नीचे की तरफ़ खींचते हैं और अभ्यास में मन ऊँचा चढ़ता है। इस खेंचा-तानी में तबियत नहीं लगती और चूँकि मन स्थिर नहीं रहता, कुछ दिखाई नहीं देता और शांति भंग हो जाती है। गुरु पर विश्वास भी नहीं रहता । कमज़ोर अभ्यासी हिम्मत हार कर छोड़ देता है । लेकिन इस रास्ते से गुज़रना सबको पड़ता है । इसका इलाज यह है कि विश्वास रखें, हिम्मत न हारें । मन से लड़ते रहें। यही देवासुर संग्राम है । और जब मौक़ा मिले सत्संग करें। आहिस्ता-आहिस्ता 'रज' से हटकर 'सत' पर आ जायेगा और फिर हालत खुलने लगेगी। घबराओ नहीं, परमात्मा से प्रार्थना करती रहो, ज़रूर मदद मिलेगी ।

मन सबसे बड़ा दुश्मन है, ध्यान संध्या में नहीं लगने देता। लेकिन इसमें जो ख्याल पैदा होते हैं वो अपने ही बनाये हुए हैं, इनको शांत करना भी तुम्हारा काम है। बुरे ख्यालों को दबाओ, अच्छे ख्यालों को उभारो, यही असली तप है। यह बहुत मुश्किल काम है लेकिन अभ्यास और वैराग से सहल हो जायगा। क्या लड़के तमाम उम्र माँ के पास रहते हैं ? फिर घबराहट क्या ? जो आपने रौशनी देखी वह आत्मा का प्रकाश है, और जो काला परदा देखा वह मन और माया का परदा है जो आत्मा पर छाया हुआ है। जो आवाज़ें सुनाई देती हैं, वह आपने ही मन की आवाज़ें हैं। अभ्यास किये जाओ, निराश मत हो, ईश्वर पर भरोसा रखो। जो चलते रहते हैं वह ज़रूर एक दिन मन्ज़िल पर पहुँच जाते हैं। जो थक कर बैठ जाते हैं उनका उस वक़्त के लिए रास्ता रुक जाता है। बच्चों को प्यार, शर्मा नमस्ते कहती हैं।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३४)

सिकन्द्राबाद

१२-११-६८

प्यारी बहिन, नमस्ते।

मेरी तबियत पहले से ठीक ज़रूर है लेकिन काम-काज करने को तबियत नहीं चाहती। दूसरे, कहीं आने-जाने के क़ाबिल नहीं हूँ कुछ दिन हुए आपका ख़त आया था। जल्दी जबाब नहीं दे सका।

१) पहली बात ये है कि आदमी दुनियाँ में तज़ुर्बे के लिए आता है। तज़ुर्बा करता जाता है और अपनी आदतों को बदलता जाता है। अगर ऐसा न हो तो वो हमेशा जानवर ही बना रहे और कभी आगे को तरक्की न कर सके।

२) शुरु ही से इन्सान इन्द्रियों के आनन्द में फँसता है। आगे चल कर दुनियाँ की चीज़ों की ख़्वाहिश में फँस जाता है। कुछ तज़ुर्बा करने के बाद दुनियाँ की चीज़ों से उपराम हो जाता है और दुनियाँ की पूजा-पाठ में लग जाता है और कुछ सिद्धि शक्ति हासिल कर लेता है। लेकिन यहाँ भी परमार्थ नहीं, मन का जाल है। इससे भी आवागमन नहीं छूट सकता। जब कुछ और

ज्ञान पैदा होता है तब फिर दुनियाँ से हटने लगता है और जितना दुनियाँ से हटता जाता है, ईश्वर में लय होता जाता है। यही अंतिम लक्ष्य है। इससे मालूम होगा कि असली परमार्थ अपने आपको मिटाना है न कि कुछ हासिल करना। आपको कभी-कभी ज्ञान तो होता है लेकिन मन फिर झमेले में फँसा लेता है। सोच कर आती हो कि कुछ दिन रहूँगी, लेकिन मन कोई न कोई बात पैदा करके तबियत को उखाड़ देता है। मन सीधे रास्ते पर नहीं आने देता।

मैंने कई बार चाहा कि आप ठहरें। मन ने बहका दिया और कोई न कोई बात ऐसी पैदा कर दी कि आप चल दीं अगरचे आपको यहाँ रहने में कोई दिक्कत नहीं थी।

अब आपका अभ्यास यह होना चाहिए कि हर तरफ़ से ख्याल हटाकर ईश्वर के चरणों में लगाना चाहिए। इन्द्रियों को विषयों से हटाती रहें। मन को दुनियाँ की वासनाओं से कम करती रहें। हर वक़्त ईश्वर का ध्यान करती रहें और मौत को हर वक़्त याद रखें।

बच्चों को प्यार, बहू को आशीर्वाद।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३५)

सिकन्द्राबाद

२६-११-६८

प्यारी बेटी, खुश रहो।

चिठी तुम्हारी मिली। आत्मा ईश्वर का अंश है। उसमें उतनी ही शक्ति है जितनी ईश्वर में। इसको कोई बन्धन रोक नहीं सकता। ये सब मन का धोखा है। दुनियाँ में फँसा है और आत्मा को दोषी ठहराता है, लेकिन ये बन्धन आहिस्ता-आहिस्ता कटते हैं। जल्दी करने में न इधर का रहता है न उधर का रहता है। इसलिए जहाँ जहाँ मन फँसा है उसे वहाँ से निकालो और ईश्वर के समीप बढ़ती चलो। परमात्मा मदद करेगा।

बच्चों को दुआ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण-

(१३६)

सिकन्द्राबाद

२६-१-६८

प्यारी बेटी, खुश रहो ।

तुम्हारी चिट्ठी मिली । जब कभी मन काबू में न आये, गुरु के सामने कर दें, अपने आप उसके पीछे आ जायें और उसकी ओट ले लें। मन शान्त हो जायगा ।

तुम्हारा कहना ठीक है कि स्त्री पराधीन है, उसको दूसरों की मर्जी पर चलना पड़ता है। लेकिन इस पर भी किसी के भी कहने पर गुनाह की बात नहीं करनी चाहिए वरना दंड उठाना पड़ेगा। सफ़र लम्बा है लेकिन उसका भरोसा है ।

मैं पहले से अच्छा हूँ । तुम्हारी हालत अच्छी है, चली चलो। परमात्मा खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३७)

सिकन्द्राबाद

२०-२-६९

प्रिय भाई (गिरिजा नन्द लाल) नमस्ते ।

मेरी खाँसी अब नहीं के बराबर है । अकेले बैठने में कभी तो यह ख्याल कीजिये कि ऊपर से फ़ैज़ (कृपा) की धार आ रही है और तमाम आपके बदन में ऊपर से नीचे तक फैलती जाती है। दया की धारा का रंग सफ़ेद है और बड़ी शांति देने वाली है । और दूसरे एकांत में शब्द या प्रकाश का ध्यान कीजिये जिससे आत्मा नीचे से ऊपर चढ़े। मन का स्वभाव एकसा नहीं रहता जब तक कि आत्मा में लीन न हो जाय। इसलिए इसके लिए परेशान न होइए । आहिस्ता-आहिस्ता मन को बुरी वासनाओं से हटाते चलिए। यह काम जल्दी का नहीं है ।

ध्यान में जो अपने महसूस (अनुभव) किया वह ठीक है। ध्यान में तीन बातें होती हैं। एक तो ध्यान करने वाला, दूसरा जिसका ध्यान किया जाय और तीसरा यह ख्याल कि हम ध्यान कर रहे हैं। इसमें दो चीज़ें गायब हो जाती हैं और कभी-कभी तीसरी चीज़ भी जाती रहती है। आगे चलकर ज्ञान बाकी रहेगा ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३८)

प्यारी बहन, खुश रहो।

खत तुम्हारा आया, हाल मालूम हुआ ।

यह जितने रिश्तेदार हैं और दोस्त अहबाब हैं सब दूसरे जन्मों के दुश्मन या कर्जदार हैं जो अपना कर्ज लेने या बदला लेने आते हैं और परमात्मा की तरफ़ से आपकी तबियत हटाते रहते हैं। हमको चाहिए कि उनकी खिदमत जिस्म से और रुपया से कर दें लेकिन गुरु का सहारा लेकर सबसे माया मोह तोड़ दें और रिश्ता मौहब्बत तोड़ दें और उनके लिए परेशान न हों। हरेक अपने कर्म का फल भोगता है और भोगेगा। परेशानी सिवाय इसके कि आपकी तबियत को हटा कर आपका नुक़सान करें, उसका कोई फ़ायदा नहीं हो सकता। इसीलिए हर वक़्त मौहब्बत की वजह से दूसरों के लिए परेशान होना अपना नुक़सान करना है। जो मदद हो सके, कर दो और अपने शगल (ध्यान) में लगी रहो। गुरु से मौहब्बत करना और उसका सहारा लेकर दुनियाँ की मौहब्बत से मुँह मोड़ लेना फ़नायशेख (गुरु में लय होना) कहलाता है। मगर गुरु भी एक सहारा है। अपने अन्दर के गुरु में अपना मन लगाइये और जिस्म के गुरु से ताल्लुक़ तोड़िये यानी उसकी मूर्ति को अपने दिल में रखिये। जब परमात्मा का अनुभव होने लगे तो गुरु का ध्यान भी छोड़ दीजिये। वह भी धोखा है। अपने आप में मगन रहिये। तहरीर (लिखित) में इतना ही समझाया जा सकता है।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

प्रिय भाई, नमस्ते ।

दुःख-सुख अपने ही पैदा किये हुए हैं । जब दुनियाँ को किसी चीज़ में सुख मिलता है तो आदमी उसके हासिल करने की कोशिश करता है, मेहनत करता है । अगर वह चीज़ मिल जाती है तो खुश होता है , नहीं मिलती तो दुखी होता है । अगर ख्वाहिश (इच्छा) न हो तो दुःख ही न हो । ख्वाहिश के साथ दुःख का होना ज़रूरी है ।

भण्डारा २५, २६, २७ अक्टूबर का मनाया जायगा। आने की कोशिश कीजिये।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(130)

सिकन्दाबाद

११-५-६८

प्रिय भाई, नमस्ते।

आपकी चिट्ठी मिली । गुरु बहुत देख-भाल कर करना चाहिये, अगर एक उम्र भी लग जाय तो कोई हर्ज़ नहीं। दूसरे की देखा देखी या कहने से गुरु नहीं करना चाहिये । जब पूर्ण निश्चय हो जाय तब गुरु करना चाहिये । किसी के कहने से, किसी भी हालत में , चाहे कोई क्यों न कहे, गुरु को न छोड़ें जब तक खुद उसमें नुक्स न देखें। गुरु करने के बाद उस पर सब कुछ न्योछावर कर दें, बदले में कुछ न चाहे ।

उसके कहने पर सख्ती से अमल करें। जहाँ तक मुमकिन हो उससे मिलता रहे और सदा ध्यान करे, उसी का असर रखे और उसे ही ईश्वर समझे जब तक ईश्वर के दर्शन न हो जायें । एक साथ ज़्यादा दिनों गुरु के साथ रहने से अधिक फ़ायदा नहीं होता । मौक़ा निकालकर

बार-बार हाज़िरी दो, चाहे थोड़ी देर के लिए हो। रूपये की कमी हो तो गुरु से ले लो, इसमें तकल्लुफ़ (संकोच) न करो ।

जो लोग गुरु के ख़िलाफ़ हों उनकी सौहबत से बचो। यदि गुरु की बुराई होती हो तो उस जगह को छोड़ दो और यदि ठहरना ही पड़े तो साफ़ तौर से कह दो कि मैं ऐसा सुनने के लिए तैयार नहीं हूँ। दुनियाँ की मुरब्बत की वजह से परमार्थ का नुक़सान मत करो। जहाँ तक बने, दोनों को निभायें। यदि ऐसा मौक़ा आ जाय कि एक को छोड़ना पड़े तो दुनियाँ पर लात मर दे, यहाँ तक कि माँ-बाप, स्त्री व सन्तान तक को परमार्थ के मुक़ाबले में कुर्बान कर दे। गुरु की मौहब्बत, अगर वह दरअसल ईश्वर का अपनाया हुआ है, ईश्वर का साक्षात्कार करा देगी। दुनियाँ से पार हो जायेगा ।

यह मेरा अपना व्यक्तिगत तज़ुर्बा है जिसको आपके फ़ायदे के लिए लिख दिया है। बेटी को प्यार, बच्चों को दुआ ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३१)

सिकन्दाबाद

२७-५-६८

प्रिय भाई, खुश रहो ।

चिट्ठी मिली, मैं अच्छी तरह हूँ। इलाज चल रहा है ।

जिस्म (शरीर) से हर वक़्त कोई पास नहीं रह सकता और यह तड़प मन की है न कि आत्मा की। गुरु का दर्शन बाहरी आँखों से नहीं होता है। उसका दर्शन दिल की आँखों पर, जो कि छठे चक्र पर हैं, मन को एकाग्र करके अन्दर की तरफ़ किया जाता है । गुरु का जिस्म नूरानी है, अर्थात् प्रकाशवान है, जो अन्दर है। बाहरी जिस्म मिट्टी का है। बाहरी आँखों से आँख फाड़-फाड़ कर देखना ग़लत तरीक़ा है ।

" दिल के आईने में है, तस्बीरे यार,
जब ज़रा गर्दन झुकाई । देख ली।"

आपने फ़ार्म भर दिया, अच्छा किया , मेहनत करो, परमात्मा करे, कामयाबी हो । बाबू जी को नमस्ते, भू को असीस ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३२)

सिकन्द्राबाद

६-७-६८

प्रिय भाई, नमस्ते ।

इन्सान (मनुष्य) तीन जिस्मों (शरीरों) की मिलौनी का नाम है । अन्तर के अन्तर रूहानी यानी आत्मा का स्थान है जिसमें ईश्वर का प्रेम, आनन्द और सच्चा ज्ञान है । उसके ऊपर मन यानी ख्वाहिशात (इच्छाओं) का गिलाफ़ (आवरण) है। तीसरा स्थूल शरीर है। आत्मा इस शरीर में अज्ञान की हालत में है। और अपना असली रूप भूलकर उसने मनका रूप इख्तयार (धारण) कर लिया है । मन के साथ दुनियाँ की चीज़ों में बर्त रही है। दुःख और सुख उठा रही है । मन हुकूमत करता है और अपनी ख्वाहिशात (इच्छाएं) पूरी करता है । जहाँ शक्ति है वहाँ उस शक्ति का विकास धाराओं की शकल में हो रहा है और इन धाराओं (vibrations) को ही शब्द कहते हैं। जहाँ तक मन सुरत पर ग़ालिब है वहाँ पर जो शब्द है वह अनहद का शब्द है। ऊंचे स्थान पर यानी शून्य के स्थान पर, जो कि त्रिकुटी से ऊँचा स्थान है, आत्मा को अपना ज्ञान होने लगता है और ईश्वर का प्रेम जाग जाता है। मन की ख्वाहिशात शांत हो जाती हैं और आत्मा मन से न्यारी होने लगती है। इस जगह जो शब्द हो रहा है उसी को मुसलमान सूफ़ी 'ज़िक्र ख़फ़ी ' कहते हैं ।

वह मौहब्बत, जिसको दुनियाँदार मौहब्बत कहते हैं, वह मौहब्बत नहीं है। वह दरअसल मोह है जो किसी न किसी गरज़ (स्वार्थ) से होती है चाहे वह गरज़ छिपी हुई या दबी हुई क्यों

न हो। सच्ची मौहब्बत आत्मा को ईश्वर से और ईश्वर को आत्मा से है या भक्त को ईश्वर से होती है। जब उसमें स्वार्थ शामिल हो जाता है तो वह खालिस मौहब्बत नहीं रहती। जहाँ आत्मा है, वहाँ ईश्वर है। पर उस पर माया के परदे पड़ जाते हैं। हममे से सभी मौहब्बत करते हैं पर किसी न किसी गरज़ से और हम भी जब दूसरों से मौहब्बत करते हैं पर किसी न किसी गरज़ से करते हैं। अगर यह गरज़ दूर हो जाय और बिना गरज़ और मुआबज़े (बदले) के मौहब्बत हो तो वही असली मौहब्बत है। इसीलिए कहा गया है कि असली मौहब्बत ही ईश्वर है।

शब्द हर जगह हो रहा है जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, जब तबियत अन्दर की तरफ़ राग़िब होती (झुकती) है, तब शब्द सुनाई देता है और जब मन का रुख (दिशा) नीचे या बाहर की तरफ़ होता है तब शब्द सुनाई नहीं देता।

मेरी तबियत ठीक नहीं रहती। कुछ न कुछ बना ही रहता है।

सबको दुआ,

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३३)

सिकन्दाबाद

१६-८-६८

प्यारी बेटी, खुश रहो।

आपकी दो चिट्ठियाँ मिलीं। मैं बराबर बीमार चल रहा हूँ। कभी कुछ, कभी कुछ, एक रोग खतम नहीं होता दूसरा तैयार हो जाता है। पहले कमर के उलटे हिस्से और पेट पर फलक निकले जिनमें बड़ी तकलीफ़ थी अब पहले से कम तो है मगर तकलीफ़ बराबर है।

अभ्यास में शुरू-शुरू में मन बड़े शौक से लगता है लेकिन जब मन ऊपर चढ़ने लगता है तब निचला मन यानी वो कर्म जो हम करते रहे हैं नीचे की तरफ़ खींचते हैं और अभ्यास में मन ऊँचा चढ़ता है। इस खींचा-तानी में तबियत नहीं लगती और चूँकि मन स्थिर नहीं रहता,

कुछ दिखाई नहीं देता और शांति भंग हो जाती है। गुरु पर विश्वास भी नहीं रहता। कमज़ोर अभ्यासी हिम्मत हार कर छोड़ देता है। लेकिन इस रास्ते से गुज़रना सबको पड़ता है। इसका इलाज यह है कि विश्वास रखें, हिम्मत न हारें। मन से लड़ते रहें। यही देवासुर संग्राम है। और जब मौका मिले सत्संग करें। आहिस्ता-आहिस्ता 'रज' से हटकर 'सत' पर आ जायेगा और फिर हालत खुलने लगेगी। घबराओ नहीं, परमात्मा से प्रार्थना करती रहो, ज़रूर मदद मिलेगी।

मन सबसे बड़ा दुश्मन है, ध्यान संध्या में नहीं लगने देता। लेकिन इसमें जो ख्याल पैदा होते हैं वो अपने ही बनाये हुए हैं, इनको शांत करना भी तुम्हारा काम है। बुरे ख्यालों को दबाओ, अच्छे ख्यालों को उभारो, यही असली तप है। यह बहुत मुश्किल काम है लेकिन अभ्यास और वैराग से सहल हो जायगा। क्या लड़के तमाम उम्र माँ के पास रहते हैं ? फिर घबराहट क्या ? जो आपने रौशनी देखी वह आत्मा का प्रकाश है, और जो काला परदा देखा वह मन और माया का परदा है जो आत्मा पर छाया हुआ है। जो आवाज़ें सुनाई देती हैं, वह आपने ही मन की आवाज़ें हैं। अभ्यास किये जाओ, निराश मत हो, ईश्वर पर भरोसा रखो। जो चलते रहते हैं वह ज़रूर एक दिन मन्ज़िल पर पहुँच जाते हैं। जो थक कर बैठ जाते हैं उनका उस वक़्त के लिए रास्ता रुक जाता है। बच्चों को प्यार, शर्मा नमस्ते कहती हैं।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३४)

सिकन्द्राबाद

१२-११-६८

प्यारी बहिन, नमस्ते।

मेरी तबियत पहले से ठीक ज़रूर है लेकिन काम-काज करने को तबियत नहीं चाहती। दूसरे, कहीं आने-जाने के काबिल नहीं हूँ। कुछ दिन हुए आपका खत आया था। जल्दी जबाब नहीं दे सका।

१) पहली बात ये है कि आदमी दुनियाँ में तजुर्बे के लिए आता है । तजुर्बा करता जाता है और अपनी आदतों को बदलता जाता है । अगर ऐसा न हो तो वो हमेशा जानवर ही बना रहे और कभी आगे को तरक्की न कर सके ।

२) शुरू ही से इन्सान इन्द्रियों के आनन्द में फँसता है। आगे चल कर दुनियाँ की चीज़ों की ख्वाहिश में फँस जाता है। कुछ तजुर्बा करने के बाद दुनियाँ की चीज़ों से उपराम हो जाता है और दुनियाँ की पूजा-पाठ में लग जाता है और कुछ सिद्धि शक्ति हासिल कर लेता है । लेकिन यहाँ भी परमार्थ नहीं, मन का जाल है । इससे भी आवागमन नहीं छूट सकता । जब कुछ और ज्ञान पैदा होता है तब फिर दुनियाँ से हटने लगता है और जितना दुनियाँ से हटता जाता है, ईश्वर में लय होता जाता है । यही अंतिम लक्ष्य है । **इससे मालूम होगा कि असली परमार्थ अपने आपको मिटाना है न कि कुछ हासिल करना ।** आपको कभी-कभी ज्ञान तो होता है लेकिन मन फिर झमेले में फँसा लेता है । सोच कर आती हो कि कुछ दिन रहूँगी, लेकिन मन कोई न कोई बात पैदा करके तबियत को उखाड़ देता है । मन सीधे रास्ते पर नहीं आने देता ।

मैंने कई बार चाहा कि आप ठहरें । मन ने बहका दिया और कोई न कोई बात ऐसी पैदा कर दी कि आप चल दीं अगरचे आपको यहाँ रहने में कोई दिक्कत नहीं थी ।

अब आपका अभ्यास यह होना चाहिए कि हर तरफ़ से ख्याल हटाकर ईश्वर के चरणों में लगाना चाहिए। इन्द्रियों को विषयों से हटाती रहें । मन को दुनियाँ की वासनाओं से कम करती रहें । हर वक़्त ईश्वर का ध्यान करती रहें और मौत को हर वक़्त याद रखें ।

बच्चों को प्यार, बहू को आशीर्वाद ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३५)

सिकन्द्राबाद

२६-११-६८

प्यारी बेटी, खुश रहो ।

चिठी तुम्हारी मिली । आत्मा ईश्वर का अंश है । उसमें उतनी ही शक्ति है जितनी ईश्वर में। इसको कोई बन्धन रोक नहीं सकता । ये सब मन का धोखा है। दुनियाँ में फँसा है और आत्मा को दोषी ठहराता है, लेकिन ये बन्धन आहिस्ता-आहिस्ता कटते हैं। जल्दी करने में न इधर का रहता है न उधर का रहता है । इसलिए जहाँ जहाँ मन फँसा है उसे वहाँ से निकालो और ईश्वर के समीप बढ़ती चलो। परमात्मा मदद करेगा ।

बच्चों को दुआ ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३६)

सिकन्द्राबाद

२६-१-६८

प्यारी बेटी, खुश रहो ।

तुम्हारी चिठी मिली । जब कभी मन क्राब् में न आये, गुरु के सामने कर दें, अपने आप उसके पीछे आ जायें और उसकी ओट ले लें। मन शान्त हो जायगा ।

तुम्हारा कहना ठीक है कि स्त्री पराधीन है, उसको दूसरों की मर्जी पर चलना पड़ता है । लेकिन इस पर भी किसी के भी कहने पर गुनाह की बात नहीं करनी चाहिए वरना दंड उठाना पड़ेगा । सफ़र लम्बा है लेकिन उसका भरोसा है ।

मैं पहले से अच्छा हूँ । तुम्हारी हालत अच्छी है, चली चलो । परमात्मा खुश रखे ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

सिकन्द्राबाद

२०-२-६९

प्रिय भाई (गिरिजा नन्द लाल) नमस्ते ।

मेरी खाँसी अब नहीं के बराबर है । अकेले बैठने में कभी तो यह ख्याल कीजिये कि ऊपर से फ़ैज़ (कृपा) की धार आ रही है और तमाम आपके बदन में ऊपर से नीचे तक फैलती जाती है। दया की धारा का रंग सफ़ेद है और बड़ी शांति देने वाली है । और दूसरे एकांत में शब्द या प्रकाश का ध्यान कीजिये जिससे आत्मा नीचे से ऊपर चढ़े। मन का स्वभाव एकसा नहीं रहता जब तक कि आत्मा में लीन न हो जाय। इसलिए इसके लिए परेशान न होइए। आहिस्ता-आहिस्ता मन को बुरी वासनाओं से हटाते चलिए। यह काम जल्दी का नहीं है ।

ध्यान में जो अपने महसूस (अनुभव) किया वह ठीक है। ध्यान में तीन बातें होती हैं। एक तो ध्यान करने वाला, दूसरा जिसका ध्यान किया जाय और तीसरा यह ख्याल कि हम ध्यान कर रहे हैं। इसमें दो चीज़ें ग़ायब हो जाती हैं और कभी-कभी तीसरी चीज़ भी जाती रहती है । आगे चलकर ज्ञान बाकी रहेगा ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

प्यारी बहन, खुश रहो ।

खत तुम्हारा आया, हाल मालूम हुआ ।

यह जितने रिश्तेदार हैं और दोस्त अहबाब हैं सब दूसरे जन्मों के दुश्मन या कर्ज़दार हैं जो अपना कर्ज़ लेने या बदला लेने आते हैं और परमात्मा की तरफ़ से आपकी तबियत हटाते रहते हैं। हमको चाहिए कि उनकी खिदमत जिस्म से और रुपया से कर दें लेकिन गुरु का सहारा लेकर सबसे माया मोह तोड़ दें और रिश्ता मौहब्बत तोड़ दें और उनके लिए परेशान न

हों । हरेक अपने कर्म का फल भोगता है और भोगेगा । परेशानी सिवाय इसके कि आपकी तबियत को हटा कर आपका नुकसान करें, उसका कोई फ़ायदा नहीं हो सकता । इसीलिए हर वक़्त मौहब्बत की वजह से दूसरों के लिए परेशान होना अपना नुकसान करना है । जो मदद हो सके, कर दो और अपने शगल (ध्यान) में लगी रहो । गुरु से मौहब्बत करना और उसका सहारा लेकर दुनियाँ की मौहब्बत से मुँह मोड़ लेना फ़नायशेख (गुरु में लय होना) कहलाता है । मगर गुरु भी एक सहारा है। अपने अन्दर के गुरु में अपना मन लगाइये और जिस्म के गुरु से ताल्लुक तोड़िये यानी उसकी मूर्ति को अपने दिल में रखिये। जब परमात्मा का अनुभव होने लगे तो गुरु का ध्यान भी छोड़ दीजिये । वह भी धोखा है। अपने आप में मगन रहिये । तहरीर (लिखित) में इतना ही समझाया जा सकता है ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१३९)

प्रिय भाई, नमस्ते ।

दुःख-सुख अपने ही पैदा किये हुए हैं । जब दुनियाँ को किसी चीज़ में सुख मिलता है तो आदमी उसके हासिल करने की कोशिश करता है, मेहनत करता है। अगर वह चीज़ मिल जाती है तो खुश होता है , नहीं मिलती तो दुखी होता है । अगर ख्वाहिश (इच्छा) न हो तो दुःख ही न हो। ख्वाहिश के साथ दुःख का होना ज़रूरी है ।

भण्डारा २५, २६, २७ अक्टूबर का मनाया जायगा। आने की कोशिश कीजिये ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१४०)

प्रिय भाई, (गिरिजा नन्द लाल)

चिठ्ठी मिली । गुरु की सच्ची सेवा यह है कि मन और माया से ऊँचे उठो और परमात्मा का प्रेम हासिल करो । नेकी का रास्ता अख्त्यार करो। खुद चलो और दूसरों को उस पर चलाओ। जो ऐसा करते हैं, उनसे गुरु प्रेम करता है । गुरु का प्रेम ही परमात्मा का प्रेम है । इसके मिल जाने पर खुद -ब-खुद (स्वतः) सब बुराइयाँ दूर हो जाती हैं ।

दूसरा तरीका अभ्यास का है। हर समय निगाह रखो कि तुम्हारा मन क्या- क्या वासना उठता है। बुरे खयालों को रोकने की भरसक कोशिश करो । न रुकें तो परमात्मा से प्रार्थना करो, मदद मिलेगी और आहिस्ता-आहिस्ता बुरी आदतें छूट जायेंगी तथा परमात्मा का प्रेम खुद-ब-खुद पैदा हो जायगा। कोशिश न करना और परमात्मा पर भरोसा करके बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। यह काहिल (आलसी) का काम है ।

अभ्यास करते रहो और उसको बढ़ाते रहो। पंडित जी को नमस्ते, बच्चों को प्यार। अपनी घरवाली को हमारा आशीर्वाद कहना। परमात्मा तुमको खुश रखें ।

शुभचिन्तक-श्रीकृष्ण

(१४१)

प्रिय भाई,

आपके दो खत आये, १ मार्च व ३० मार्च को। जबाब देर से दे रहा हूँ । उसकी वजह यह है कि गोरखपुर से आने के बाद मेरी तबियत खराब हो गयी। अब मैं पहले से अच्छा हूँ । परमात्मा की तुम पर बड़ी कृपा है कि तुमको इतनी ज़ल्दी फ़ायदा हुआ वरना इसमें वर्षों लग जाते हैं ।

मन की तीन हालतें हैं । एक हालत में बहुत से खयाल आते हैं जिसमें वह बहुत दुखी रहता है । दूसरी हालत में कोई खयाल नहीं रहता जिसमें यह सो जाता है। तीसरी हालत में एक

खयाल रहता है जिसमें होश भी रहता है और आनन्द आता है। मन को उन दो हालतों से हटा कर तीसरी हालत पर लाना है। यही अभ्यास है। सफलता देर से मिलती है। गुरु का ध्यान अन्य खयालों को हटाने के लिए है। अगर काम में लग जाने पर गुरु का ध्यान हट जाता है तो कोई हर्ज़ नहीं। जब तक आत्मा पर मन का पर्दा रहता है यानी दुनियावीं ख्वाहिशात रहती हैं तब तक आत्मा का प्रकाश दिखाई नहीं देता। जब थोड़ी देर के लिए पर्दा हट जाता है, प्रकाश दिखाई देने लगता है। जब तक ख्वाहिशात का परदा रहेगा, ऐसे ही होता रहेगा।

मैं तुमसे नाराज़ क्यों होने लगा। मेरा इरादा फतेहगढ़ जाने का नहीं है। बाबू जी से नमस्ते कह देना। बच्चों को प्यार।

शुभचिन्तक-श्रीकृष्ण

(१४२)

सिकन्द्राबाद

प्रिय भाई, नमस्ते।

आपकी चिट्ठी २६ अप्रैल की मिली। आपका अभ्यास ठीक चल रहा है। उसे ही करते रहिये। असल में ध्यान अपने निज रूप का ही किया जाता है जो ईश्वर है और उसके ऊपर जो परदे पड़े हुए हैं (जिस्म, मन, बुद्धि वगैरा) उन्हें हटाया जाता है। यही आत्मा का दर्शन है। आत्मा और परमात्मा एक ही हैं। औरतों का ख्वाव में देखना काम शक्ति की तेज़ी है। उसका इलाज यह है कि जहाँ तक हो सके स्त्रियों की सौहबत से बचा जावे।

मेरी गोरखपुर जाने की तारीख अभी निश्चित नहीं है। जब गोरखपुर जाऊँगा, लखनऊ दो एक रोज़ ठहरूँगा और आपको सूचित कर दूँगा।

परमात्मा आपको सच्चे रास्ते पर कायम रखे।

शुभचिन्तक-श्रीकृष्ण

(१४३)

अजीज़म दुआ,

आपका प्रेम से भरा पत्र मिला। मन को कायदे में बाँध दीजिये और उसकी पावन्दी कीजिये और जो खाली वक़्त मिले उसको सुमिरन में लगाइयो। आहिस्ता-आहिस्ता मन थक कर चूर हो जायगा।

घर के कामों में कम से कम दखल दीजिये। जितना कम दखल देंगे उतना ही आराम में रहेंगे। आदमी के सुधारेकुछ नहीं सुधरता। यह काम ईश्वर के हाथ में है।

आपका काम सिर्फ़ यह है कि अगर कोई पूँछे तो साधारण सा उत्तर दे दो, और अगर कोई गुनाह की बात देखो तो रोको। मामूली बातों में अपने आपको डाल कर परेशां मत करो। जो जैसा करे, करने दो। ज़िन्दगी को खुशगवार (सुखमय) बनाओ। जब तक घर में शांति नहीं होगी अभ्यास ठीक नहीं बन सकता। शांति को हासिल करने की कोशिश करते रहो चाहे उसके लिए तकलीफ़ उठानी पड़े।

शुभचिन्तक-श्रीकृष्ण

(१४४)

प्रिय गोपाल बाबू, नमस्ते।

आपकी चिठ्ठी मिली। आप जितना भी रंज करें, कम है। दुनियाँ में सब कुछ मिल जाते हैं, मगर भाई नहीं मिलता। किस तरह लिखूँ कि सब्र करो लेकिन मैं यह न लिखूँ तो क्या लिखूँ। जिस चीज़ में अपना काबू नहीं उसमें सिवाय सब्र के चारा ही क्या है? अगर तुम्हारा भाई जान देकर भी बचाया जा सकता था तो बचाने की कोशिश की जाती। मौत पर किसी का भी अख्तियार नहीं। फिर अगर किसी की गलती हो तो अफ़सोस भी किया जाय। जो ईश्वर की मर्जी।

आत्मा को ईश्वर से कुदरती प्रेम है। यह जा नहीं सकता। जब आत्मा दुनियाँ की गंदगी से साफ़ हो जाती है तो उसको अपना रूप दरसने लगता है और ईश्वर से प्रेम होने लगता है। अब ईश्वर से प्रेम क्यों किया जाय ? तुम्ही बताओ इसका जबाब क्या दिया जाय। आत्मा ईश्वर के प्रेम के वगैर रह ही नहीं सकती। जिनकी आत्मा के ऊपर से मन के गिलाफ़ उतर गए हैं वे उसके प्रेम के वगैर ज़िन्दा रह ही नहीं सकते और जिनकी आत्मा अभी दुनियांवी गन्दगियों में फँसी है उनके विषय में कुछ कहना सुनना नहीं। परमात्मा तुम पर अपनी कृपा रखें और सच्चा ज्ञान दें।

शुभचिन्तक-श्रीकृष्ण

(१४५)

प्रेमी भाई बाबू प्रभु दयाल जी, नमस्ते।

मनीऑर्डर १० रूपये नज़राना भंडारा मिले। परमात्मा आपकी कमाई को बरकत दें। आपका प्रेम पत्र मिला। कोई मनुष्य अपने आदर्श के मुताबिक नहीं हो सकता। जितना आदमी तरक्की करता है उतना ही उसका आदर्श ऊँचा होता जाता है। अपनी कमज़ोरियों पर ध्यान रखना और परमात्मा से दुआ करते रहना कि इनको दूर करे, यही आदमी के अख़्तियार में है। इनको पूरा करना या न करना किसी दूसरी ताक़त के अख़्तियार में है।

(१) शब्दों के भेद में मत पड़ो। हम प्रार्थना उसकी करते हैं जो सबका आधार है। उसको किसी भी नाम से याद करो - चाहे ॐ से, चाहे राधास्वामी दयाल के नाम से, जिसमें मन लगे।

(२) जो अभ्यास आप कर रहे हैं उसको फ़िलहाल बंद कर दीजिये, बल्कि नीचे लिखा अभ्यास कीजिये।

पहले मन को हर किस्म के ख़्याल से साफ़ कीजिये। न किसी को प्यार, न किसी से नफ़रत। फिर यह ख़्याल कीजिये कि इसमें परमात्मा की मौहब्बत भर रही है।

तरीका इसका यह है कि सांस को जहाँ हो वहीं रोक दीजिये और फिर दिमाग की तरफ़ ख्याल ले जायें यह ख्याल करते हुए कि सब बुरे -अच्छे ख्याल ऊपर ले जा रहा हूँ और दिमाग के पीछे सीधे कन्धे की तरफ़ निकल दीजियो। फिर ख्याल कीजिये कि मैं अपने कल्ब (हृदय) में जो सीने में उल्टी तरह है, परमात्मा का प्रेम भर रहा हूँ अगर यह समझ में न आये तो मिलने पर पूछ लीजिये और अभी कुछ न कीजियो।

(३) डायरी लिखने से सिर्फ़ यह गरज़ है कि अपनी कमज़ोरियाँ मालूम हो जायें और उसका ध्यान रहे, और उसके लिए परमात्मा से प्रार्थना करते रहें। मैं भी परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ इन सबका इलाज उसके पवित्र नाम का सुमिरण और प्रार्थना करते रहना है।

(४) श्री परमात्मा सरन साहिब से नमस्ते कह देना।

(५) भंडारा ग्वालियर ३०-३१ दिसम्बर और १ जनवरी १९५६ का मुक़र्रिर हुआ है। मैं २५ दिसम्बर १९५५ को जनता गाड़ी से रवाना होकर (देहली से ३।४५ बजे) रात को १० बजे लश्कर पहुँच जाऊँगा। भंडारा बाबू दामोदर दस वकील, भाऊ का बाजार लश्कर के मकान पर होगा। मैं वही ठहरूँगा। बाबू हुबलाल का खत मेरे पास भी आया। परमात्मा का शुक्र है वह पहले से अच्छे हैं।

मैं अच्छी तरह से हूँ परमात्मा आपको खुश रखे। बच्चों को प्यारा।

शुभचिन्तक-श्रीकृष्ण

(१४६)

सिकन्द्राबाद

१९८-८-१९५५

प्रेमी भाई बा। प्रभु दयाल जी,

प्रेम पत्र मिला। हाल मालूम हुआ। मन की हालत हमेशा बदलती रहती है। इससे घबराना और परेशान होना नहीं चाहिए।

आत्म-दर्शन या परमात्मा का दर्शन ही हमारा ध्येय है। उसकी प्राप्ति उसकी इच्छा पर निर्भर है। जतन उसका दिल को मांजना यानी साफ़ करना है। आत्मा से परमात्मा का प्रेम स्वाभाविक है। लेकिन दुनियाँ की मोह माया उसकी मौहब्बत को दबाये हुए है। जहाँ तक हो सके अपने दिल से इसको दूर कीजिये। जितना दिल साफ़ होता जायगा , उसकी झलक आती जायेगी। अपने मन को हर समय एकाग्र करने की कोशिश कीजिये। मंज़िल बहुत दूर है, लेकिन अगर इरादा मज़बूत है और लगन सच्ची है तो परमात्मा की मेहरबानी अवश्य होगी। एक न एक दिन सफलता मिलेगी। सफ़र की लम्बाई से घबराना नहीं चाहिए।

**' मरेंगे यारो तलब में हक़ की ,
जो नाम तालिब लिखा चुके हैं । '**

उस पर भरोसा रखो और कोशिश में लगे रहो यानी मन को दुनियाँ की वासनाओं से खाली करते रहो, यही एक तरीका है। मैं २६ ता। को रात्रि को ७।३० बजे अपर इंडिया गाड़ी से बनारस जा रहा हूँ ३-४ तारीख तक वापस होऊँगा ।

परमात्मा आप सबको प्रसन्न रखे।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१४७)

सिकन्दाबाद

२३-५-१९५६।

प्रिय बा। प्रभु दयाल जी, नमस्ते।

कृपा पत्र मिला। आत्म-साक्षात्कार के लिए मन को एकाग्र करके मन में धँसना होगा और उस पार जाना होगा। यही साधन है। ख्याल को एकाग्र करो और फिर मन में घुसो। जो कुछ नज़र आये उसे देखते चलो और आगे बढ़ते चलो। यह सब रास्ता है। अपना अभिमान झूठा है। इसको त्यागना होगा। इसके बाद जो रहेगा वही असली सत्ता है। उसका निरादर करने की दुनियाँ में ताक़त नहीं है। खुशामद और झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं। लेकिन ख्वामख्वाह अपने

दिल को दुखाने की ज़रूरत नहीं। अगर कोई भला -बुरा कहे तो जबाब देने से पहले देखो कि तुममें यह बात है या नहीं। अगर है तो इसको दूर करने की कोशिश करो। अगर नहीं है तो उसको प्रभु की तरफ़ से समझ कर सब्र अख्तियार करो। इससे मन की दुरुस्ती होगी। असूलों की पावन्दी करने की कोशिश करो। न होसके तो दुआ करो।

भंडारा कछला ३, ४, ५ जून का होना निश्चित हुआ है। पहुँचने की कोशिश करो। परमात्मा ने चाहा तो मैं वहाँ पर मिलूँगा।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१४८)

सिकन्दाबाद

२८-७-६६

प्यारी बेटी, खुश रहो।

तुमने ठीक लिखा है कि आँख, कान, जिभ्या मन को बाहर लिए फिरते हैं जिससे मन चंचल हो जाता है। इनको काबू में करना ही अभ्यास है। इसका इलाज संतों ने यही बतलाया है कि ज़बान से हर वक़्त उसका नाम लेती रहो, उसकी महिमा के गुण गाती रहो या पढ़ती रहो। आँखों से हर जगह उसी को देखो। लेकिन यह काम आहिस्ता-आहिस्ता होगा। जल्दी का नहीं। मैं ता। १२-८-६६ की शाम को बरेली आने का इरादा कर रहा हूँ। आगे ईश्वर मालिक है। बच्चों को दुआ।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१४९)

सिकन्द्राबाद

१६-५-६७

प्यारी बेटी, खुश रहो।

ये आपने अच्छा किया, कासगंज न आकर गाँव गयीं। ये तरकीब तो अच्छी है कि जिस दिन गुस्सा आये, उस दिन खाना न खाओ, लेकिन उसका निभाना मुशिकल है। सब की सेवा करो, सब के साथ मिल कर रहो लेकिन मन ईश्वर के चरणों में लगा रहे। वही सबका सच्चा हितेशी और सच्चा बाप और पति है। अगर ईश्वर को मन्ज़ूर हुआ तो मैं ता। १५ जून के बाद बरेली आऊँगा। बच्चों को प्यारा।

शुभचिन्तक - श्रीकृष्ण

(१५०)

एक दोस्त की तरफ़

प्यारे दोस्त,

अल्लाहताआला अपनी कामिल तौफ़ीक़ तुम्हारी रफ़ीक़ बनाये। तमाम आदतों का सरमाया यही है कि अल्लाह के हुक्मों को बजा लाओ। रसूल अल्लाह सल्लेअल्लह सल्लम की सुन्नत की पैरवी करो, और जिन बातों का करना नाज़ायज़ है उनसे अपने आपको बचाओ। किसी पर ग़म और गुस्सा न करो। किसी के हक़ में बुराई न सोचो। दुनियाँ की बेबफा माल व मताह पर नज़र न डालो। अपने आपको तमाम मख़लूक़ात से बुज़ुर्ग़ न जानो और आख़िरत के सफ़र को न भूलो।

इन सिफ़तों के हासिल हो जाने के बाद अगर अल्लाह ताआला फ़ज़ल फ़रमायें और तौफ़ीक़ बख़्शें, तो कल्मा " ला-इलाह इल-लिल्लाह " आहिस्ता -आहिस्ता तकरार करते रहो और दिल के हुज़ूर और फ़रागत से तकरार के वक़्त जहान और जहान वालों को एतबार की नज़र से

हटा रखो। इससे बहुत उम्दा फ़ायदे और नतीज़े हासिल होते हैं। अल्लाह-ताआला तमाम ज़ाहिरी और बातिनी एहबाल में हमेशा हाज़िर और नाज़िर रहें। तालिब सादिक के लिए निहायत ज़रूरी है कि मखलूक़ात की तरफ़ से आँखें बंद करके हमेशा खुदा की नज़रे-रहमत का मुन्तज़िर रहे।

**न हूँगा यार से गाफ़िल कभी मैं एक लहज़ा भर,
कि शायद किस घड़ी उसकी नज़र पड़ जाय आसी पर !!**

तुम्हें जानना चाहिए कि दिल को इतमीनान, फ़रागत और हज़ूर तब हासिल होती है जब बक़दर ज़रूरत पाक और हलाल खाना खाया जाये, और बेहूदगी और दुनियाँ के तालिबों का मिलना जुलना छोड़ दिया जाये। अगर हज़ार साल ज़िक्र करते रहो, मगर तुम्हारा खाना हलाल नहीं, तो तुम्हें कभी मक़सूद हासिल न होगा।

**भूख, खामोशी, व तनहाई व बस ज़िक्र मुदाम ,
नाकिसों का इससे बन जाता है, अच्छा सारा काम !!**

परमात्मा तुम पर करम फ़रमाये ।

तुम्हारा दोस्ता।

नोट :- उपरोक्त उर्दू पत्र में एक मित्र की भावनायें दूसरे मित्र के प्रति हिदायतों (उपदेशों) के रूप में भरी हुई हैं। उर्दू के शब्द हिन्दी में नहीं किये गए हैं। कारण शब्द अपना अलग ही वज़न रखते हैं। हिन्दी आशय नीचे दिया जाता है।

(आशय)

प्रिय मित्र,

परमात्मा की कृपा तुम्हारी सदा क्षत्रछाया बन कर रहे। ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करो, यही सबसे बड़ी नम्रता है। ईश्वर और उसके अवतारों के बताये हुए मार्ग पर चलो और धर्मशास्त्र के विरुद्ध कोई काम मत करो। किसी पर क्रोध न करो और किसी को दुःख मत दो। किसी के लिए बुरा मत सोचो। संसार की नाशवान वस्तुओं पर दृष्टि मत डालो। अपने आपको

संसार की किसी वस्तु से बढ़कर मत जानो। (अपने को सबसे तुच्छ समझो) और यह मत भूलो कि एक दिन मरना है।

जब परमात्मा के गुण तुम्हारे अन्दर आने लगें, ईश्वर तुम पर कृपा करें और तुम्हें सामर्थ्य दें , तो " कुछ नहीं सिवाय परमात्मा के" इस मंत्र का जाप करते रहो। मन से संसार वालों का भरोसा दूर करते जाओ। एक ईश्वर का भरोसा रखो। ऐसा करने से बड़ा लाभ होता है। परमपिता परमेश्वर आन्तरिक और वाह्य कर्मों में सदा हमारे साथ मौजूद है। साधक के लिए आवश्यक है कि संसार की ओर से आँखें बंद कर ले और ईश्वर की दया का आसरा लगाये रहे।

अपने प्रीतम से मैं एक क्षण के लिए भी अचेत नहीं रहूँगा

न जाने कब उसकी दया-दृष्टि मुझ पर पड़ जाय !!

तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि मन को शान्ति उसी समय मिलती है और भगवान की तरफ़ वह तभी झुकता है जब आवश्यकता के अनुसार ऐसा भोजन करे जो पवित्र हो और हक़ हलाल की (पवित्र) कमाई का हो। ऐसे लोगों का जो बेहूदा बातें करते हों और जो दुनियाँ की चाह रखते हो, कुसंग छोड़ देना चाहिए। यदि हजार वर्ष जाप करते रहो पर भोजन शुद्ध कमाई का न हो तो परमात्मा की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती ।

भूखा रहने, मौन रहने, एकांत सेवन और निरन्तर शुद्ध मन से ईश्वर के लिए जप करते रहने से निकम्मे आदमियों का भी काम बन जाता है, (ईश्वर प्राप्ति हो जाती है।)

ईश्वर तुम्हारे ऊपर कृपा करें ।

तुम्हारा मित्र

(१५१)

प्रश्न और उत्तर

प्रश्न :- एक प्रेमी भाई ने सबाल किया है कि ध्यान कब कल्ब (हृदय) पर करना चाहिए या आज्ञा चक्र पर और क्यों ?

उत्तर :- इस शरीर में दो शक्तियां काम कर रही हैं। आत्मा और मन (यद्यपि) साधारण रूप में तीन शक्तियां काम करती हुई दिखाई देती है - इन्द्रियाँ, मन और आत्मा। लेकिन अगर गौर से देखा जाय तो इन्द्रियाँ सिर्फ गोलक हैं। इनमें अपनी कोई शक्ति नहीं है। मन ही इन गोलकों पर बैठ कर काम करता है। अगर मन वहाँ मौजूद न हो तो कोई इन्द्रिय काम नहीं कर सकती। आँखें खुली हुई हैं लेकिन अगर मन दूसरी जगह है तो दिखाई नहीं देता। कान खुले हुए हैं, आदमी सुन रहा है, लेकिन अगर मन दूसरी जगह चला गया तो कानों से सुनाई नहीं देता। यही हाल दूसरी इन्द्रियों का है। इसलिए सिर्फ दो ही शक्तियां काम कर रही हैं - मन और आत्मा। मन आदतों और संस्कारों के समूह को कहते हैं। जो कुछ कर्म हम करते रहे हैं वह सब संस्कार (सूक्ष्म बिंदु) के रूप में हमारे छोटे दिमाग में कायम रहते हैं। जैसे बरगद के दरख्त का तमाम जिस्म (लता, फल , फूल, पत्ते) बीज में मौजूद रहते हैं, अगर मिट्टी, पानी, रौशनी माफ़िक (यथोचित) मिल जाय तो उसी एक छोटे से बीज से बड़ा भारी एक बरगद का दरख्त बन जायगा। इसी तरह इन्सान के संस्कार जो छोटे दिमाग में दबे पड़े रहते हैं, आत्मा से ताकत लेकर वही पुराने संस्कार माफ़िक हालत में वही दृश्य सामने ले आते हैं। आत्मा वह एक असल शक्ति है जो सबको जान देती है और जिसके वगैर न जिस्म काम कर सकता है और न मना।

आत्मा की धार परमात्मा के चरणों से निकलकर भिन्न-भिन्न लोकों से गुज़रती हुई इन्सान के जिस्म पर जहाँ चोटी है, वहाँ उतरती है और मुख्तलिफ़ विभिन्न दिमागी चक्रों से गुज़रती हुई और जान देती हुई आज्ञा-चक्र पर ठहरती है। यह स्थान दोनों भोंहों के बीच में है। आत्मा यहां बैठकर चेतन धारों या किरणों की शकल में फैल कर तमाम जिस्म (देह) को ताकत देती है। जब यह धार वापस लौट जाती है तब आदमी की मौत हो जाती है।

मन की धार त्रिकुटी से निकलकर सहसदल कँवल और आज्ञा- चक्र से उतरती हुई क़ल्ब (हृदय) के मुक़ाम पर ठहरती है और वहाँ पर बैठी हुई मन की धार चेतन धारों या किरणों के ज़रिये से आत्मा की धार से मिल कर देह के नीचे के हिस्से को जान देती है।

त्रिकुटी का स्थान सहसदल कँवल के ऊपर है और क़ल्ब (हृदय) का मुक़ाम छाती की हड्डी के बायीं तरफ़ है। ख़्वाहिशात (इच्छाएं) और ख़्यालात (विचार) सब मन के मुक़ाम से

उठते हैं। जब मन की धार वापस लौट जाती है, तमाम ख्वाहिशात खत्म हो जाती हैं और तमाम ख्यालात बन्द हो जाते हैं।

इस तरह आत्मा की बैठक के दो स्थान हैं - त्रिकुटी और क्लब (हृदय चक्र)।

बाज़ (कोई) सन्त आत्मा की निचली बैठक यानी आज्ञा चक्र से शुरू कराते हैं और आत्मा की धार का सहारा लेकर भिन्न-भिन्न चक्रों में चढ़ाई करते हुए आखिर सतलोक में पहुँचाते हैं। दूसरे सन्त लोग क्लब के मुकाम से शुरू कराते हैं और आज्ञा चक्र, सहस्रदलकंवल त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भँवर गुफा स्थानों से गुज़रते हुए सतलोक पहुँचते हैं। दोनों तरीकों में फ़र्क बहुत कम है। राधास्वामी मत में आज्ञाचक्र से शुरू कराते हैं और सूफ़ी सन्त लोग क्लब से। जो लोग आज्ञा चक्र से शुरू कराते हैं, उनका यह ख्याल है कि जब आत्मा की धार उलट कर अपने निज घर यानी सतलोक की तरफ़ राग़िब हो गयी तो मन की उछल कूद ही खत्म हो जायगी। जिस तरह दे अगर कंडील में से चिराग़ निकाल लिया जाय तो चलने फिरने वाली तस्बीरें खुद ही रुक जायेंगी। इसलिए मन के मुकाम पर अभ्यास करना वक़्त का रायगां करना है। जो लोग क्लब के मुकाम से शुरू कराते हैं उनका ख्याल यह है कि जब तक मन अपनी उछल कूद बन्द नहीं करेगा, वह आत्मा को

बार-बार नीचे खींचेगा और ऊपर नहीं चढ़ने देगा और इस खींचातानी में वक़्त ज़्यादा लगेगा। इसलिए क्लब पर शुरू में ध्यान जमाना चाहिए और उसको शुद्ध करके आगे को बढ़ना चाहिए। हमारे गुरुदेव (महात्मा रामचंद्र जी महाराज) का यह तरीका था कि ज़्यादातर शुरू में क्लब पर ध्यान जमाते थे। और जब मन एकाग्र हो जाता था और दिमागी शब्द सुनाई देने लगते थे। उस वक़्त दिमागी शब्दों पर ध्यान करने को बतलाते थे। और नीचे ख्याल करने को फ़रमाते थे। और बाज़ -बाज़ प्रेमी भाइयों को , जिनका मन एकाग्र देखते थे और क्लब शुद्ध पाते, शुरू ही से आज्ञा चक्र पर ध्यान करने को बतलाते। यही तरीका बहतरीन (सर्वश्रेष्ठ) है। जो आचार्य तजुर्बेकार होते हैं वह खूब जानते हैं कि अभ्यासी को कहाँ से शुरू करना चाहिए और कौन-कौन से मुकामात (चक्र) छोड़ देने चाहिए। यह बातें सिर्फ़ बाक़फ़ियत और समझने की गरज़ से लिख दी हैं वरना ध्यान उस जगह करना चाहिए जहाँ पर उसके गुरु उसको बतावें।

- श्रीकृष्ण

(१५२)

प्रश्नोत्तर

एक प्रेमी भाई ने दरियाफ्त किया (पूछा) है कि सुरत शब्द का अभ्यास किया जाय या गुरु की शकल का ध्यान किया जाय या अहं-ब्रह्म का ध्यान किया जाया।

उत्तर - आपके तीन रूप हैं। एक स्थूल यानी जिस्म (देह) दूसरा सूक्ष्म यानी मन और तीसरा कारण यानी आत्मा। जिस जिस्म का ख्याल है तो ही उस समय वो ही आप हैं। ज्ञानी हर वक्त अपने आपको ब्रह्म का रूप समझ कर अपनी आत्मा का ध्यान करते हैं। प्रेमी अपने गुरु का ध्यान करके ये समझते या ख्याल करते हैं कि यह जिस्म गुरु का है। शब्द के अभ्यासी सुरत धुन्यात्मक शब्द में अपनी सुरत को लगा कर यही शगल (अभ्यास) करते हैं। गरज तीनों आत्मा का साक्षात्कार करने के लिए इन शगलों का ध्यान करते हैं।

आप फिलहाल सुरत शब्द का अभ्यास करें। गुरु धारण करने पर गुरु का भी ध्यान कर सकते हैं और पुख्ता हो जाने पर तीसरा शगल जो ज्ञानियों का है खुद-ब-खुद होने लगेगा।

- श्रीकृष्ण

----- समाप्त -----